॥ श्री गणेशाय नमः ॥

स्वप्न एवं शकुन ज्योतिष

भूखंड विचार एवं भवन निर्माण
विधि सहित

लेखक :–
ज्योतिषाचार्य एवं तांत्रिक
पंडित वाई० एन० झा "तूफान"

प्रकाशक
अमित पाकेट बुक्स
चौक अड्डा टांडा,
जालंधर सिटी–144008
(पंजाब)

मुल्य : 70.00

भूमिका

पाठकों !

"स्वप्न और शकुन शास्त्र" पूर्व समय से ही मानव प्राणी के भविष्य में घटने वाली घटनाओं का शुभाशुभ संकेत देते आ रहा है। इन फलों का सही ज्ञान रखने वाले इनपर विश्वास करने वाले अपने जीवन में कभी भी धोखा नहीं खाते और स्वप्न एवं शकुन के शुभ प्रभाव को साथ लेकर निरन्तर आगे बढ़ते चले जा रहे हैं।

ऐसे तो विज्ञान का युग तीव्रता से ग्रह-नक्षत्रों को भी पार कर रहा है, ऐसे समय में स्वप्न और शकुन की बातें कुछ लोग हास्यप्रद समझते हैं, परन्तु वही लोग ऐसा समझते हैं वेदों, ग्रन्थों, पुराणों एवं शास्त्रों आदि पर विश्वास नहीं रखते। इनपर विश्वास रखने वाला जो होगा वह स्वप्न एवं शकुन शास्त्र पर भी विश्वास करेगा, क्योंकि इन शास्त्रों का निर्माण भी अनन्य शास्त्रों, पुराणों के निर्माता महर्षि वेद व्यास, अत्रि गौतम, परासर आदि ॠषियों के चिन्तन-मनन से ही हुआ है।

अमित पाकेट बुक्स जालंधर द्वारा हमारी लिखी हुई सैकड़ों धार्मिक पुस्तकें ज्योतिष यंत्र-मंत्र तंत्र की अनेकों नेक पुस्तकें प्रकाशित होने के पश्चात् अत्यन्त शोध करने के पश्चात् यह "स्वप्न और शकुन शास्त्र" आपके कर कमलों में समर्पित कर रहा हूँ।

इस परम शास्त्र को स्वप्न एवं शकुन निर्णय के अलावा "भूखंड विचार-एवं भवन निर्माण निर्णय" का भी ज्यो-तिसानुसार एवं शास्त्रानुसार- उल्लेखों से सुसज्जित किया गया है। जिसमें भवन निर्माण हेतु शुभ जमीन का चुनाव, भवन निर्माण के अन्तर्गत राजु-मार्ग, भवन द्वार, रोशन दान, खिड़कियां पानी की टंकी बनाने की दिशा और विधि एवं भवन समीप में हैं उपंप, नदी-नाला, वृक्ष, धर्मस्थल, कब्र श्मशान दिशाओं के अनुसार गलियां आदि होने के भी शुभाशुभ फलों से इस शास्त्र को संवारा गया है। इस पुस्तक में लिखित विधियों के अनुसार यदि आप भुखंड़ों [भूमियों का] के खरीद एवं भवन निर्माण करेंगे तो आप लक्ष्मी को अपने घर में बसाकर मालामाल ही नहीं, निहाल हो जाएंगे।

हम आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि यह परम पवित्र शास्त्र आपके जीवन का उज्जवल पथ प्रदर्शक बनेगा और आप जरुर लाभान्वित होंगे।

तांत्रिक, ज्योतिश एवं रत्नों के ज्ञाता-
पंड़ित, वाई. एन. झा "तूफान"
टोबरी मुहल्ला, टांडा रोड,
H. No.—61, जालंधर सिटी
(पंजाब)

विषय सूची

97. गिरगिट
98. बगुला
99. जंगली कबूतर
100. चिमगादड़
101. चक्रवाक
102. बाज
103. सारस
104. मुर्गा
105. टेक पक्षी
106. नील कंठ
107. तोता
108. टिटहरी
109. सारिका मैना
110. मोर
111. भारद्वाज चकोर
112. बकरी
113. भास पक्षी
114. मकड़ी
115. तीतर
116. चिड़िया की विष्टा
117. गीध
118. सूअर
119. पक्षी शवलिका
120. खरगोश
121. उल्लू
122. सर्प
123. पालतू कबूतर
124. गाय
125. गायों का झुण्ड
126. गायों की छींक
127. खंजन चिड़िया
128. हाथी
129. घोड़ा
130. हिरण
131. गधा
132. भैंस
133. सांढ
134. पेड़ पर चढ़ता हुआ सर्प
135. चील
136. मेंढक
137. चीटियों का झुण्ड
138. चिड़ियों का घोंसला
139. नेवला
140. लोंमड़ी
141. ग्रामीण पशु
142. हीनांग व्यक्ति
143. विधवा स्त्री
144. यात्रा काल शव दर्शन
145. आकाश दर्शन के शुभाशुभ फल
146. धूम्रकेतु
147. सुहागिन नारी
148. कुवारी कन्या
149. शंख ध्वनि
150. आंधी
151. शराबी
152. लड़ाई झगड़ा
153. भिखारी
154. आग
155. पूजा-पाठ
156. कुल्ला
157. कंघी

158. कबाड़ी
159. सफाई कर्मचारी
160. टूटते सितारे
161. काले वस्त्र धारी
162. पांव का ठोकर
163. पैसे गिरना
164. वृद्ध नर-नारी
165. घड़ी का घंटा
166. दूध का उबलना
167. जल से भरा घड़ा
168. हथेली की खुजली
169. साधु
170. देव प्रतिमा खण्डित होना
171. ज्योतिषानुसार भवन निर्माण हेतु जमीन का चुनाव ।
172. भूखंड की आकृति
173. मुख्य द्वार व सहायक दरवाजे का निर्माण ।
174. राजमार्ग की दिशा व भूखड निर्णय ।
175. धर्म स्थल समीप भवन निर्माण निर्णय ।
176. भवन समीप नदी-नाला निर्णय ।
177. भवन समीप मकबरा निर्णय ।
178. भवन समीप कूप या हैंडपंप निर्णय ।
179. भवन समीप वृक्ष निर्णय ।
180. भवन द्वार निर्णय ।

स्वपन का परिचय

"सोने और जागने के बीच की स्थिति को स्वप्न कहते हैं ।" बीच की स्थिति इसलिए कि इसमें शरीर के स्तर पर निन्द्रा की सी निश्चलता होती है, किन्तु मानसिक स्तर पर हलचल होती रहती है । कल्पना का केन्द्र भूत मन शान्त नहीं होता । वह अर्न्तमुखी वृत्तियों को सक्रिय बनाए रखता है, चलायमान रखता है ।

स्वप्न की अवस्थाएं

स्वप्न की तीन अवस्थाएं होती हैं –

(1) जाग्रत (2) स्वप्न (3) सुषुप्ति ।

1. जाग्रत :–हम पूणितया बोधयुक्त होकर क्रियाशील रहते हैं उसे– "जाग्रत" कहते हैं । यह क्रियाशीलता शरीर की होती है जो "दृश्य" रहती है । अर्थात शरीर चलते रहता है किन्तु शरीर के । "शववत्" स्थिर करने पर भी हम मन से चिन्तनशील बने रहते है, इस अवस्था को भी हम जाग्रत अवस्था ही कहते हैं ।

2. स्वप्न–यह मैं "स्वप्न परिचय" में ही बता चुके हैं कि सोने और जागने के बीच की स्थिति को स्वप्न कहते हैं ।

3. सुषुप्ति–सुसुप्ति शरीर के सोने की अवस्था को कहते हैं जिसे "निद्रा" के नाम से जाना जाता है ।

अब स्वप्न को समझने के लिए "निद्रा" को समझ लेना परम आवश्यक है ।

"निद्रा" क्या है ?

निद्रा एक तमोगुणी प्रसार है । हमारे देह में तमोगुण की अधिकता से निद्रा आती है । लोग कहते हैं–अन्न का नशा आता है । अन्न यर्थाथ में ठोस पदार्थ है । और ठोसपना पृथ्वी तत्व का वाह्यगुण है । पृथ्वी तमोगुणी होने के कारण अन्न निद्रा का कारण बनता है । जो लोग अन्न विहीन भोजन करते हैं उनको निद्रा भी कम आती है और जो अन्न ग्रहण करने वाले हैं वे जितना खाते हैं उतना ही सोते हैं ।

"तमोगुण" की अधिकता से मन सुषुम्ना में प्रवेश कर जाता है और इस अन्तर्हित स्थिति को ही निद्रा कहा जाता है । मन के निवृत हो जाने पर अर्थात् निद्रित अवस्था में हमारे देह की सारी क्रियाएं यथावत् चलती रहती हैं । श्वसन संस्थान पाचन संस्थान, एक संचार आदि दैहिक व्यापार यथावत् चलते रहते हैं । ये सारे संस्थान स्वचालित हैं और इनका सम्बन्ध "मन" से न होकर देह

(शरीर) में स्थित षट्चक्रों से है कि मन इस देह की क्रिया या आवश्यकता या तारतम्य बनाये रखने के दायित्व से मुक्त हो जाता है । आवश्यक्ता पड़ने पर ऐन्द्रिय-बोध मन को बहिर्मुखी बना देता है । निद्रा में मच्छर काटने पर खुजलाना या प्यास लगने से चेत हो जाना जैसी क्रियाएं इस बात की सूचक हैं कि ऐन्द्रिय-बोध के दायित्व से मन मुक्त नहीं होता और निद्रा एक प्रकार से विश्रान्तिकाल से अधिक नहीं होती ।

निद्रा तमोगुण है और पृथ्वी तमोगुण का स्थूल प्रतीक है । इसीलिए निद्रा से व्यक्ति की स्थूलता और पुष्टता बढ़ती है । पृथ्वी पांचो तत्वों में सघन एवं ठोस रहने के कारण निद्रा जैसे तमोगुणी प्रसार में अवकाश प्राप्त करती है, परिणामत: निद्रालु व्यक्ति पहलवान न भी हो तो भी शाररिक दृष्टि से पुष्ट होता है । शरीर की इस स्थुलता में अन्नमय कोष अधिक सक्रिय होता है और अन्नमयता देह को खाती है । इसलिए योग और साधना मार्ग में स्थूल देह वर्जित एवं निन्दित माना गया है । जब कभी बाह्य दबावों अथवा ऐन्द्रिय ग्रन्थों में आने वाले तनाव के कारण स्वप्न आता है तो उसमें मन उन ग्रथियों की वासनात्मक पूर्ति किया करता है जैसे कोई भूखा आदमी स्वप्न में विविध प्रकार के व्यञ्जनों का स्वाद लिया करता है अथवा प्यासा व्यक्ति घड़े सुराही या अन्य जलपात्रों को ढूंढता रहता है ।

निद्रा की अवस्थाएं

वैज्ञानिकों ने निद्रा की अवस्थाएं मापने के लिए एक यंत्र का निर्माण किया है जिसका नाम एलोक्ट्रो इनसेफेलों ग्राफ है । निद्रा की अवस्था में मानव के मस्तिष्क से निकलने वाली अत्यन्त सूक्ष्म विद्युम तंरगों को यह यंत्र ने विस्तृत आकार में दिखलाता है । इस यंत्र के अन्दर एक पेंसिल लगी होती है, पेंसिल के नीचे एक ग्राफ पेपर होता है । यंत्र ने स्वप्न की गति भांपकर पेंसिल के द्वारा ग्राफ पर चित्र बनाते रहता है अर्थात नक्शा तैयार करते रहता है । इससे साफ प्रकट हो जाता है- कि व्यक्ति की नींद हल्की है या गहरी, शुभ स्वप्न आ रहा है या भयंकर ।

निद्रा भांपने वाला इसी यंत्र से पता चला है कि निद्रा की चार अवस्थाएं होती हैं ।

निद्रा की पहली अवस्था-

निद्रा की पहली अवस्था में यंत्र ने पेंसिल ग्राफ पेपर पर छोटी-छोटी तरंगों को अंकित करने लगता है । इस अवस्था में यदि व्यक्ति को जगा दिया जाय या उठा दिया जाय तो वह कहेगा कि अरे भाई हम तो सोये ही नहीं हम तो

जाग रहे हैं । यदि उसे न जगाया जाय तो वही व्यक्ति कुछ ही समय में निंद्रा के दूसरे स्तर पे पहुंच जाता है ।

निद्रा की दूसरी अवस्था–

निद्रा की दूसरी अवस्था में ग्राफ पेपर पर पड़ने वाली रेखावों से स्पष्ट होता है कि मस्तिष्क में क्रियाशीलता का संचार होने लगा है और मस्तिष्क की विद्युततरंगे तेजी से विस्तृत होने लगी हैं । ऐसी अवस्था में ग्राफ पेपर पर खिंचने वाली रेखावों से ज्ञात होता है कि सोने वाले की आंखों की पुतलियां दांए-बांए चल रही हैं । इस क्रिया को-"रैस-स्लीप" कहते हैं । इसके पश्चात् 30 मिनट बाद ही व्यक्ति निद्रा की तीसरी अवस्था में प्रवेश कर जाता है ।

निद्रा की तीसरी अवस्था–

तीसरी अवस्था में मस्तिष्क प्रवाहित होने वाली विधुत तरंगे अत्यन्त तेज़ी से बड़ी और गहरी होने लगती हैं । ऐसी अवस्था में ग्राफ पेपर पर खिंचने वाली रेखावों से स्पष्ट होता है कि रेखाएं पहाड़ियों की ऊँचाई की सी शक्लें धारण करने लगती हैं । इस स्थिति में सोने वाला व्यक्ति हिलेगा या बड़ बड़ायेगा भी तो उसे कुछ भी पता नहीं चलता है कि वह क्या कर रहा है । ठीक इसके 15 मिनट बाद व्यक्ति निद्रा की चौथी अवस्था में प्रवेश कर जाता है ।

निद्रा की चौथी अवस्था–

इस अवस्था में भी ग्राफ पेपर पर पहाड़ियों की शृंखलाएं सी बनने लगती हैं, जिसे "डेल्टा वेब्स" कहते हैं ।

निद्रा की तीसरी या चौथी अवस्था में यदि व्यक्ति को अख्सर जगा दिया जाय तो उसमें चिड़चिड़ा पन आ जाता है साथ ही वह झगड़ालू भी हो जाता है ।

स्वप्न आने का कारण

मनुष्य निरन्तर अनेक प्रकार के संकल्प विकल्प, मनन, चिन्तन, मोह-शोक, इच्छा आकांक्षा, करता ही रहता है । इनमें से कुछ संकल्प, कुछ इच्छाएं, वासनाएं कामनाएं, लालसाएं और आकांक्षाएं पूर्ण भी हो जाती हैं किन्तु अपूर्ण भी रहती हैं । कभी-कभी मनुष्य दिवा-स्वप्न भी देखा करता है और मनमोदक भी खाया करता है । इन सभी मानसिक विकारों का संस्कार निरन्तर मन में संचित होता रहता है किन्तु अनेक बाधावों, परिस्थितियों और साधना भावों के कारण उसे अभिव्यक्त होने का अवसर नहीं मिलता । वे ही सब अव्यवस्थित रूप से संचित मानस-विकार ही निंद्रा की अवस्था में मन के स्वच्छन्द होकर व्यवस्थित या अव्यवस्थित रूप में अभिव्यक्त हो चलते हैं, जिन्हें स्वप्न कहा जाता है और स्वप्न आने का कारण भी यही बनता है ।

कभी-कभी मनुष्य की तात्कालिक मानसिक अवस्था भय आशंका आदि के कारण भी स्वप्न दिखाई पड़ जाया करते हैं जैसे-यदि यात्रा करनी हो तो स्वप्न दिखाई पड़ता है कि गाड़ी छूट गई या छूट रही है, परीक्षा देनी हो तो दिखाई पड़ता है कि मैं देर से परीक्षा भवन में पहुंच रहा हूं । इस प्रकार मन की अनेक आकांक्षाएं स्वप्न में अनेक रूपों में मूर्त्त होने लगती हैं ।

हमारा मन भी विश्व-मानस का ही एक अंग है । इसलिए कभी-कभी भावी घटनाएं भी स्वप्न में दिखाई पड़ जाती हैं । आज-कल के मनोवैज्ञानिकों, मनोविश्लेषण शास्त्रियों ने स्वप्न पर बहुत अनुसन्धान करके मानव जीवन में स्वप्न का बड़ा महत्त्व माना है और इस प्रसंग में कहा भी है कि मनुष्य की अनेक दमन की हुई काम वासनाएं इच्छाएं, संकल्प तथा द्वन्द सब स्वप्न में अभिव्यक्त हो उठते हैं । इन स्वप्नों में भी कभी-कभी अपने प्रिय व्यक्तियों के अनेक सन्देश प्राप्त हो जाते हैं, संकेत प्राप्त हो जाते हैं कि अमुक वस्तु अमुक स्थान पर रखी है और वे सन्देश तथा संकेत ठीक उतरते हैं ।

जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति और तुरीया अवस्थावों में से केवल स्वप्न अवस्था ही ऐसी है जिसमें मन पूर्णतः स्वच्छन्द होकर भ्रमण करता है । जाग्रत अवस्था में तो मन नियंत्रित रहता है । अपने परम्परागत संस्कार, भय, शालीनता, सामाजिक नियम के कारण वह अपने सभी संकल्पों, इच्छाओं और वासनाओं को तृप्त नहीं कर पाता एवं चेतना अवस्था में बड़ा परवश रहता है किन्तु जब चेतना विश्राम करने लगती है तब वह मन निर्द्वन्द होकर सक्रम या अक्रम रूप से सूक्ष्म शरीर के माध्यम से अपने को तृप्त करता चलता है । इस प्रकार की स्वप्न सृष्टि केवल इस जन्म के भूत, भविष्य वर्तमान के ही नहीं, वरन अनेक जन्मों के कृत स्मृत व्यवहारों के सस्कारों की मानसिक आवृत्ति या अभिव्यक्ति करता रहता है । यद्यपि वर्तमान मानस-शास्त्री और स्वप्न विज्ञानवेत्ता पिछले जन्मों का अस्तित्व नहीं मानते किन्तु "भावस्थिराणि जननान्तर सौर्हार्दान" का सिद्धान्त मानने वाले भारतीय तो कर्म सिद्धान्त के अनुसार पुर्नजन्म मानते ही हैं । इसलिए हम अनेक ऐसे स्वप्न भी देखते हैं जिसका कोई सम्बन्ध हमारे जीवन में अनुभव से नहीं होता । छोटे बच्चे, चार-पांच महीनों के भी प्रायः चिहुंक उठते हैं और निद्रावस्था में अनेक प्रकार की चेष्टा करते हैं क्योंकि वे भी स्वप्न देखा करते हैं और उनके स्वप्न इस जन्म के नहीं पिछले जन्मों के हो सकते हैं । ऐसे अनेक जातिस्मर बालकों की कथाएं प्रसिद्ध हो गई हैं, जिन्हें अपने पिछले जन्म की पूर्ण घटनाएं स्मरण हैं ।

कभी-कभी शारीरिक अवस्था, रोग, शोक आदि के कारण अथवा अधिक भोजन कर लेने पर भी स्वप्न दिखाई पड़ने लगते हैं । स्वप्न विज्ञान वेत्ताओं का

कथन है कि हम संकल्प और इच्छा से भी स्वप्न देख सकते हैं । सम्मोहन [हिप्नोटिज्म] की अवस्था में जैसे हम सम्मोहित व्यक्ति को अपने विचार से प्रभावित करके उससे उसके मन की या अपने मन की बात कहला लिया करते हैं वैसे ही मन सम्भ्रमण [टेलिपेथी] के द्वारा दूसरे को इच्छित स्वप्न भी दे सकते हैं । अब तो इस विज्ञान ने यहां तक शोध कर निकाला है कि पशु भी स्वप्न देखते हैं पर वे किस प्रकार का स्वप्न देखते हैं यह वे नहीं बता सकते ।

स्वप्न की स्मृति कभी तो जाग उठने पर बनी रहती, कभी नहीं बनी रहती । कभी-कभी स्वप्न देखते रहने पर बीच में ही किसी कारण नींद टूट जाती है और स्वप्न अधूरा रह जाता है । कभी-कभी जागने पर मनुष्य अचानक हड़बड़ा कर उठ खड़ा होता है । यह इसलिए होता है कि मन के साथ उसका सूक्ष्म शरीर, जो स्वच्छन्द घूम रहा था उसे सहसा शरीर में आ पहुंचना पड़ता है । ऐसी स्थिति में मानसिक रोग हो जाने की सम्भावना होती है । इसलिए कहते हैं कि सोते को अचानक कभी नहीं जागना चाहिए साथ ही पानी डालकर या झकझोड़ कर भी न जगाना चाहिए ।

हमारे यहां स्वप्न विज्ञान के वैज्ञानिक पक्ष पर उतने अनुसंधान नहीं हुए हैं किन्तु उसके फल पर बहुत विस्तार से विचार हुआ है कि किस समय किस प्रकार का स्वप्न देखने से कितने समय में उसका फल सत्य होता है और स्वप्न में क्या देखने से क्या फल मिलता है । शरीर स्थान के छठे अध्याय में स्वप्न के सम्बन्ध में विस्तृत विचार किया गया है । इसके अतिरिक्त ब्रहवैवर्त्तपुराण के गणेश खण्ड के तैंतीसवें और चौंतीसवें अध्याय में, उसी के श्रीकृष्ण खण्ड के सतहत्तरवें अध्याय में, देवी पुराण के बाइसवें अध्याय में, कालिका पुराण के सत्ताईसीवें अध्याय में और मत्स्य पुराण के दो सौ बयालीसवें अध्याय में स्वप्न के सम्बन्ध में विशेष विवरण दिए हुए हैं

आत्मा के अलौकिक शक्ति द्वारा स्वप्न में शरीर त्याग

आम तौर पर लोगों का कहना है कि स्वप्न आत्मा शरीर से निकल कर बाहर भ्रमण करने लग जाती है, किन्तु यह बात सत्य नहीं है क्योंकि आत्मा के निकल जाने पर श्वास क्रिया बन्द हो जायगी परन्तु स्वप्न देखते हुए मानव के शरीर में श्वास क्रिया चलायमान रहती है अतः आत्मा नहीं निकलती, बल्कि आत्मा की अलौकिक शक्ति शरीर से निकल जाती है और जब चाहे पुनः प्रवेश कर जाती है । यह इस प्रकार की शक्ति है कि शरीर रूपी दीवारों से बाहर निकल आती है, या वातावरण में उड़ती फिरती है, तैरती रहती है पर किसी को भी दिखाई नहीं पड़ती है ।

इसे तांत्रिक अभिक्रियाओं के द्वारा ही पकड़ा जा सकता है, जिस पर महाकाली सिद्धि से मेरे द्वारा शोध कार्य पूर्ण हो चुका है ।

इस शक्ति को सूक्ष्म प्राण भी कहें तो अतिश्योक्ति नहीं होगी क्योंकि हमारे गांव में ही एक बार व्यक्ति ने स्वप्न देखा कि वह घड़ा देख रहा है और उसकी तरफ उड़ कर जा रहा है । बस इतना सा ही । पर एक नाटक हो गया, प्रात: उसके परिवार के सभी जग गये पर वह सोये जा रहा है । उसको हिलाया गया, पुकारा गया पर वह कोई उत्तर नहीं देता था । वह मृत भी नहीं था । उसके शवास चल रहे थे । उसके परिवार और समाज के बीच कुहराम मच गया कि जब श्वास चल रहा है तो व्यक्ति जाग क्यों नहीं रहा । इसका क्या कारण हो सकता है ?

चिकित्सक को बुलाया गया परन्तु वे भी हैरान । उसे रोग का पता ही नहीं चलता था । तभी मेरे पास किसी ने आकर इस अद्‌भूत घटना की जानकारी दी । मैं भागा भागा उसके घर गया, रोगी का नीरिक्षण किया तो हमें भी कुछ पता नहीं चला, फिर महाकाली की सिद्ध शक्ति से देखना शुरू किया तो पाया कि उस व्यक्ति का सूक्ष्म प्राण पास में रखे घड़े के पानी में कैद है । उसकी स्त्री को घड़े का ढक्कन हटाने को कहा । जैसे ही उसने घड़े का ढक्कन हटाया कि वह राम-राम कहता हुआ उठ बैठा ।

सब उसे आश्चर्य से देखने लगे पर रहस्य समझ में नहीं आया । इतने में भीतर से उस व्यक्ति की माता जी आई और बोली कि बहू ! इस घड़े का पानी बदल देना क्योंकि रात को जब मैं यहां आई थी तव इसका ढक्कन हटा हुआ था । मैंने वापिस ढकतो दिया था पर फिर भी जल बदल देना ।

यह घटना आपको साधारण सी लगेगी पर यह ऐसी साधारण नहीं कि स्वप्न विद्या पर ज्ञान न देती हो ।

क्या हुआ था उस व्यक्ति को ? क्या वह बेहोश था । नहीं वह बेहोशी नहीं थी बल्कि उस शक्ति का अभाव था जिसके द्वारा जागा जाता है । इस सारी घटना में बात या कारण केवल इतना है कि उस व्यक्ति को प्यास लगी और सोना चाहता था अत: उसे जलादि के स्वप्न आने लगे और वह उन्हीं में खोया सोता रहा । इसी बीच क्या हुआ कि वह शक्ति जल सर्म्पक प्राप्त करने के लिए निकली । पास में घड़ा था ढक्कन कुछ हटा था और शक्ति घड़े में जा घुसी । उसी समय माता जी ने आकर हटे हुए ढक्कन को ठीक से रख दिया । जिस कारण वह घड़े में ही बन्द रह गयी और वह व्यक्ति तब तक सोता रहा । जब तक कि घड़े का ढक्कन खोला नहीं गया । घड़े से ढक्कन हटा और वह जाग गया ।

वातावरण में भ्रमण करते हुए यह शक्ति जो-जो कार्य करती है वह स्वप्न के द्वारा दृष्टिगोचर होते हैं । जैसे हम कल्पना करते हैं वैसे ही यह शक्ति प्रायः कल्पनातीत स्वप्न दिखाती है क्योंकि वह वैसी ही क्रिया वातवरण में करती है । परन्तु कभी यथार्थिक क्रिया करके सत्य स्वप्न दिखाती है ।

उदाहरण स्वरूप एक युवक किसी युवती से प्रेम करना चाहता है पर हो नहीं पाता तब वह शक्ति सुषुप्तावस्था में निकल कर उसे काल्पनिक प्रेमालाप करवाती है । वह देखता है कि वह उस युवती से प्रेमालाप कर रहा है । परन्तु मैं इसे काल्पनिक स्वप्न कहता हूं । यह शक्ति यदि उस युवती की शक्ति से मिलकर संयोग करेगी तो यह युवक जो प्रेमालाप करेगा वह उस युवती को प्राप्त भी होगा । मैं इसे यथार्थिक स्वप्न कहता हूं ।

यह कोरी कल्पना नहीं है । यह अनुभव से जाना व परखा गया है तब ऐसा कहा जा रहा है । मैं इस शक्ति को प्राण इसलिए नहीं कहूंगा क्योंकि प्राण निकल जाने पर श्वास आदि का पलायन हो जाता है ।

मेरे अनुभव में यह आया है कि व्यक्ति के सूक्ष्म प्राण का दूसरे सूक्ष्म प्राण से क्रिया करना अति आवश्यक है तभी दो शरीरधारी एक समान स्वप्न देखते हैं और स्वप्न के फल से जाग्रतावस्था में भी वहां फिर एक दूसरे को स्वीकार कर लेते हैं ।

एक बार एक अमुक व्यक्ति एक स्त्री पर आसक्त हो गया परन्तु वह स्त्री उनकी तरफ देखती भी नहीं थी । इस बात से वह चिन्तित थे कि कैसे वार्ता हो ? कैसे उपलब्धि हो ? स्वप्न के द्वारा उन्होंने उससे प्रेमलाप अनेक बार किया था पर वह एक तरफा प्रेमालाप था जो कि उस स्त्री से तो मिला नहीं रहा था । एक रात्रि उन्होंने उससे स्वप्न में प्रेमालाप किया और रात्रि को उस स्त्री ने भी उससे प्रेमालाप किया हालांकि वह स्त्री उनकी तरफ देखती भी न थी । लगभग एक मास में ही उनकी उस स्त्री से मित्रता हो गई और दोनों एक दूसरे से प्रेमालाप करने लग गये । यह स्वप्न उसने भी देखी थी, ये बातें उसने हमें बतायी थी ।

सभी स्वप्नों में ऐसा नहीं होता और यह नियम हर जगह नहीं कार्य करता है क्योंकि स्वप्न नौ प्रकार के कारणों से होते हैं इसमें प्रथम प्रकार का कारण है-''सुना हुआ'' अर्थात् किसी से सुना और वैसा ही स्वप्न देख लिया । दूसरे प्रकार का स्वप्न है-''देखा हुआ'' । तीसरे प्रकार का स्वप्न है-''अनुभव किया हुआ ।'' चौथे प्रकार का स्वप्न है-''स्वभाविक'' । पांचवें प्रकार का स्वप्न है-''विकार-जन्य'' अर्थात् शरीर में रोग होने के कारण स्वप्नों का निर्माण होना । छठे प्रकार का स्वप्न है-''विचार व मनन'' अर्थात् किसी विषय पर लगातार

या गूढ़ विचार या चिन्तन से स्वप्न का निर्माण होना । सातवें प्रकार का स्वप्न है– ''भाग्य दोष'' । आठवें प्रकार का स्वप्न है– ''धर्म का प्रभाव'' अर्थात् कोई व्यक्ति साधना करता है, पूजा–पाठ में लगा है तो इसकी शुभताओं के प्रताप से स्वप्नों का निर्माण होता है । नौवें प्रकार का स्वप्न ''प्रभु कृपा'' से होता है । आठवें और नौवें स्वप्न के लिए प्राण के सूक्ष्म पदार्थ को अन्यत्र जाना नहीं पड़ता बल्कि दूसरे प्राण का सूक्ष्म शक्ति उससे सम्पर्क साधते हैं, जबकि शेष सभी स्वप्नों के लिए सूक्ष्म प्राण शक्ति को अन्यत्र जाना पड़ता है ।

अनेकानेक दार्शनिकों एवं वैज्ञानिकों द्वारा स्वप्न का रहस्योद्घाटन

सृष्टि की प्रत्येक वस्तु में रहस्य निहित है । इस रहस्योद्घाटन के लिए दार्शनिक एवं वैज्ञानिक जगत अनादि काल से सतत् उद्योग करता आ रहा है, परन्तु रहस्य की गहराई तक पहुंचने वाले लोग बिरले ही हुए हैं । वास्तव में ज्ञान का सागर इतना अथाह है कि बिरले ज्ञाणी जन ही उसकी अल्प थाह पाने में समर्थ हुए हैं । फिर भी प्रत्येक विचारकों ने अपने–अपने ढंग से सिद्धान्त निर्णय किये हैं, परन्तु स्वप्न जगत उनके विवेचन क्षेत्र से भिन्न विषय नहीं है । प्राचीन काल एवं वर्तमान काल के दार्शनिकों ने भी इसके रहस्य और महत्ता पर गम्भीर अध्ययन किया है ।

यथार्थ में स्वप्न का सम्बन्ध आत्मा से ही है । इस बात को हमारे प्राच्यदर्शनाचार्यों ने संसार के सामने ला उपस्थित किया है । आत्मा की अमरता के सिद्धान्त से यह स्पष्टतया सिद्ध होता है कि हमारे वर्तमान जीवन का सांसारिक सम्बन्ध पूर्वजन्मों से भी है, इसलिए यह बात स्वतः सिद्ध है कि स्वप्न पर भी पूर्वजन्मों के संस्कार शासन करते हैं ।

पाश्चात्य जगत में स्वप्न सम्बन्धी अत्यधिक अनुसंधान की गई है । प्रसिद्ध विद्वान ''अरस्तू'' [सिकन्दर बाद शाह के गुरु] का कथन है कि–जाग्रतावस्था में मनुष्य का ध्यान जिन प्रवृत्तियों की ओर उन्मुख नहीं होता है, सुप्तावस्था में वे ही प्रवृत्तियाँ उत्तेज़ना के कारण मन में जागरूक हो जाती हैं अर्थात् अभिप्राय यह है कि स्वप्न में हमारी दबी हुई प्रवृत्तियां ही उभरती हैं ।

''डा० ह्विरबे''–ने स्वप्निक कारणों के बताया है कि उष्णता के अभाव में हृदय की जो क्रियाएं निद्रितावस्था में उत्तेजित होकर कार्यरत हो जाती है । जागृतावस्था में कार्यव्यवस्था के फलस्वरूप जिन विचारों की ओर हमारा कभी ध्यान भी नहीं जाता वे ही विचार सुप्तावस्था में प्रकट होकर स्वप्न के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं ।

प्रसिद्ध विद्वान् ''सुकरात'' के अनुसार–जागृतावस्था में आत्मा परतंत्र रहती है, परन्तु वह स्वप्नावस्था में स्वतंत्र रहती है । इसी कारण से हमें स्वप्न में विचित्र बातें दिखाई पड़ती हैं । कलुषित आत्माओं के स्वप्न भी दूषित होते हैं, परन्तु पवित्रात्माओं के स्वप्न जन्तर्जगत् एवं वाह्य जगत से सम्बन्धित होते हैं । अतएव स्वप्नों के द्वारा हमें भविष्य में आनेवाली घटनाओं की सूचना मिलती है । स्वप्न भावी जीवन के प्रतीक होते हैं । कुछ विद्वानों ने स्वप्न का सम्बन्ध देवी देवंताओं से माना है, व्यक्तियों से नहीं । स्वभावत: देवी देवता ही व्यक्ति को शुभा शुभ का संकेत स्वप्न द्वारा करते हैं ।

कुछ विद्वानों का सिद्धान्त है कि जिस प्रकार मनुष्य अवकाश के समय में आमोद-प्रमोद करते हैं, उसी प्रकार हमारी आत्मा भी स्वप्नावस्था में आमोद प्रमोद करती है । हमारी आत्मा मृतात्माओं से सम्बन्ध स्थापित करके उनसे बातचीत करती है, जिसके फलस्वरूप स्वप्न में अद्‌भुत वस्तुएं दिखाई पड़ती हैं । हमारे वैज्ञानिकों ने स्वप्नान्वेषण करके दो भेद किये हैं, जिसमें प्रथम कारण शारीरिक विकार और दूसरा मानसिक विकार कहा है । शारीरिक प्रीक्रियाओं के प्राथमिकता देने वाले विद्वानों का कथन है कि–''मस्तिष्क के आन्तरिक परिवर्तन के कारण मानसिक चिन्ता का प्रादुर्भाव होता है । विभिन्न प्रकार के कोषों का जागृ-तावस्था में संयोग बना रहता है किन्तु निद्रावस्था में उनका वियोग हो जाता है, जिसके फलस्वरूप चिन्तनधारा रूक जाती है और स्वप्न दिखाई पड़ते हैं । इसके विपरीत मानसिक विकार की प्रधानता मानने वाले लोगों का कहना है कि निद्रावस्था में सभी कोषों का परस्पर घनिष्ट सम्पर्क रहता है, जिससे स्वभाविक चिन्तन की धाराएं मिलित हो जाती है और वे ही स्वप्न की उत्पत्ति करती हैं । शारीरिक विज्ञान के अनुसार निद्रितकाल में हमारी मानसिक वृत्तियां बिल्कुल निष्क्रिय नहीं हो जाती है, परन्तु यह बात अवश्य है कि जागृतावस्था की अपेक्षा निद्रितावस्था में मानसिक वृत्तियों की कड़ियां टूट जाती हैं । इसी कारण मन में अनेक प्रकार के दृश्य दृष्टिगोचर होते हैं ।

हमारे मन की चिन्तन धारा निरन्तर अबाधगति से चलती रहती है । जागृतावस्था में चिन्तन धारा पर नियंत्रण रहता है, लेकिन निद्रा काल में नियंत्रण न रहने के कारण ही विचित्र प्रकार के स्वप्नों की सृष्टि होती है । परन्तु हमारे वेद, ग्रन्थ, पुराण, कुराण, उपनिषद् एवं ज्योतिष शास्त्र के रचयिता आदिकाल के महार्षियों ने ईश्वर को सृष्टिकर्त्ता बतलाया है । सृष्टिकर्त्ता ने ही सम्पूर्ण जीवों एवं पदार्थों की सृष्टी की है अत: स्वप्न की सृष्टि भी ईश्वर ही करते हैं । ''वाराहमिहिर, वृहस्पति और पौलस्त्य आदि महान महर्षियों ने ईश्वर की

प्रेरणा को ही स्वप्न का प्रमुख कारण एवं "ईश्वर" को ही स्वप्न निर्माता कहा है ।

स्वप्न पूर्व जन्म के स्मरण शक्ति का सूचक

कुछ स्वप्न ऐसे होते हैं जो व्यक्ति को निरन्तर आते रहते हैं तो कुछ ऐसे होते हैं कि जिनका इस जीवन से सम्बन्ध ही नहीं होता । यह निश्चित है कि मन कल्पना किया करता है, किन्तु उस कल्पना में ज्ञान एक मूल भूत आधार होता है । समानान्तर अथवा विकसित कल्पना हो सकती है, किन्तु अज्ञात की कल्पना नहीं हो सकती और यह तथ्य सिद्ध वे तर्कसंगत बात है कि ज्ञान का क्षेत्र अनुभव से बड़ा होता है । व्यवहार में भी ज्ञान बुद्धि का विषय है और अनुभव मन का । जिस व्यक्ति ने पशु देखा है वह पशु के समानान्तर या विकसित कल्पना कर सकता है, जो पशु को जानता ही नहीं वह उसकी कल्पना भी नहीं कर सकता ।

स्वप्न शास्त्र के अध्येता यह मानता है कि स्वप्न एक कार्य है इसलिए उसके पीछे कारण अवश्य रहा है और स्वप्न जब कार्य है तो उनका कोई न कोई अर्थ अवश्य रहता है ।

अनेक बार हम ऐसे स्वप्न देखते हैं कि उनमें देखे गये दृश्य हमने इस जन्म में नहीं देखे, अथवा ऐसे प्रदेश व स्थान देखते हैं जिनके बारे में कभी कल्पना भी नहीं की थी ।

आखिर हम स्वप्नों का आधार क्या है ? ऐसे कौन से कारण हैं जो इस प्रकार के स्वप्नों की परिणति प्रदान करते हैं ।

इस प्रश्न के विवेचन में प्रथमतः यह मान लिया जाता है कि मन की कल्पनाशीलता की परिसीमा बहुत व्यापक है । इसलिए वह अपने इस देह यात्रा में प्राप्त अनुभवों को ही इतने प्रकार से संयोजित कर सकता है कि वे हमें चौंकाने वाले लगे । इसके अलावा मन प्रकाश से भी तीव्रगति से चलने की क्षमता रखता है । इसलिए वह वर्तमान ही नहीं भूतकाल और भविष्यत काल में भी अबाधगति से गमन कर सकता है । वेद की ऋचाओं में "यज्जाग्रतों दूरमुदेति देव तदु सुप्तस्य तथै वैति दूरगंम ज्योतिषां ज्योतिरेक तन्मेः मनः शिव संकल्पमस्तु ॥"

चेनेद भूतं भवनं भविष्यतपरिगृहीतम् मृतेन सर्वम् ॥2॥

उपरोक्त श्लोक में "कालति-गामी" शक्ति का वर्णन किया गया है और इस विलक्षण शक्ति के सम्पन्न होने के कारण वह किसी भी काल खण्ड में अबाध रूप से गमन कर सकता है । इसके अलावा एक बात और है कि

हमारी आत्मा के यात्रा प्रवाह में देह ही बदलते रहते हैं, ज्ञान और अनुभव व चेतना तथा इसके उपकरण भूत अन्त: करण नहीं बदलता और उस अन्त: करण में अत्यन्त तीव्रता से अनुभव की गई घटना व स्थान सर्वथा विलुप्त इतनी जल्दी नहीं होते ।

"सात जन्म तक की घटना मन के लिए सरलता से स्मृतिग्राह्य होती है ।"

इन घटनाओं का पुर्नदर्शन संभव है । यद्यपि देह यात्रा में व्यक्ति एक सीमित क्षेत्र में ही देहान्तरण करके विचरता रहता है, विशेष परिस्थिति में ही हज़ारों मील का अन्तर पड़ता है, समुद्र पार के देश में जन्म लेने की घटना तो अति विशिष्ट परिस्थिति में ही संभव होती है । मेरा पुत्र संजीव बचपन में जब, वह बोलना सीख ही रहा था "बाबू जी च" जैसे बोला करता था । इस प्रकार "च" का प्रयोग महाराष्ट्र में करते हैं । बाद में अनुसंधान करने पर पता चला कि उसकी पूर्व देह-महाराष्ट्र की थी ।

जयपुर में जब राजस्थान विश्वविद्यालय में परा मनोविज्ञान का विषय प्रारम्भ किया गया था तब एक महिला आई थी । वह स्वप्न में ऊँचे-ऊँचे शिखरों वाले मन्दिर देखा करती थी जबकि उसके देश में ऐसे मंदिर कहीं थे ही नहीं । वह बड़ी होती गई, स्वप्न आते रहे । एक बार जब उसने भारत के गोपुरम् देखे तो पहचान गई कि ऐसे मकान वह कबसे देखती जा रही है । जब वह वहां गई तो उसे ऐसा महसूस हो रहा था कि वह कितने दिनों तक इस मंदिर में रही है और वहां के सभी जगह जैसे उसे पहले से ही देखा हुआ है । वह बिना पूछे ही किसी भी जगह वहां जाने आने में पूर्णरूपेण सक्षम थी ।

ये घटनाएँ सुषुम्ना की शक्ति के कारण प्रकाशित हो जाती हैं । स्वप्न सिद्धि के कारण हमें भविष्यत को जानने के लिए जो स्वप्न होते हैं उनमें भी मन ही कारण बनता है क्योंकि प्रकाश के रूप में व्याप्त अथवा परिमेय जिस काल को हम जानते हैं, उनसे तीव्र गति केवल मन की हो सकती बुद्धि निर्णायक है, वह कालजयी अतएव काल की रहस्यवेतृ है । काल अथवा दिक उसको व्याप्त नहीं कर सकते । वाक् सिद्धि जैसी शक्ति बुद्धि में प्रकट होती है । बुद्धि का कार्यज्ञान है और उसकी उदात्त अवस्था में अर्थ एवं शब्द अभिन्न रूप में अवस्थित रहते हैं ।

स्वप्न सिद्धि जैसे प्रयोग मंत्र जप के कारण मन पर छाये बाहरी दबावों को हटाकर दिशा विशेष में केन्द्रित कर दिया करते हैं और आग्रहमुक्त मन अपनी स्वभाविक विलक्षणता अतएव तीव्रतर गति से भावी का परिधान कर लेता है ।

क्या हमें या हमारे परिचितों को ऐसे स्वप्न नहीं आये जो भविष्य का अविकल दर्शन रहे हैं ? बिना किसी प्रकार की साधना के भी कुछ लोग ऐसे

होते हैं जिनको ऐसे स्वप्न आ जाते हैं । कई–बहुत कम लोग ऐसे भी हैं जिनको नैसर्गिक रूप से विजन होते हैं । वे किसी भी व्यक्ति या घटना के बारे में विजन देख लेते हैं और भविष्य ज्ञान कर सकते हैं ।

जिन लोगों को कजली चढ़ाते हैं या दीपक की लौ में विगत या भविष्यत् की बात देखने को कहा जाता है उसके मन को भी केन्द्रित किया जाता है । सम्मोहन अथवा हिप्नोटाइज करने जैसी पद्धति ही वहां भी काम में की जाती है । प्राय: कजली चढ़ाने या हजरत मंत्र के प्रयोग में छोटे बच्चे को ही माध्यम बनाया जाता है क्योंकि उसके मन पर राग द्वेष जैसी प्रवृत्तियों का मार एवं कल्मष नहीं चढ़ा रहता और वे आसानी से सम्मोहित हो जाते हैं । सम्मोहित अवस्था में मन को केन्द्रित करके उसे अपेक्षित गति दी जा सकती है और मन चाही दिशा में अथवा विषय पर केन्द्रित किया जा सकता है । इसलिए हजरत मंत्र के प्रयोग में अनेक बार आश्चर्यजनक दृष्य दीख जाते हैं और एक सीमा तक [यह सीमा पात्र की क्षमता और योग्यता पर निर्भर करती है] तदनुसार भूत या भविष्यत की घटनाओं का विवरण जान लिया जाता है ।

स्वप्न दर्शन काल एवं निष्कर्ष

शास्त्रीय दृष्टि से रात्रि के प्रथम प्रहर में आनेवाला स्वप्न शुभता प्रदायक नहीं होता है और इसका कोई फल भी नहीं मिलता । ऐसा भी शोध कार्य से पता चला है कि रात्रि के प्रथम प्रहर के स्वप्न का फल कुछ न कुछ कभी–कभी मिल जाता है, परन्तु बहुत ही देर से अर्थात एक वर्ष भी लग सकता है । दूसरे प्रहर का आठ महीनों में । तीसरे और चौथे प्रहर में देखे गए स्वप्न का 15 दिनों में फल अवश्य ही मिल जाता है । अरूणोदय काल में देखे हुए स्वप्नों का फल 10 दिनों में और प्रात: काल में देखे गए स्वप्न का फल 5 दिनों तक में अवश्य मिल जाता है ।

भयातुर नग्न, मल–मूत्र के वेग से पीड़ित व्यक्ति के स्वप्न दर्शन का फल निष्फल होता है ।

स्वप्न देखने के बाद जो व्यक्ति निद्राभिभूत हो जाता है अथवा रात्रि में ही अपने देखे हुए स्वप्नों का वर्णन किसी अन्य व्यक्ति से कर देता है, तो उसे भी स्वप्न का फल प्राप्त नहीं होता ।

जो व्यक्ति अपने स्वप्न को किसी नीच पुरूष से शत्रु से, मूर्ख से अथवा अपनी पत्नी से या किसी भी स्त्री से कह देता है तो । समझे । विपप्ति को निमंत्रण देता है । अत: स्वप्न का फल जानने के इच्छुक व्यक्ति को चाहिए कि वे अपना स्वप्न किसी तांत्रिक, ज्योतिषी या पंडित को ही बताए । स्वप्न की

चर्चा करते वक्त मनुष्य को सदैव ज्ञाणीजनों के पास पूर्वाभिमुख हो कर बैठना चाहिए।

तिथियों के अनुसार स्वप्न फल

कृष्णपक्ष :–

कृष्णपक्ष के प्रतिपदा तिथि अर्थात प्रथम दिन का स्वप्न फल मिथ्या होता है। द्वितीय का फल देर से प्राप्त होता है, तृतीया और चतुर्थी का कोई फल नहीं मिलता। पंचमी और षष्ठी तिथि को देखे गए स्वप्नों का फल 60 दिन के बाद अथवा तीन वर्ष के अन्दर प्राप्त होता है। सप्तमी तिथि का फल शीघ्र ही मिलता है। अष्टमी और नवमी तिथि का स्वप्न प्रतिकूल फलदायक सिद्ध होता है। दशमी एकादशी, द्वादशी और त्रयोदशी के स्वप्नों का फल असत्य होता है। चतुर्दशी को स्वप्न देखने का फल सत्य होता है एवं अमावस्या तिथि का निरर्थक सिद्ध होता है, इसमें सन्देह नहीं करना चाहिए क्योंकि वाराहमिहिर आदि अनेकों महर्षियों का यह कथन है।

शुक्ल पक्ष :–

प्रतिपदा के स्वप्न का फल देर से प्राप्त होता है। द्वितीया का फल उल्टा मिलता और तृतीया का फल विलम्ब से मिलता है। चतुर्थी और पंचमी के स्वप्नों का फल दो महीने से लेकर दो वर्ष के अन्दर अवश्य मिलता है। षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी आदि तिथियों का फल शीघ्र और सत्य निकलता है। एकादशी, द्वादसी का फल भी सत्य होता है परन्तु फल विलम्ब से प्राप्त होता है। त्रयोदशी और चतुर्दशी का फल अशुन परन्तु पूर्णिमा रात्रि के स्वप्न फल उत्तम और अतिशीघ्र प्राप्त होता है।

शुभ स्वप्न देखने पर आपका कर्तव्य

शुभ स्वप्न देखने वाला अति सौभाग्यशाली होता है क्योंकि भगवद्कृपा से ही हृदय में शुभ स्वप्नों का संचार होता है। अतः मानव को चाहिए कि जब भी वह शुभ स्वप्न देखे तो देखने के बाद सोचे नहीं अर्थात बची हुई रात्री में अर्न्तमन से जगकर भगवान का भजन करे और प्रातः काल स्नानादि से पवित्र होकर शिवालय में जाकर शिवलिंग पर जल अर्पित करे।

ऐसे शुभ स्वप्न की चर्चा एकमात्र गुरु, तांत्रिक या पंडित के अलावा और किसी से भी नहीं करनी चाहिए। अनेक बार ऐसा हुआ है कि शुभ स्वप्न लोगों के सामने सुनाया गया तो स्वप्न आना ही बन्द हो गया अतः ऐसा भूल कभी न करना चाहिए क्योंकि शुभ स्वप्न आना देवी देवताओं की असीम कृपा है।

अशुभ स्वप्न देखने पर आपका कर्तव्य

अशुभ स्वप्न जब भी देखें तो देखने के बाद तुरन्त सो जाए । प्रात:काल होने पर अधिक से अधिक लोगों के सामने सुनावें । यदि घोर अनिष्टकारक स्वप्न देखते हैं तो विद्वान पंड़ितों को बुलाकर पूजा-पाठ, हवन आदि करावें अथवा तांत्रिको से सलाह लेकर "सिद्ध अनिष्ट विनाशक" "यंत्र" धारण करें जो मेरे कार्यालय से भी प्राप्त कर सकते हैं । यदि आप अशुभ स्वप्नों का उचित उपाय नहीं करते हैं तो अपने और अपने परिवार को विनाश के कगार पर ले जाने के बराबर होगा । अबोध बच्चों का रात में चीखना, चौकना, सोये में रोना आदि बुरे स्वप्नों का ही फल है । ऐसी अवस्था में योग्य तांत्रिक से सलाह अवश्य लेनी चाहिए, क्योंकि ऐसी अवस्था में अबोध बच्चों का दिल कमजोर हो जाता है, स्वभाव से चिड़चिड़ा हो जाता है और कोई-कोई बच्चे तो बुरे स्वप्न से डर -डर कर काल के गाल में भी समा जाते हैं । अत: ऐसी अवस्था में उपाय तुरन्त करना चाहिए ।

स्वप्न द्वारा अचेतन मन की तृप्ति

स्वप्न किसी भी प्रकार का क्यों न हो उससे अचेतन मन की तृप्ति होती है । इसी कारण स्वप्नों को अभिलाषापूरक कहा जा सकता है । आज सिनेमा या वी. सी. आर. का प्रचालन है और आज के दर्शक स्वयं जानते होंगे कि उन्होंने स्वप्नों में अपने चहेते कालाकारों से साहचर्य किया या नहीं । मेरे पास अनेक लोग आते रहते हैं और मैंने पाया है कि जो पात्र अपनी असमर्थता को स्वीकार कर लेते हैं वह स्वप्नों के द्वारा उस सुख की पूर्ति कर लिया करते हैं ।

एक लड़की अमुक के साथ विवाह करना चाहती थी परन्तु उसका विवाह अन्यत्र हो गया तो उसे प्राय: डरावने स्वप्न आने लगे कि वह दुल्हन बनकर बैठी है और कोई प्रेतात्मा उसे सता रही है । कुछ विषयों में तो यह साहचर्य भी हुआ है । मानसिक रूप से उन्नत पात्र ने स्वप्न में उसके साथ साहचर्य किया जिसे कि जाग्रत अवस्था में प्राप्त करना चाहता था । प्राय: नेता लोग जन समूह के मध्य स्वयं को खड़ा देखते हैं । बच्चे स्वप्न में अधिक खिलवाड़ करते हैं । सुषुप्तावस्था में जब प्यास लगती है तब जलाशय, नल, जलादि के स्वप्न देखते हैं । जब लघुशंका लगती है तब स्वप्न में पारवाना व शौचालय, मल-मूत्रादि दिखाई पड़ते हैं । जब भूख लगती है तब रोटी आदि के स्वप्न दिखते हैं ।

नींद, यौनेच्छा, कामनाएँ और स्वप्न

लोग कहते हैं कि स्वप्नों के कारण नींद में बाधा पहुँचती है जबकि स्वप्नों के कारण नींद में बाधा नहीं पहुँचती, बल्कि सोने में सहायता प्राप्त होती है । यह परम सत्य है कि नींद स्वप्न का अभिभावक होती है । प्राय: जब सोने की इच्छा को लेकर व्यक्ति बिस्तर पर जाता है और सो जाता है जब भीतर अन्तर्मन में दबी हुई अपूर्ण असन्तुष्ट अभिलाषाएँ अपनी पूर्णत: सन्तुष्टि के लिए चेतना में आने का प्रयास करती है । सुषुप्तावस्था [सोने की अवस्था] में प्रतिबन्ध क्रिया शिथिल तो रहती है पर अचेतन मन क्रियाशील बना रहता है । इसी कारण अभिलाषाएँ विभिन्न रूपों में विभिन्न प्रतीकों के सहारे पूर्णत: अपनी सन्तुष्टि प्राप्त करती है । यही कारण है कि स्वप्न में निद्रा में किसी प्रकार की बाधा नहीं पहुँचती बल्कि व्यक्ति निश्चिन्त होकर सोता रहता है ।

कई बार दमित इच्छा किसी और प्रकार की होती है जबकि स्वप्न किसी और प्रकार का होता है । यह भी सत्य है कि स्वप्न में दमित इच्छाओं का प्रेषण रहता है प्राय: आज की दमित इच्छाएँ यौन विषयक ही हैं परन्तु सभी लोगों के मैथुन का स्वप्न नहीं आयेगा, बल्कि कोई तो मैथुन करेगा, कोई मैथुन देखेगा, कोई चित्र देखेगा, कोई चारपाई देखेगा, कोई सुन्दरी देखेगा, कोई बिस्तर बिछा देखेगा । यह सब अलग-अलग प्रकार के स्वप्न हैं, पर इन स्वप्नों की जड़ प्रबल दमित यौनेच्छा ही है ।

यौनेच्छा के अतिरिक्त भी लोगों की कामनाएं होती हैं जो कि अन्तर्मन में पड जाती है । सफलता और असफलता के झूले में झूलने वाले व्यक्ति स्वप्न में रोयेगा या हंसेगा । वशीकरण प्रयोग करने वाला ध्येय का दर्शन तो पाता है, इसके अतिरिक्त भी स्वप्न देखता है ।

एक पुरुष किसी शवयात्रा पर गया और वहां एक स्त्री पर आसक्त हो गया पर उसे मिल नहीं सका, कह नहीं सका । इसका परिणाम यह हुआ कि वह स्वप्नों में श्मशान, जलती चिताएँ, कन्धों पर उठी अर्थी के स्वप्न देखने लग गया । जब किसी व्यक्ति को उसका शत्रु हानि पहुँचाता है और वह मूढ-मति सा उसे स्वीकार कर लेता है तब स्वप्नों में यह कुत्तों के भौंकने व काटने की क्रिया को देखता है, या कोयला राख भी देख सकता है । स्वप्न में लड़ाई-झगड़े भी करता है । जिस व्यक्ति को भविष्य व्यर्थ प्रतीत होता है वह स्वप्नों में अन्धेरा, धुँआ ऊँचाई से उतरना या गिरना आदि देखता है । इस प्रकार स्वप्न नींद यौनेच्छा और कामनाओं का अचेतन आधारशिला है ।

स्वप्नों द्वारा भूत भविष्य और वर्तमान की सच्ची जानकारी हेतु यंत्र-मंत्र साधना

पाठकों ! मैंने पिछले अनेक वर्षों से विभिन्न विषयों पर शोध कार्य किया, जिसमें "यंत्र-मंत्र और स्वप्न साधना प्रमुख है ।" इन विषयों पर माहिरता हाशिल करने हेतु दुनियां के अनेका नेक सिद्ध गुरुओं की सेवा की तब कहीं जाकर इन विषयों पर अपना अधिपत्य [अधिकार] कायम किया । तांत्रिक गुरुओं से अनेका नेक सिद्धि प्राप्त कर "यंत्र-मंत्र द्वारा उपाय" नामक पुस्तक तो पहले ही "अमित पाकेट बुक्स जालंधर" से प्रकाशित करवा चुका हूँ, जिस परम पुस्तक से संसार के लाखों लोग लाभान्वित हो रहे हैं, और अब स्वप्नों पर शोध करके यह पवित्र पुस्तक लिख रहा हूं । स्वप्न पर शोध क़रने की प्रेरणा हमें गोस्वामी तुलसीदास रचित "रामचरित-मानस रामाचण" से मिली । गोस्वामी तुलसीदास जी ने मानस में कई स्थलों पर स्वप्नों का सुन्दर विवेचन किया है ।

जिस समय राम वियोग में महाराजा दशरथ का स्वर्गवास हो गया और गुरु वशिष्ठ ने भरत-शत्रुघ्न को उनके ननिहाल से उन्हें बुलाने के लिए दूतों को भेजा तो उधर भरत जी अपने ननिहाल में स्वप्नों को देखते हैं, जो इस प्रकार है-

[अयोध्या काण्ड]

"देखहिं राति भयानक सपना ।
जागि करहिं कटु कोटि कल्पना ॥
विप्र जेवाई देहि दिन-दाना ।
शिव अभिषेक करहिं विधि नाना ॥"

अर्थात डरावने स्वप्नों के देखने का फल भी अशुभकारी होता है । इसके अनन्तर जब भरत रामचन्द्र जी से मिलने के लिए चित्रकूट जाते हैं, तो वहां सीता जी ने जो स्वप्न देखा था, वह भी अमंगल सूचक ही सिद्ध हुआ । यथा

"जहाँ राम राजनी अवसेषा ।
जागे सीय सपन उस देखा ॥
सहित समाज भरत जनु आए ।
नाथ वियोग ताप तन ताए ॥
सकल मलीन मन दीन दुखारी ।
देखी सास आन अनुहारी ॥
सुनि सिच सपन भरे जल लोचन ।

भये सोच बस सोच बिमोचन ॥
लखन सपन यह नीक न होई ।
कठिन कुचाह सुनाइहि कोई ॥
अस कहि बन्धु समेत सहाने ।
पूजि पुरारी साधु सनमाने ॥''

[अयोध्या काण्ड]

अर्थात् स्वप्न में किसी को शोकपूर्ण मुद्रा में देखना अथवा सैन्य आदि का अवलोकन करना भी अशुभ फलकारक माना गया है । इसलिए सभी प्रकार के निकृष्ट स्वप्नों के शमनार्थ शिव-पूजन एवं सिद्ध स्वप्न निवारक-यंत्र धारण का विधान बतलाया गया है । मानस में स्वप्नों के कई प्रसंग आये हैं । इसी प्रकार स्वप्नों के एक और उदाहरण देखिए-

जब सीता जी रावण की अशोक वाटिका में निवास कर रही हैं, तो त्रिजटा नामक एक राक्षसी ने वहां उपस्थित अन्य राक्षसियों को सम्बोधित करते हुए- अपने स्वप्न का वर्णन निम्न प्रकार से किया है-

त्रिजटा नाम राक्षसी एका ।
रामचरन रति निपुन विवेका ॥
सबन्ही बोलि सुनाएसि सपना ।
सीतहिं सेह करहु हित अपना ॥
सपने वानर लंका जारी ।
जातुधाम सेना सब मारी ॥
खर आरूढ़ नगन दससीसा ।
मुण्डित सिर खण्डित भुजबीसा ॥
एहि विधि सो दक्षिण दिसि जाई ।
लंका मनहु विभीषण पाई ॥
नगर फिरी रघुबीर दोहाई ।
तब प्रभु सीता बोलि पठाई ॥
यह सपना मैं कहौं पुकारी ।
होइहि सत्य गये दिन चारी ॥

[सुन्दर काण्ड]

उपर्युक्त स्वप्न का अशुभ फल भी तुरन्त ही घटित हुआ । जिसके परिणाम स्वप्न लंकाधिपति रावण की इहलीला ही समाप्त हो गई ।

उपरोक्त चौपाईयों से स्पष्ट हो जाता है कि स्वप्न सृष्टि के आदिकाल से ही बड़े-बड़े देवी देवताओं ने, सिद्ध महापुरुषों ने भी देखा करते थे और

उसका शुभ अशुभ फल मिला करता था और अशुभ स्वप्न को शुभ में बदलने हेतु धर्मग्रन्थों में उपाय भी बताए गये हैं । श्री मद भागवत पुराण में महीर्ष वेद्व्यास जी लिखते हैं कि जो मानव अशुभ स्वप्न देखे वो निम्नलिखित श्लोक का पाठ नित्य ही प्रातः काल पवित्र होकर करे तो उसके अशुभ स्वप्न शुभ में बदल जाते हैं । देखिये इसका एक उदाहरण–

[श्री कृष्ण जन्म खण्ड से]

1. अच्चुंत केशव विष्णु हरिं सत्यं जर्नादनम् ।
हंशं नारायंण चैव ह्ये तन्नामाष्टकं शुभम् ॥
शुचिः पूर्वभुखः प्राज्ञों दशकृत्वश्च यो जपेत् ।
निष्पापोऽपि भवेत्सोऽपि दुःस्वप्नः शुभवान् भवत् ॥
विष्णुं नारायणं कृंष्ण माधवं मधु सूदनम् ।
हरि नरहरि नामं गोबिन्दं दधिवामनम् ॥
भक्त्या चेनानि भद्राणि दश नामानि योजपेत् ।
शत्कृत्वों भक्तियुक्तों जपत्वा नीरोगता ब्रजेत ॥
लक्षंधा हि जपेद यो हि बन्धनान्मुच्यते ध्रुंवम ।
जपत्वा च दशलक्षं च महाबन्ध्या प्रसूयते ॥
हरिक्याशो यतः शुद्धो दरिद्रो धनवान भवेत् ।
शतलक्षं च जयत्वा च जीवन्मुक्तो भवेन्नरः ॥
शुद्धो नारायणक्षेवे सर्वसिद्धि लमेन्नरः ॥

2. दूसरा अशभु स्वप्न नाशक स्तोत्र इसी खण्ड से–
ऊँ नमः शिंव दुर्गां गणपतिं कार्तिकेयं दिनेश्वरम् ।
धर्म गंगां च तुलसी राधां लक्ष्मीं सरस्वतीम् ॥
नामान्यैतानि भद्राणि जले स्नात्वा च यो जपेत् ।
वांछितं च लभेत् सोऽपि दुःस्वप्न शुभवान् भवेत् ॥

अशुभ स्वप्न नाशक तीसरा स्तोत्र :–

3. वाराणस्यां दक्षिणे तु कुक्कुटों नाम वै द्विज : ।
तस्य स्मरणमात्रेण दुःस्वप्नः सुखवो भवेत् ॥१॥
अभिमुक्त चरणयुगल दक्षिण मूर्तेश्च कुक्कुट चतुष्कम् ।
स्मरणमपि वाराणस्या निहन्ति दुःस्वप्नमपशकुनं च ॥२॥

3. श्री कृष्ण जन्म खण्ड में कहा गया है–
कि जो मानव ऊँ नमो मृत्युञ्जयाय स्वाहा ॥
इस मंत्र का एक लाख जप करेगा वह मृत्यु देखने वाले स्वप्न को भी 100 वर्ष की आयु में बदल देगा । देखिए श्लोक :–

"ऊँ नमो मृत्युञ्जयायेति" स्वाहान्त लक्षधाजपेत् ।
दृष्ट्वा च मरंण स्वप्ने शतायुश्च भवेन्नर : ॥
इसी खण्ड में कहा गया है कि–

"ऊंह्रीं श्री क्लीं दुर्गतिनाशिन्यै महामायायै स्वाहा," इस मंत्र का उच्चारण पवित्रता पूर्वक नित्य दस बार जप करने से दुःस्वप्न भी सुखदायक बन जाता है, कमसे कम 21 दिन अवश्य करना चाहिए । चाहे कोई भी मंत्र या श्लोक क्यों न हो ।

अशुभ स्वप्न आना, उपरोक्त श्लोकों या मंत्रों द्वारा उसका निवारण करना वैदिक प्रणाली, कुछ वर्ष पहले मेरे लिए एक चिन्तन का विषय बन गया कि इन्सान के हृदय में स्वप्न पैदा करने वाली "शक्ति" कौन है ? "धन प्राप्त कराने वाली" शक्ति–लक्ष्मी हैं, "विद्या बुद्धि प्राप्त कराने वाली शक्ति" सरस्वती हैं, विनाश करने वाली शक्ति महाकाली हैं अर्थात सृष्टि् के सम्पूर्ण सरकार चलाने हेतु हर विभाग का कोई न कोई शक्ति [मीनिस्टर] मंत्री जरूर है, तो फिर स्वप्न प्रदान कराने वाला विभाग का मीनिस्टर कौन है ?

शास्त्रों, ग्रन्थों, पुराणों एवं वेदों के पन्नों का चप्पा–चप्पा छान मारा परन्तु इस टेढ़े सवाल का जवाब कहीं से भी प्राप्त न हुआ । तब तो मेरे मनो मस्तिष्क में और ही उथल पुथल मच गया, क्योंकि मैं इस समस्या का हल अवश्य निकालना चाहता था कि स्वप्न प्रदान करने वाली शक्ति आखिर है कौन ?

मैं इस शोध कार्य में लगा रहा । बहुत दिनों के बाद "बंगाल राज्य" के कामरुकमक्ष्या नगर में महान सिद्ध गुरु "कालेश्वर महाराज" जी का हमें दर्शन प्राप्त हुआ, जो अपार शक्ति के मालिक थे । उनकी सेवा में मैंने कुछ दिन अर्पित किया । वे हमारे विचार और स्वभाव से अति प्रभावित हुए । तब उन्होंने कहा ।

पुत्र ! स्वप्न प्रदान करने वाली शक्ति अम्बिका "स्वप्नेश्वरी देवी" हैं, जो विद्या बुद्धि प्रदायिनी माता सरस्वती की बहन हैं । माता सरस्वती जी ने ही स्वप्न प्रदान कराने वाला विभाग इनके हाथों में सोंपा है । अम्बे स्वप्नेश्वरी ही शुभ या अशुभ स्वप्न इन्सान के हृदय में प्रदान करती है ।

जो व्यक्ति स्वप्नेश्वरी की साधना कर सिद्धि प्राप्त करता है वह व्यक्ति भूत, भविष्य या वर्तमान किसी भी बातों की जानकारी, किसी भी समस्याओं का हल सुगमता पूर्वक एक रात में ही निकाल सकता है । परन्तु इनकी सिद्धि बच्चों का खेल नहीं, एक लाख आदमी यदि इस ओर अग्रसर होगा तो उनमें से किसी एक अतिभाग्यशाली व्यक्ति ही उनकी दया प्राप्त कर सकेगा ।

आश्चर्य युक्त उनकी यह वाणी सुनकर मैं दंग रह गया और हृदय से आवाज आई कि हल मिल गया । उत्सुकता पूर्वक मैंने उनसे पूछा गुरुवर !

''स्वप्न प्रदान कराने वाली शक्ति पर'' मैंने कई वर्षों से ''शोध'' कर रहा हूं परन्तु मंजिल ही नहीं मिल रहा था । वैदिक ग्रन्थों का अध्ययन करने के पश्चात् ''तांत्रिक जगत में'' भी प्रवेश किया ताकि यहां आकर भी समस्या का समाधान मिल जाय, ''महाकाली की कृपा भी प्राप्त हुई'' इसके बावजूद भी स्वप्न शोध के आखिरी मंजिल पे नहीं पहुँच पाया । इतना सुनकर बाबा ने कहा-''पुत्र ! तुम क्या चाहते हो ?''

''बाबा मैं चाहता हूँ कि स्वप्न शक्ति'' पर विजय पाऊँ और इस शक्ति की ''साधना'' संसार के समक्ष उजागर करूँ, ताकि संसार के देवी साधक भक्त गण इन शक्ति के द्वारा अपने भूत, भविष्य और वर्तमान की समस्याओं को जान सके और उसका समाधान उनसे माँग सके, यही हमारी कामना है बाबा । आवावेष हो उन्होंने कहा ''तुम्हारी कामना सफल हो,'' यही मेरा आर्शीवाद है । दुःखोद्धार हेतु, समाजोद्वारा हेतु कदम बढ़ाने वाले सेवकों के सिर पर परमात्मा भी फूल बरसाते हैं, अतः तुम अवश्य सिद्धि पाओगे । तत्पश्चात् उनकी असीम छत्रछाया में रहकर छ दिनों में स्वप्नेश्वरी देवी की कृपा प्राप्त की और उनकी दया से-''स्वप्नेश्वरी सिद्ध यंत्र'' द्वारा देश-विदेश के हजारों लोगों को लाभन्वित कर चुका हूँ ।

''माता स्वप्नेश्वरी सिद्धि'' की विधि इस प्रकार है-

स्वप्नेश्वरी देवी सिद्धि विधि

यह विधि अपने दुर्लभ प्रयोग के साथ प्रस्तुत है-

सोमवार की रात्रि में [बारह बजें] अपने पवित्र घर के फर्स पे गोबर का चौंका लगावें उसके ऊपर देसी घी का दीपक जगावें, धूप अगरबत्ती जलावें, बताशे का प्रसाद चढ़ावें सफेद पुष्प [फूल] चढ़ावें, फिर पवित्र हृदय से निम्न मंत्र द्वारा 21 माला जप करें । जप समाप्त होने के बाद स्वप्नेश्वरी ज्योति की आरती करें । फिर ज्योत का भस्म मस्तक में लगाकर सो जाएं । ज्योत के पास ही कम्बल बिछाकर भूमि पर सोवें । यह विधि 61 दिनों में पूरी होती है और साधक को 61 दिनों तक फलाहार पर ही रहना पड़ता है । अन्तिम दिन 1100 मंत्रों द्वारा हवन करें । बासठवें दिन अन्न ग्रहण करें । इस क्रिया के बाद किसी भी समस्या के समाधान हेतु जानकारी प्राप्त करना होतो पुनः सोमवार के दीप जगाकर, दीप के अगरबत्ती दिखाकर 101 बार मंत्र जप कर अपना प्रश्न सुना दे और सो जाएं । ''भगवती स्वप्नेश्वरी'' आपके स्वप्न में आकर आपके प्रश्नों का उत्तर अवश्य दे जायेंगी । सत्य और सिद्ध है आप भी करके देखें ।

सिद्धि मंत्र

''ॐ नमः स्वप्न चक्रेश्वरी
स्वप्ने अवतर अवतरगतं
वर्तमानम् कथय कथय स्वाहा ॥''
माता स्वप्नेश्वरी सिद्धि

प्राप्त भक्त ने यदि निम्न यंत्र विधि पूर्वक तैयार कर यदि किसी व्यक्ति को दे दे और यंत्र प्राप्त कर्त्ता ने विधि पूर्वक यंत्र सिरहानी में रखकर सो जाय तो उसे भी अपने प्रश्नों का जवाब मिलने लगता है।

''स्वप्नेश्वरी यंत्र'' और ''साधना विधि''

साधना विधि :–सिद्धि कर्ता सोमवार की अर्द्ध रात्रि में अनार की कलम से कागज़ पर यह यंत्र लिखे–

तत्श्चात् धूप, दीप, प्रसाद, फल, पुष्प वगैरह पूजन सामग्री से यंत्र का षोड़शोपचार पूजन करे। फिर ''सिद्धि मंत्र'' का। माला जप करे। तत्पश्चात् तांबे के तबीज मं यंत्र भरकर चाहत कर्त्ता को दे दे। यंत्र पाप्त करने वाले को चाहिए कि यंत्र धारण या प्रयोग विधि वही अपनाये जो सिद्ध गुरु का या यंत्र प्रदान करने वाले का आदेश हो।

2. अब मैं स्वप्न प्राप्ति हेतु, स्वप्न में अपने मुंहमांगे प्रश्नों का उत्तर पाने हेतु कर्ण पिशाचिनी विद्या व्यक्त कर रहा हूं। आगे लिखा गया मंत्र कर्ण

पिशाचिनी का है जिसे अनेक साधनों ने सत्य प्रमाणित किया है । प्रस्तुत कर्ण पिशाचिनी विद्या का प्रयोग कुछ इस प्रकार से करते हैं कि आम की लकड़ी का एक पट्टा बनवाकर ले आते हैं । दिवाली की रात्रि या ग्रहण की अविध अथवा दुर्गा अष्टमी की आर्द्ध हूं रात्रि में पवित्र होकर, पवित्र, स्थान में एकान्त में कम्बल के आसान पर बैठकर धूप और दीप जगावें । फिर आम के पट्टे पर गुलाल (लाल) बिछा देते हैं और अनार की कलम से गुलाल के ऊपर निम्न मंत्र के लिखते हैं । उसके बाद उसे हाथ की तलहथी से मिटाकर मस्तक से लगा लेते हैं । इस प्रकार 108 बार लिखना है कि मिटाकर मस्तक से लगाना है । फिर दूसरी रात्रि में यही नियम करना है और लगातार 21 दिन तक करते रहना है । 21 वें रात्री में मंत्र 107 बार ही लिखना और मिटाना है । 108 वां मंत्र पट्टे पर लिखकर, उसके ऊपर–

11 ऊँ कर्णपिशाचिनी नमः 11 मंत्र से जल, अक्षत, फूल, मिठाई (लड्डु) धूप दीप के द्वारा पूजन करना है । पूजने के बाद पट्टे को उठाकर सिरहानी के नीचे रखकर सो जाएं । सोने से पूर्व अपना प्रश्न पट्टे को सुना दें फिर सिरहानी नीचे रखें तो आपके मुंहमांगे प्रश्नों का उत्तर कर्णपिशाचिनी जी स्वप्न में आकर बताएंगी और आपकी समस्या का समाधान मिल जाएगा ।

कर्णपिशाचिनी सिद्धि मंत्र

"ऊँ नमः कर्णपिशाचिनी मंत्र कारिणि प्रवेशे
अतीतानागत वर्तमानानि सत्यं कथय में स्वाह ॥"

3. एक और विचित्र व दुर्लभ प्रयोग प्रस्तुत है–

शेह [शाही चिड़िया के] के दो कांटे मँगाये! जंगली सूअर का एक दाँत ले । इनके ऊपर आगे कहा गया मंत्र एक लाख बत्तीस हज़ार बार जपलें । यह जप 41 दिन में पूर्ण हो जाना चाहिए । जप रात्रि के समय पवित्र स्थान में पवित्र होकर ही करें और शनिवार को प्रारम्भ करें । आसन पर बैठकर शाही कॉटा और सूअर के दाँत के आगे में एक तांबे के प्लेट में रख लें, धूप और दीप जगावें । मंत्र पढ़कर प्लेट में फूंक मारे । 41 दिन में सिद्धि मिल जाएगी ।

जब प्रयोग करना है तो दोनों वस्तु अर्थात शाही कांटा एवं सूअर दांत को प्लेट से उठाकर 11 बार मंत्र द्वारा अभिमंत्रित कर अपना प्रश्न सुना दें, फिर उसे कान से लगावें, टोलिफोन की तरह आपके प्रश्नों का उत्तर मिलेगा ।

मंत्र –

ऊँ ह्वीं श्रीं क्लीं नृं ठं ठं नमो देवपुत्री स्वर्ग निवासिनी, सर्वनर नारी मुख वार्तालि वार्ता कथय सप्त समुद्रान्दर्शय दर्शय ऊँ ह्वीं ञींक्लीं नीं ठं ठं हूँ–पट् स्वाहा ॥

स्वप्न में प्रश्नोत्तर बताने वाली "मातङ्गिनी सिद्धि"

"महामाया मातङ्गी सिद्धि" स्वयं सिद्ध एक अद्‌भुत चमत्कारी मंत्र है । यह शीघ्र प्रभावी शक्ति है । जिनका मंत्र इस प्रकार है–

ॐ नमः स्वप्न मातङ्गिनी सत्य भाषणी स्वप्न दर्शय दर्शय स्वाहा ॥

सिद्धि विधि :–

मंगलावार के दिन निराहार व्रत करें । रात्रि को उपरोक्त मंत्र धूप-दीप जलाकर 108 बार जप करें, फिर मीठा भोजन करके शुद्ध बिस्तर पर सो जाएं । यह क्रिया मंगलवार से लेकर ग्यारह दिन तक करते रहें । तत्पश्चात् प्रश्नोत्तर पाने के लिए किसी भी रात्री के 108 बार जप करके सो जाएं, भगवती मातङ्गि स्वप्न में आकर आपके प्रश्नों का उत्तर दे जाएंगी । यह मंत्र सिद्ध करने वाला यदि किसी को निम्न यंत्र बनाकर दे देवे तो यंत्र के द्वारा यंत्र प्राप्त कर्त्ता अपने प्रश्नों के उत्तर पाने में पूर्ण समर्थ हो जाता है । यंत्र प्रयोग विधि यंत्र के साथ ही मेरे कार्याल्य से भेज दी जाती है पत्राचार करें ।

मातिङ्गि यंत्र–

यंत्र सिद्धि विधि :–

श्मशान राख की स्याही से शनिवार के दिन उल्लू के पंख से बारह बजे रात्रि में कागज पर इस यंत्र को लिखें । तत्पश्चात् पूजन सामग्री से यंत्र के ऊपर मातङ्गि देवी का षोड़शोपचार पूजन करें । यंत्र सिद्ध हो जायगा ।

स्वप्न में उत्तर बताने वाला "वाराही देवी सिद्धि मंत्र"

मंत्र :–

ॐ ह्रीं नमों वाराही अघोरे
स्वप्न दर्शय ठः ढः स्वाहा ।

उपरोक्त मंत्र का शनिवार की रात्री में ही जप प्रारम्भ करे और चारपाई पर बैठे-बैठे ही ग्यारह सौ बार जप करे तो ग्यारह दिनों के भीतर ही साधक को स्वप्न में उत्तर मिलने लगते हैं । परन्तु जप ॥ रात्रि लगातार करते रहना है और स्वानादि से पवित्र हो पवित्र बिस्तर पे करना है ।

स्वप्न में प्रश्नोत्तर पाने वाला योगिनी सिद्धि मंत्र

समाजोद्धार हेतु एक और तांत्रिक प्रयोग उजागर कर रहा हूं–

सर्व प्रथम गेहूँ का आटा सवा सेर लें उसमें सवा पाव गाय का घी और सवा पाव चीनी मिलाकर भून लें । यह क्रिया शुक्रवार की रात्रि को कर लें या

शनीवार के प्रातः को करें । सामग्री लेकर शनिवार वाले दिन बन प्रान्त में चले जाये और चीटियों के बिलों पर आगे कहा गया मंत्र बोलते हुए यह सामग्री थोड़ी थोड़ी डालते जाये । मंत्र इस प्रकार है–

जोजन गन्धा जोगिनी ।
ऋद्ध-सिद्ध में भरपूर ॥
मैं आया तोय जायणे ।
करुजो कारज-जरूर ॥

यह क्रिया वन में घूमते हुए करें और इतना घूमें की थक जायें । जब सारी सामग्री समाप्त हो जाये और खूब थक लें तो वहीं किसी वृक्ष के नीचे सो जायें । आपके नींद आने पर वहां पर एक स्त्री साक्षात होगी और उनसे आप अपने प्रश्नों के उत्तर पा लेंगे ।

स्वप्न में लॉटरी का अंक प्राप्त करने हेतु इस्लामी मंत्र

किसी वीराने में कुआं हो तो उसके किनारे पर रात्रि के समय असली लोहबान महकाकर [जलाकर] आगे दिया गया मन्त्र 108 बार उल्टी माला पर जप करें । यह क्रिया लगातार 21 दिन करें । बाइसवें दिन 108 बार मंत्र उच्चारण कर पवित्र अवस्था में पवित्र बिस्तर पर रात्रि में सो जाएं । नींद में स्वप्न के द्वारा लॉटरी का अंक प्राप्त हो जायेगा ।

मंत्र इस प्रकार है–

या खवाजा खिज्र मैं तेरा इलियास ।
लिल्लाम का दिल चित्त मेरे पास ।

उपरोक्त मंत्र सिद्ध करने वाला यदि इस मंत्र को लिखकर, सिद्ध मंत्र से अभिमंत्रित कर किसी को दे देगा तो रात्रि में सिरहानी के नीचे रखने पर स्वप्न में उसे भी लॉटरी का अंक प्राप्त हो जायेगा । इस चमत्कारिक यंत्र से मेरे द्वारा सैकड़ों लोग लाभन्वित हो रहे हैं, परन्तु इस यंत्र का प्रयोग पाँच बार ही कर सकते हैं । इसके बाद यंत्र निष्क्रिय हो जायेगा ।

स्वप्न में प्रश्नोत्तर प्रदान करने वाला मणिभद्र मंत्र

एक और प्रयोग प्रस्तुत है–

वीरवार की अर्द्ध रात्रि में सरसों के तेल का एक दीपक प्रज्जवलित करें । एक फूटी कौड़ी दीपक में डाल दें । इसके पश्चात् आगे कहा गया मंत्र 1100 सौ बार जपे । यह कार्य करके एक लाल कनेर का पुष्प लें । इन पुष्पों को, मंत्र से 108 बार पढ़कर अभिमंत्रित कर लें । तदुपरान्त एक ताम्बे की ड़िब्बी में यह पुष्प भरकर तकिये के नीचे रखकर सो जायें । भगवान मणिभद्र स्वप्न में

आपके प्रश्नों का उत्तर प्रदान कर देंगे, परन्तु सिरहानी में ड़िब्बी रखने के पूर्व अपना प्रश्न ड़िब्बी को सुना दें ।

मंत्र इस प्रकार है–

ॐ नमो मणि भद्राय चेटकाय
सर्व कार्य सिद्धये मम स्वप्न
दर्शनानि कुरु-कुरु स्वाहा ॥

स्वप्न में प्रश्नोत्तर प्रदान करने वाला श्री हनुमान मंत्र

एक फुट का लाल चन्दन का टुकड़ा लेकर उसके ऊपर हनुमान जी की प्रतिमा खुदवाये । इस प्रतिमा में हनुमान जी की प्राण-प्रतिष्ठा षोड़शोपचार पूजन ब्रह्मण द्वारा करावें और यह कार्य मंगलवार के । ब्राह्मण के अभाव में सूपाड़ी पर लाल धागा लपेटकर प्रतिमा के पास रख दें, फिर उनके ऊपर बारी-बारी से क्रमशः गंगाजल, अक्षत [अखाचावल] फूल बेलपत्र एवं तुलसी पत्र चन्दन आदि श्रद्धा पूर्वक चढ़ावें, सिन्दूर चढ़ावें और प्रसाद के रूप में वहां पर गुड़ या चूरमा रखें । यह प्रसाद सारा दिन प्रतिमा के समक्ष रखा रहे ।

रात्रि के समय प्रतिमा के समक्ष शुद्ध घृत का दीपक और अगरबत्ती जलाकर चन्दन की माला पर आगे लिखा मंत्र ग्यारह सौ बार जपें । साधना काल में पवित्र व स्वच्छ रहें तथा साधना पवित्र स्थान पर ही करें । लाल वस्त्र धारण करें तभी मंत्र जप करें ।

मंत्र इस प्रकार है–

ॐ नमो हनुमन्ताय
आवेशय आवेशय स्वाहा ॥

अगले दिन प्रसाद उठाकर फिर नवीन प्रसाद चढ़ावें । यदि आपकी जन्म कुण्डली में छठा भाव और पाँचवां भाव खाली हो तो पुराना प्रसाद रोज ही पृथ्वी में दबा दें । यदि भाव में ग्रह या ग्रहों का प्रभाव हो तो यह प्रसाद किसी भिखारी को दान करें । इस प्रकार की विधि 21 दिनों तक लगातार ब्रह्मचर्य अवस्था में करते रहें तो 21वीं रात्रि में पूजन स्थल पे ही साक्षात हनुमान जी आपको वर प्रदान करने आयेगे । यदि आपकी भावना में कमी होगी तो भी आपके प्रश्नों का उत्तर स्वप्न में अवश्य बता देंगे । इस विधि के द्वारा कई साधकों ने श्री हनुमान जी के साक्षात दर्शन पाए हैं ।

भयानक बुरे स्वप्न नाशक शाबर मंत्र

ऐसा देखा गया है कि अनेकों लोग नींद की अवस्था में भयानक-भयानक

सपना देखते हैं, जिसके परिणाम स्वरुप पत्थर दिल इन्सान भी डर जाता है और उसकी नींद हराम हो जाती है ।

इससे बचने के लिए रात को सोए अवस्था में सीने पर हाथ नहीं रखना चाहिए । सोने से पूर्व हाथ-पाँव अच्छी तरह से धोकर सोना चाहिए । बिस्तर पे भोजन नहीं करना चाहिए । यदि ऐसी क्रिया करने के बावजूद भी दुखद स्वप्न यदि व्यक्ति को बार-बार आते ही रहे तो उसे रोकने के लिए निम्नलिखित शाबर मंत्र तीन बार बोलकर बांए घुटने पर तीन बार हाथ मारकर सो जाएँ तो भयानक स्वप्न आना बन्द हो जायेगा । मंत्र इस प्रकार है-

शिव की कूंची बजर का ताला ईदेहि का बजरंग रखवाला शिव गोरख शिवगोरख शिव गोरख ॥

इससे पूर्व कि मैं इस विषय को आगे बढ़ाऊँ आप समझ लें कि यह सभी प्रयोग श्रद्धा, विश्वास, एकाग्रता और पवित्रता से सम्पन्न होते हैं । इस पुस्तक से पूर्व मैंने ''यंत्र मंत्र तंत्र द्वारा उपाय'' नामक पुस्तक ''अमित पाकेट बुक्स जालंधर'' द्वारा प्रकाशित करवाए हैं, जो पुस्तक हमारी परम गोपनीय दुर्लभ प्रयोग द्वारा प्रस्तुत हुआ है और सिद्धि पराविज्ञान की दुर्लभ ज्ञानगंगा प्रदान की है । इसमें नहाने वाला अनेकों साधकों ने चमत्कारिक शाक्तियों को प्राप्त किया है तो कुछ साधक इसका वेग संभाल न सकने के कारण बहाव में बह गये हैं । अतः किसी भी तांत्रिक प्रयोग करने के पूर्व तंत्र ज्ञान गंगा में तैरना सीखिए और सिद्ध गुरु की आज्ञा लिए बिना, उनकी छत्रछाया के बिना कोई भी दुर्लभ तांत्रिक प्रयोग करने का दु:साहस मत कीजिए अन्यथा आप प्राण भी गँवा सकते हैं । विशेष रूप से लालच के प्रभाव से, उत्तेजना के प्रभाव से, जिज्ञासा के प्रभाव से, परीक्षा के प्रभाव से यह प्रयोग असफल रहेंगे, अतः प्रयोग आवश्यक्तानुसार श्रद्धा पूर्वक ही करे तभी सफलता के पात्र बन सकेंगे !

अब मंत्र-यंत्र विषय का समापन करते हैं और यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि यंत्र-मंत्र खण्ड में छपे-माता स्वप्नेश्वरी साधना, स्वप्न मातिङ्गि सिद्धि एवं कर्णापिशाचिनी सिद्धि मेरा सफल अभूतपूर्व प्रयोग है, इसमें अंकित यंत्रों के द्वारा अनेकों लोग सफलता हासिल कर रहे हैं, अतः आप भी अपने परिवार की समस्याओं के समाधान हेतु समाजोद्धार हेतु, दीन दुखियों के उद्धार हेतु सिद्धि की ओर अग्रसर हों ताकि विशाल संसार के प्राणियों का उद्धार हो सकें ।

स्वप्नेश्वरी सिद्धि और सफलताएँ

''स्वप्नेश्वरी सिद्धि'' से आप अनेकानेक बातों की जानकारी प्राप्त कर

सकते हैं, जैसे–चुनाव में विजय प्राप्त करेंगे या नहीं, मंत्री पद की प्राप्ति होगी या नहीं, नौकरी मिलेगी या नहीं, पदोन्नति होगा या नहीं, प्रशासनिक पद पर चयन या किसी भी परीक्षा में पास होंगे या नहीं, जिससे प्रेम या विवाह करना चाहते हैं उसमें सफलता मिलेगी या नहीं मुकदमें में जीत होगी या नहीं, पुत्र होगा या पुत्री- अगर होगा तो उसका भविष्य कैसा होगा, विद्याओं में सफलता प्राप्त करेंगे या नहीं, हमारी आयु कितनी रह गई, कौन सा व्यापार करें जो अत्यन्त धन की प्राप्ति हो, विदेश जा सकेंगे या नहीं अगर जाएंगे तो कब तक जाएंगे। जाने के मार्ग का बाधा कैसे मिटेगा, जिस कार्य में धन खर्च कर रहे हैं उसमें मुनाफा और यश मिलेगा कि नहीं, जिससे मित्रता या प्यार किए हैं वो निभायेगा या नहीं, आने वाले चुनाव में किस पार्टी की सरकार बनेगी, जो मंत्र साधना कर रहे हैं उसमें सिद्धि प्राप्त होगा या नहीं, हमारी दरिद्रता कब और कैसे दूर होगी, हमारे पुत्र और पुत्रियों का विवाह कब और कहां होगा, मन में जो कामना किए हैं वह कब और कैसे पूर्ण होगा, अमुक व्यक्ति का रोग कैसे निवारण होगा, अमुक व्यक्ति की कामना कैसे पूर्ण करें, समाज में, देश में हमारी प्रतिष्ठा कैसे बढ़ेगी, ग्रहों से छुटकारा कैसे पाएंगे आदि अनेकानेक प्रश्नों का सही निदान आप स्वप्नेश्वरी सिद्धि से प्राप्त कर अपना जीवन सफल बना सकते हैं।

मानव जीवन बार-बार नहीं मिलता। न जाने अनगिनत कितने योनियों को पार कर जीव मानव योनि में आता है और इस योनि में धर्म कार्य करके, अच्छे कर्मों पे चलके, दीन-दुखियों की सेवा करके व्यक्ति ''मौक्ष'' को पाता है। अतः मोक्षद्वार को खोलने हेतु सत्य सिद्धि मार्ग की चाबी प्राप्त करें और अनेकानेक योनियों में भटकना छोड़कर मोक्ष प्राप्त करें। यही मेरी कामना है, यही हमारी अभिलाषा है और इसी उद्देश्य हेतु इस परमपवित्र पुस्तक का निर्माण कर रहा हूं।

स्वप्न फलों से रोग निर्णय

अब मैं आपको ''तांत्रिका दुनियाँ'' से दूर दार्शनिक एवं वैज्ञानिक जगत में प्रवेश कराता हूँ। जहाँ के स्वप्न जगत में सत्य प्रश्नोत्तर तो प्राप्त नहीं होते। हाँ, देखे गये स्वप्नों का क्या प्रतिफल होगा, यह जरूर जान सकेंगे और इन स्वप्नफलों का निर्णय संसार के अनेकों दार्शनिकों विद्वानों, ज्योतिषाचार्यों वेदाचार्यों और पूर्वकाल के ऋषियों महार्षियों ने सत्य प्रमाणित किया है।

स्वप्न विषय पर विश्व के प्रसिद्ध दार्शनिक ''फ्रायड'' की बात की जाये तो विद्याधिराज ''जुंग'' की बात भी कहनी होगी। यूं तो अनेकों विद्वानों ने इस

विषय पर शोध किया है। "एडलर" मानता है कि स्वप्न में मनुष्य की आत्मा प्रतिष्ठापन की इच्छा की संतुष्टि होती है। "जुंग" मानता है कि स्वप्न वर्तमान कठिनाईयों के फलस्वरूप होते हैं। इन समस्त विद्वानों ने व्यक्ति को जानने के लिए स्वप्न समीक्षा का सहारा लिया है।

स्वप्न और उसके फल व कारण जानने वाला व्यक्ति यर्थाय में समाज को बहुत लाभ प्रदान करता है। स्वप्नों के द्वारा रोग परीक्षण इतना शीघ्र होता है कि अन्य प्रकार से ऐसा सम्भव नहीं है।

हमारे भारत में वैद्यक प्रथा अत्याधिक प्राचीन है और इसमें सबसे बड़ा योगदान नब्ज से रोग परीक्षण का है। इस कार्य में बड़ी ही तल्लीनता व सोच समझ की आवश्यकता है। हम यदि रोगी से उसके स्वप्न पूछ लें तो रोग निर्धारण शीघ्र हो जाता है। क्योंकि जिस व्यक्ति में वायु प्रकोप हो रहा होगा वह आँधी देखता है, अंधेरा देखता है, श्मशान, राख, कोयला, कोयल, हवा, हवा में उड़ना, उड़ते हुए परिन्दे आदि के स्वप्न अधिक देखेगा।

जिस व्यक्ति में पित्त प्रकोप हो रहा हो तो वह प्रकाश, प्रकाशमान स्थितियां चमकते, दमकते रत्नादि, स्वर्ण और पीतल देखता है।

इसी प्रकार जिन लोगों को कफ का प्रकोप होता है वह लोग पानी, सफेद वस्त्र, सफेद इमारत, नदी, समुद्र, सरोवर, तैरना, नहाना आदि प्रकार के स्वप्न देखते हैं।

हमारे आयुर्वेद में रोगों के उत्पत्ति के तीन ही कारण माने गये हैं जिन्हें वातपित्त व कफ कहते हैं। वैद्य नाड़ी पर तीन अंगुली रखकर उसकी चाल से यह दोष देखते हैं, जबकि स्वप्न समीक्षा से यह निर्णय अतिशीघ्र हो जाता है।

रोगों के दोष प्रायः स्वतंत्र अवस्था में एक ही प्रकार के नहीं पाये जाते बल्कि बात-पित्त, बात-कफ, पित्त-कफ के संयोग से रोग लक्षण मिले जुले दिखाई देते हैं। इस स्थिति की अभिव्यक्ति भी स्वप्न करते हैं।

"बात-पित्त वाला रोगी" आँधी देखेगा, पीला आकाश देखेगा और उड़ते हुए पीले फूल, पीली इमारते देखता है। उसके स्वप्नों में चमक भी रहती है। "बात-कफ वाला रोगी"-हवा में उड़ेगा या नीचे जलाशय देखेगा। वह तैरेगा भी उड़ेगा भी। नहाते हुए आंधी आएगी। सफेद चादर पर या सफेद हाथी पर बैठकर उड़ सकता है। इस प्रकार "पित्त-कफ वाला रोगी" नहाकर तिलक लगाएगा, माला पहनेगा, दीपक जलाएगा, घंटे बजाएगा, पूजा पाठ करेगा। भारी स्तन वाला देखेगा, स्तन मर्दन या मैथुन करने आदि का स्वप्न देखेगा।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि स्वप्नों के द्वारा रोग निर्णय किया जा सकता है जो कि समाज के प्रति एक सराहनीय कार्य करेगा। केवल रोग ही

नहीं बल्कि किसी भी व्यक्ति की मनोवृत्ति, विचार आदि को उसके स्वप्न के द्वारा जाना जा सकता है । समाज को और देश को ध्यान देने की जरूरत है ताकि मानव का कल्याण हो सके ।

राज्य-पद दायक स्वप्न

1. यदि कोई भाग्यशाली व्यक्ति स्वप्न में ऐरावत [हाथी] अश्व [घोड़ा] या सफेद रंग के बैलों से खींचे जा रहे सुन्दर रथ पर सवारी करता है तो वह भविष्य में राज्य का मंत्री अथवा कोई बड़ा पद प्राप्त करता है ।
2. यदि कोई स्वप्न में किसी का सिर काट देता है अथवा अपना सिर ही किसी को काटते हुए देखता है तो वह भाग्यशाली व्यक्ति राज्य का उच्च प्रशासनिक अधिकारी नियुक्त होता है ।
3. मनमोहक सुगन्धित फूलों की माला देखना, पहनना या स्वतः गले में आकर गिरी पुष्पमाला के ख्वाब में धारण करने से भी राज्य का सर्वश्रेष्ठ पद प्राप्त होता है ।
4. यदि ख्वाब में चमकती तलवार, छुरी शंख, चक्र, गदा या पट्टिश देखे तो राजपद का अधिकारी होता है ।
5. वह भी उच्च पदाधिकारी बनता है जो स्वप्न में स्वस्तिक चिन्ह, नई सुकोमल दूबः भ्रमर, या मागल्य सूचक वस्तुओं को देखता है, वह भी राज्य के ऊँचे पद पर पदासीन होता है ।
6. यदि कोई इन्सान ख्वाब में मिट्टी के बर्तनों में गायों या पशुओं का मांस पकता है, वह राज्यधिकारी होता है ।
7. यदि स्वप्न में श्वेत हाथी, श्वेत घोड़ा, देखकर उसपर चढ़ता है, वह भी उच्च पदस्थ पदाधिकारी बनता है ।
8. यगि कोई भाग्यशाली इन्सान अपनी जीभ ख्वाब में कटी हुई देखता है तो वह मंत्री से प्रधानमंत्री, प्रधानमंत्री से राष्टपति अथवा सर्वोच्च वतन पद पे आसीन होता है ।
9. ख्वाब में जिस व्यक्ति को देखते-देखते अपने सिर पर घर जलता हुआ दिखाई देता है, उसे राजपद प्राप्त होता है ।
10. यदि कोई भाग्यशाली व्यक्ति गाय, बैल, हाथी या पक्षी पर सवार होकर अथवा किसी महल की छत से या ऊँचे पर्वत शिखर पे बैठकर समुद्र देखने का आनन्द प्राप्त करता है, वह भी राज्याधिकारी होता है ।
11. यदि ख्वाब में अपने घर में कमल के पुष्प खिले हुए दिखें और जो उनको अंजली में भर-भर कर जमा करते हुए दिखे वह अपने देश में श्रेष्ठ पद प्राप्त करता है ।

12. वह व्यक्ति जो निश्चय ही सर्वोच्य पद पर आसीन होता जो ख्वाब में कानों में कुण्डल पहने, मांथे पर मुकुट और गले में मोतियों का हार पहनता है ।
13. जो व्यक्ति ख्वाब में गाँव का प्रधान, सरपंच या मंत्रिपरिषद में अपना स्थान ग्रहण करता है ।
14. यदि ख्वाब में श्वेत बैल या बैल जुते गाड़ी अथवा रथ पर सवार होकर उत्तर या पूरब की ओर यात्रा करता है, वह सुनिश्चित राज्यधिकारी होता है ।
15. यदि स्वप्न में मूत्र अथवा विष्टा से सना शरीर होकर श्मशान में खड़ा होकर मूत्रपान करता है या विष्टा भक्षण करता है और उससे घृणा नहीं करता तो वह भी राज्य का उच्च पदासीन पदाधिकारी बनता है ।
16. ख्वाब में पहले राजा, फिर चोर, तत्पश्चात् फिर राजा बन जाय तो उच्चाधिकारी होता है ।
17. ख्वाब में अश्व सवार होकर जल अथवा दूध पीने वाला व्यक्ति भी राजपद प्राप्त करता है ।
18. जो स्वप्न में शत्रुओं का पराजय या स्वंय विजय पताका लहराता हुआ दिखाई पड़ता है, वह व्यक्ति भी उच्च पदपे आसीन होता है ।
19. जो व्यक्ति ख्वाब में कमल के पत्ते पर बैठ कर खीर भोजन करता है, वह मंत्रिपरिषद का सदस्य होता है ।
20. जो व्यक्ति श्व्वाब में वमन किया हुआ गन्दगी खाता है और उससे तनिक भी घृणा नहीं करता, वह भी मंत्री पद पर तिलक कराता है ।
21. यदि किसी व्यक्ति ने अपने या अन्य किसी के जीभ के ऊपर कुछ लिखता हुआ स्वप्न देखता है, वह उच्च विद्या प्राप्त कर राज्या धिकारी बनता है ।

धन-प्रदायक स्वप्न

1. स्वप्न में सर्प देखना मृत्यु कारक होता है । परन्तु यदि अपने को सर्प द्वारा डंक मारता हुआ दिखे तो शीघ्र धन लाभ होता है ।
2. स्वप्न में लहराता हुआ सागर दिखाई पड़े तो लक्ष्मी की प्राप्ति होती है ।
3. यदि स्वप्न में घनघोर वर्षा होती हुई दिखाई पड़े तो गृह कलह, मित्रों से वियोग, परन्तु व्यापार में सफलता प्राप्त कर वह व्यक्ति धनवान हो जाता है ।
4. अपने शरीर से निकलते हुए खून को देखने से धन-धान्य की वृद्धि, दूसरे के शरीर से बहता हुआ रूधिर देखने से कार्य सिद्धि एक रक्तपान से अर्थ लाभ होता है ।

5. स्वप्न में अपने तन में मल-मूत्र लेपन करता दिखाई पड़े तों लक्ष्मीवान होता है ।
6. ख्वाब में मछली देखना बहुत ही शुभकारी माना गया है किसी मत्स्य विक्रेता के यहां मछली देखने से अर्थलाभ किसी को मछली ले जाते हुए देखने से कार्य में सफलता प्राप्त होती है ।
7. श्वेत वर्ण के बैल का दर्शन करना अत्यन्त शुभकारी होता है । बैल का पूजन करना दिखाई पड़े तो । भूगर्भ से धन की उपलब्धि होती है । बैल के साथ क्रीड़ा करते हुए देखने से पांच दिन के अन्दर धन लाभ होता है । बैल पर आरोहण करता हुआ दिखे तो अति शीघ्र धन का आगमन होता है ।
8. स्वप्न में उड़ते हुए पक्षियों को देखने से धन लाभ होता है ।
9. ख्वाब में कहीं से धन मिलता हुआ देखे तो विपुल अर्थलाभ होता है ।
10. तालाब देखने से प्रचुर अर्थलाभ होता है ।
11. स्वप्न में पताका आदि देखने से शीघ्र ही अर्थलाभ या सन्तान लाभ होता है ।
12. अपने आप को जल द्वारा अभिषिक्त होता देखने से भूमि-धन की उपलब्धि होती है ।
13. स्वप्न में पूर्व दिशा के गमन से धनलाभ होता है ।
14. ख्वाब में तलवार चलाता या उसके द्वारा युद्ध करता हुआ देखे तों अपार धनराशि मिलती है ।
15. स्वप्न में किसी पर्वत, मन्दिर या महल पर चढ़ता हुआ देखे तो तुरन्त धन, कहीं न कहीं से अवश्य प्राप्त होता है ।
16. स्वप्न में अपना लिंग कटा हुआ देखने से लक्ष्मी की प्राप्ति और यदि स्त्री अपनी योनि का छेदन देखती है तो किसी पुरुष के माध्यम से लक्ष्मीवान होने का शुभ अवसर प्राप्त होता है ।
17. यदि कोई व्यक्ति ख्वाब में फल या फूल खाता हुआ दिखता है तो उसके घर में शीघ्र ही लक्ष्मी प्रवेश करती है ।
18. यदि व्यक्ति स्वप्न में किसी की हत्या कर देता है अथवा किसी को जंजीर से बांध देता है, अथवा किसी का निंदा करते दिखाई पड़ता है उसे धन लाभ होता है ।
19. यदि नदी में स्नान करता हुआ स्वप्न में स्वयं दिखाई पड़े तो धनराज हो जाता है ।

20. ख्वाब में जो व्यक्ति मस्त हाथी पर चढ़ा दिखे और तुरन्त जग जाये तथा डरे नहीं तो समझो उसके घर लक्ष्मी का आगमन हो गया ।
21. जो व्यक्ति ख्वाब में सारे बाल झड़े हुए अथवा स्वयं के केश विहीन देखता है, वह अतुल धनराशि का स्वामी होता है ।
22. ख्वाब में नागर बेल के पान या गन्ना खाने वाले व्यक्ति को धनवान बनने में देर नहीं लगता ।
23. गुलाब, वकुल, केवड़ा, जूही या बेला पुष्प ख्वाब में दर्शन पाने से व्यक्ति परम धनशाली हो जाता है ।
24. स्वप्न में इलायची, लौंग, कपूर, जायफल या सुगन्धित पदार्थ देखने या खाने से शीघ्र अर्थलाभ होता है ।
25. स्वप्न में यदि अपने आपको गुदामार्ग से जल पीता हुआ देखता है तो शीघ्र धनवान होता है ।
26. अशोक, चम्पा, चन्दन, गुलाबास का पेड़ और दाख, सुपारी, नारियल और अखरोट स्वप्न में देखने से धन लाभ होता है ।
27. मित्र को विनाश होते, सरोवर व समुद्र को जल से भरा हुआ स्वप्न में देखने से अकारण रास्ते चलते ही धन प्राप्त हो जाता है अर्थात बिना मेहनत का ही धनशाली बन जाता है ।
28. दाल, चावल या मूंग के दाने या ढेर अथवा दूकान में खरीदते हुए ख्वाब में स्वयं के देखना, लक्ष्मीवान बनने का शुभ लक्षण है ।
29. मोती, मूंगा, कौड़ी और बेल को ख्वाब में देखने पर शीघ्र ही घर में भर जाती है ।
30. कान, सिर वे गले का आभूषण स्वप्न में प्राप्त करना या पहने वाला धनवान हो जाता है ।
31. जो भाग्यशाली व्यक्ति ख्वाब में हाथ का कड़ा मस्तक पर स्वर्ण मुकुट धारण पाता है या देखता है तो वह अरबपति इन्सान हो जाता है ।
32. जो इन्सान ख्वाब में चतुरंगिनी सेना या अपने आपको मृत देखता है, उसके घर से लक्ष्मी कभी नाराज नहीं होती ।
33. जो इन्सान ख्वाब में मिट्टी भक्षण करता दिखाई पड़े या ख्वाब में फूल का निर्माण करे तो वह व्यक्ति कुछ ही दिनों में लखपति हो जाता है ।
34. जो व्यक्ति ख्वाब में धुँआ सहित अग्नि को पैरों से मसलता है अथवा अग्नि के अंगारे का भक्षण करता है वह करोड़पति होता है ।
35. स्वप्न में अपने आपको जो धुँआ पीता हुआ देखता है वह लक्ष्मीवान हो जाता है ।

36. जो व्यक्ति ख्वाब में अपने हाथ में लहराता हुआ ध्वजा देखता या नाभि में बेल या पेड़ को उगा हुआ देखता है, वह भविष्य में निश्चित ही अरबपति हो जाता है ।
37. ख्वाब में नदी या समुद्र में तैरना अथवा पुएं पकवान बनाते हुए स्वयं को देखने से भविष्य में वह व्यक्ति खरबपति हो जाता है ।
38. यदि ख्वाब में पर कोटे, दरबाजे या सफेद छत्र देखता है तो वह धना-धीश अवश्य हो जाता है ।
39. यदि ख्वाब में इन्द्र के धनुष, सूर्य के रथ या भगवान शिव का मंदिर देखता है तो वह इन्सान के घर में लक्ष्मी कभी भी नाराज नहीं होती ।
40. यदि ख्वाब में दूध के वृक्ष पर अपने आपको चढ़ा हुआ देखे तो धन का अपार भंडार उसे प्राप्त हो जाता है ।
41. जो इन्सान अन्न का ढेर या फले हुए वृक्ष को स्वप्न में देखे और देखते ही उसकी नींद तुरन्त खुल जाय तो वह अति धनवान हो जाता है ।
42. जो इन्सान ख्वाब में ऋृतुकाल का फल खाता है अथवा फूलों का भक्षण करता है वह भिखारी भी हो तो अवश्य ही भविष्य में लाखों के जायदाद का स्वामी हो जाता है ।
43. जो व्यक्ति अपने पहने हुए वस्त्रों को, पलंग को, महल, अर्थात अपने घर को आग की ज्वाला में भस्म होते देखता है उसे हर तरफ से लक्ष्मी प्राप्त होती है ।
44. यदि स्वप्न में अलंकृत सुवेषधारिणी सुन्दर नारी को देखता है, समझो स्वयं लक्ष्मी उनके गृह में आ चुकी है ।
45. जिसे स्वप्न में जौंक दिखाई पड़े, बर्फ से घिरा हुआ पर्वत शिखर दिखाई दे, सम्पूर्ण बदन अस्त्र-शस्त्रों से छलनी दिखाई दे, घावों में कीड़े दिखाई दे, माटी का बर्तन या मूरत दिखाई दे, भरा हुआ कलश दिखाई दे या प्राप्त हो अथवा मदिरा का बोतल दिखाई पड़े या प्राप्त हो । उसे समझना चाहिए कि निकट भविष्य में ही वह अति धनवान होने वाला है ।
46. यदि स्वप्न में बरसात दिखाई दे या स्वयं को कुंए पर नहाता हुआ देखे तो ऐसे ख्वाब लक्ष्मी गृह निवास का संकेत है ।
47. स्वप्न में पशु पक्षियों को देखना, गाय सूअर, बड़े-बड़े विषधर सर्प, बिच्छू या मधुमक्खियों को देखना धन बढ़ने का शुभ संकेत हैं ।
48. ख्वाब में श्वेत आभूषण, हीरे, श्वेत, चन्दन सफेद वस्त्र, सफेद फूलों की माला, सूर्य चन्द्र का श्वेत प्रकाश, कपूर, या श्वेत संगमरमर पत्थर देखे तो वह व्यक्ति को धन कहीं से उपहार के रूप में प्राप्त होता है ।

49. यदि कोई व्यक्ति ख्वाब में पान का बीड़ा खिरनी, अनार, केला, नाग-केशर, मोलाग्री, मालती का फूल तिल, सिरस के फूल आदि देखे तो उसके सुख समृद्धि में लगातार वृद्धि होती चली जाती है ।

50. प्रियजन से किसी समारोह में सम्मिलत होने के लिए निमंत्रण पत्र स्वप्न में प्राप्त हो उच्च कुलीन व्यक्ति से कन्यादान प्राप्त हो या पितरों का दर्शन अथवा आर्शीवाद प्राप्त हो तो अपार सुख सम्पत्ति प्राप्त होने का संकेत है ।

51. ख्वाब में चाँद-सूरज का रोशनी पकड़े या सूर्योदय देखे, अथवा नगाड़े की आवाज सुने तो समझे कि जल्द ही धनवान होने वाला है ।

52. ख्वाब में काले घोड़े की सवारी करना, विमान यात्रा करना, पालकी पर बैठना या इक्के पर बैठकर जाना बिना मेहनत के लक्ष्मी प्राप्ति सूचक है ।

53. सपने में दही खाना, दही के साथ भात खाना, दूध दुहना या पीना, जौ, साठी के चावल खाना, धन का खोना और दही खरीदने जाना भविष्य में करोड़पति होने का सूचक है ।

54. ख्वाब में मल-मूत्र त्यागना देखना, वमन करना, गंदे वस्तुओं का खाना, मानव मांस खाना, कीड़े-मकोड़े खाना भी धनप्रदायक लक्षण है ।

55. सपने में रेत देखना, देवी-देवता देखना, जुड़वां बच्चे देखना, सन्दूक खोलना, कबूतर देखना भी लक्ष्मी आने का संकेत देता है ।

56. ख्वाब में पतंग उड़ाना नारंगी देखना, दिया सलाई देखना या जलाना, पार्सल प्राप्त करना, स्तन मर्दन करना, प्रसव पीड़ा देखना, पानी का पम्प देखना, अंगूठी पाना, आम देखना, बादल देखना व शराब पीना भी धन प्राप्ति का लक्षण है ।

57. सपने में प्याज देखना, युवा सुन्दर स्तन देखना, छोटा बच्चा गोद में देखना, नाखून काटना, युवा स्त्री से सम्भोग करना या किसी को करते देखना, चरण देखना भी धन प्रदायक लक्षण है ।

58. स्वप्न में चुम्बन लेना, पेड़-पौधे देखना, पेड़ पर चढ़ना, दीपक देखना, दादी को मृत देखना, दुश्मन या दुश्मनी देखना, नौकरी मिलना, माता-पिता को देखना भी धन सम्पत्ति आने का संकेत है ।

59. सपने में सितारे देखना झरनों में नहाना, चौपड़ खेलना, सारस देखना, पलंग देखना, वीणा देखना, तास देखना, तास का दहला देखना, ऊँट देखना, दुकान खरीदना दुकान खुली देखना, उजाले में चार दीवारी देखना भी धन प्राप्ति के साधन बनाता है और वह व्यक्ति भविष्य में अपार खजानों का स्वामी बन जाता है ।

60. ख्वाब में दीनार या डॉलर प्राप्त करना, रीठा खरीदना, रीठों का ढेर देखना, शैतान पर क्रोध करना, गदा, चक्र, तराजू देखना, पृथ्वी देखना, वसीयत देखना, चुकुन्दर देखना, चौंकी देखना पेशांव से धुवा उठे देखना, नवविवाहित जोड़ा देखना, बतख देखना भी भविष्य में लक्ष्मी प्राप्ति के अति शुभ लक्षण हैं ।

पुत्र प्राप्ति दायक स्वप्न

1. स्वप्न में किसी भी प्रकार का फल देखने से पुत्र सन्तान उत्पन्न होता है ।
2. स्वप्न में दर्पण देखना या पाना भी पुत्र प्राप्ति की निशानी है ।
3. जाना पहचाना छोटा लड़का गोद में देखना [स्वप्न में] भी पुत्र प्राप्ति का लक्षण है ।

विद्या बुद्धि व सम्मान दायक स्वप्न

1. स्वप्न में कनेर का फूल देखने से मान-सम्मान में वृद्धि होती है ।
2. स्वप्न में पुस्तक देखने से विद्य बुद्धि एवं सम्मान की प्राप्ति होती है ।
3. सपने में नाक लम्बा देखने से सम्मान मिलता है ।
4. स्वप्न में पढ़ाई देखने से विद्या में प्रगति एवं सम्मान में विशिष्ठता प्राप्त होता है ।
5. स्वप्न में अधिक बातें करना भी मान-प्रतिष्ठा पाने का लक्षण है ।
6. स्वप्न में ''दरबार'' देखने से उच्च स्थान की प्राप्ति होती है ।
7. सपने में प्रज्जवलित दीपक देखने से प्रसिद्धि प्राप्त होती है ।
8. स्वप्न में कलम देखने से अपार विद्या की प्राप्ति होती है ।
9. ख्वाब में पत्र देखने वाला व्यक्ति का शानशौकत बढ़ता है और मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है ।
10. स्वप्न में इत्र-फुलेल लगाना, हँसना, पत्रे, देखना सम्मान सूचक निशानी है ।
11. स्वप्न में पंचाग देखना ज्योतिषों एवं पंडित बनने का आभाश देता है ।

12. स्वप्न में गुम्बद देखना, चश्मा देखना, गुरूद्वारा जाना, बाइबिल देखना, अध्यापक या अध्यापिका देखना, शास्त्रों का पाठ करना, पक्षियों का जोड़ा देखना पताका देखना विद्या बुद्धि व मान सम्मान पाने का विशिष्ठ लक्षण माना गया है ।
13. स्वप्न में गेहूँ जो सरसों देखना या छूना अथवा प्राप्त करना विद्या में सफलता पाने की निशानी है ।
14. स्वप्न में लक्ष्मी, सरस्वती, सूर्यदेव या कुलदेवता को जल चढ़ाते हुए अपने आप को देखता है वह उत्तम विद्या व यश प्राप्त करता है ।
15. जो व्यक्ति देवताओं द्वारा प्राप्त अमृत स्वप्न में पान करता है वह विद्याओं में निपुण हो जाता है ।
16. अपने आपको धरती से ऊपर उछाल मारते सपने में देखना ज्ञान, बुद्धि एवं उन्नतिदायक शुभ सूचक है ।

सुन्दर स्त्री से प्रेम सम्बन्ध कायम होने का स्वप्न

1. जो व्यक्ति स्वप्न में बिस्तर बिछा देखता है, उसे सुन्दर स्त्री से प्रेम होने का पूर्ण आसार बन जाता है ।
2. यदि सपने में मोमबत्ती जला हुआ देखे तो समझे कि हमें किसी सुन्दर लड़की से प्यार होने वाला है ।
3. यदि सपने में नथुनी देखे तो किसी नारी से काम-सुख मिले ।
4. यदि किसी सुन्दर नारी का चित्र सपने में देखे तो सुन्दर नारी से जल्दी प्यार मिलता है ।
5. यदि स्वप्न में अपनी प्रेमिका को देखे तो उससे शीघ्र मुलाकात होती है ।
6. यदि प्रेम देखे तो शीघ्र मिलन होता है ।
7. यदि सपने में देगची अर्थात सिल्वर का तसला देखे तो पवित्र स्त्री से मित्रता हो जाती है और वह प्रेम करने लगती है ।
8. ख्वाब में तितली देखना या उड़ती हुई तितली को पकड़ना देखने से प्रेमिका का दर्शन मिलता है ।
9. यदि सपने में स्त्री का पाँव देखे तो प्यार में आनन्द मिलता है ।
10. ख्वाब में यदि कोई पाऊडर लगाता है तो समझे कि उसका प्रेम सम्बन्ध बहुत गहराई में पहुंचने वाला है ।
11. यदि स्वप्न में सांरगी बजाते हुए देखे तो वेश्या से भोग करने का अवसर प्राप्त होता है ।
12. स्वप्न में दाल चीनी देखने वाले को पत्नी से प्रेम सम्बन्ध बढ़ता है ।

13. यदि स्वप्न में कोई अपनी पत्नी का दुग्धपान करता है तो पत्नी के साथ स्नेह अधिक बढ़ता है ।
14. यदि दूसरी स्त्री का दुग्धपान करता है तो समझो शारीरिक कष्ट आने वाला है ।
15. यदि सपने में कोई घोड़ी देखता है तो गोपनीय प्रेम सम्बन्ध बढ़ता है ।
16. सपने में मुर्गी देखने से प्रेम प्रणय की स्थापना किसी सुकोमल कन्या से होता है ।
17. यदि स्वप्न में कोई मुर्गी काटता है तो यौन सम्बन्ध मनोहर स्त्री से कायम होता है ।
18. स्वप्न में पेशाब करती स्त्री को देखने से किसी नारी के साथ प्रेम होकर काम सम्बन्ध बढ़ता है ।
19. ख्वाब में नमकदानी देखने से अविवाहित लड़की से प्रेमालाप होता है ।
20. स्वप्न में किसी युवती का जीभ चूसना देखने से प्रेमिका प्राप्त होती है ।
21. किसी युवती को यदि स्वप्न में कोई चूमता है तो समझे कि उसके प्रेम सम्बन्ध में आनन्द मिलने वाला है ।
22. स्वप्न में स्तन से दूध निकलता हुआ देखना प्रेम-प्यार मिलने की निशानी है ।
23. किसी अन्य व्यक्ति को स्वप्न में क्षुधा पीड़ित देखने से सुन्दर स्त्री की प्राप्ति होती है ।
24. यदि स्वप्न में मुद्रा का निर्माण करता हुआ देखे तो प्रेमियों से मिलन होता है ।

सुन्दर पत्नी दायक स्वप्न

1. स्वप्न में जो व्यक्ति सुन्दर, रूपवती, सुडौल स्त्रियों के साथ आलिंगन, कुच मर्दन या अन्य कामुक क्रीड़ा करता है, उसे फूल के समान कोमल पत्नी मिलती है ।
2. जो व्यक्ति स्वप्न में माता, बहन, गुरू पत्नी आदि आदि से रमण करता है उसे कुलीन नारी पत्नी के रूप में प्राप्त होती है ।
3. जो ख्वाब में नीलकंठ या सारस चिड़िया को देखता है या छूता है और उसी समय जग जाता है वह परम रूपवती पत्नी पाता है ।
4. यदि ख्वाब में सुन्दर पशु या पक्षी के स्पर्श करता है तो उत्तम स्त्री प्राप्त होती है ।

5. सपने में अपने हाथ में वीणा देखे और तुरन्त जाग जाय तो सुन्दर नारी से शादी होती है ।
6. यदि ख्वाब में मक्खी, मच्छर या खटमल खाता है उसका परम पवित्र नारी से विवाह सम्बन्ध कायम होता है ।

व्यापार में सफलता पाने वाला स्वप्न

1. यदि स्वप्न में उड़ता हुआ कबूतर दिखाई पड़े तो व्यवसाय में लाभ होता है ।
2. यदि स्वप्न में कोई पार्सल प्राप्त करता है तो वह व्यापार में अवश्य सफलता प्राप्त करता है ।
3. स्वप्न में दस्तावेज देखना व्यवसायिक उन्नति का सूचक है ।
4. स्वप्न में तिजोरी देखना व्यापार में उन्नति का शुभ लक्षण है ।
5. सपने में कैंची देखने से व्यवसायिक उन्नति परम सीमा पर पहुँच जाती है ।
6. सपने में हस्ताक्षर देखने से व्यापारिक सम्बन्ध बढ़ता है ।
7. यदि ख्वाब में साईन बोर्ड देखे तो व्यापारिक सफलता मिलती है ।
8. सपने में नौकरी मिलना देखने से व्यवसाय प्रारम्भ होता है ।
9. स्वप्न में मुर्गी काटना देखने से व्यवसाय में हानि होती है ।
10. सपने में बही खाता देखने से व्यक्ति सफल व्यापारी बनता है ।
11. स्वप्न में बही-खाता किसी के देने से व्यापार समाप्त हो जाता है ।
12. स्वप्न में तराजू देखने से व्यक्ति व्यापार में प्रवेश करता है ।
13. स्वप्न में चूहा देखने से व्यापारिक उन्नति पाता है । किन्तु उसकी स्त्री धोखा दे जाती है ।
14. स्वप्न में रद्दी सामान देखने से कवाड़ के व्यवसाय में धन कमाता है ।
15. स्वप्न में तैरती बत्तख देखना व्यवसायिक उन्नति की निशानी है ।

मृत्यु दायक स्वप्न

1. यदि बीमार व्यक्ति सपने में अपने को अग्निदाह के कारण मृत्यु देखता है उसकी मृत्यु अवश्य हो जाती है ।
2. स्वप्न में काले रंग का अन्न देखना मृत्यु का सूचक माना जाता है ।
3. स्वप्न में रक्त वर्ण का उबटन लगाना देखना मरण सूचक लक्षण माना गया है ।

4. स्वप्न में उल्लू देखने से रोग भय या मृत्यु भय का सामना करना पड़ता है ।
5. स्वप्न में ऊँट देखना या उस पर सवारी करना मरण सूचक होता है ।
6. यदि स्वप्न में रोगी कपास का पेड़ देखे तो मृत्यु को अवश्य समीप समझना चाहिए ।
7. सपने में किसी का कटा हुआ धड़ देखने से समापत्ति का तो नाश होता ही है साथ ही साथ मृत्यु होने की सम्भावना भी हो जाती है ।
8. कौआ, गीध और सियार को स्वप्न में देखना या उससे घिरा हुआ देखने से मृत्यु की आशंका होती है ।
9. सपने में कुत्ता या उसको भूँकते हुए देखने से मृत्यु भय होता है ।
10. कुएँ में डूबना या गिरना देखने से रोग भय होता है एवं रोगी के लिए मृत्यु का सूचक होता है ।
11. स्वप्न में केशों का गिरना देखने से मृत्यु तुल्य कष्ट होता है ।
12. नेत्रों का नष्ट होना देखने से स्वयं की मृत्यु या परिवार के किसी अन्य व्यक्ति की मृत्यु होती है ।
13. चन्द्रमा का अस्त होना या टूटना देखने से मृत्यु होना सुनिश्चित हो जाता है ।
14. स्वप्न में प्रज्जविलत चिता देखना या चिता की सवारी करना मृत्यु की निशानी है ।
15. सपने में दाँतों का टूटकर गिर जाना मृत्यु पाने का सूचक है ।
16. स्वप्न में दाढ़ी-मूँछ आदि बनवाते हुए देखना मृत्यु कारक माना जाता है ।
17. स्वप्न में बुझता हुआ दीप देखना मृत्यु सूचक है ।
18. स्वप्न में मूर्ति खण्डित देखना, मूर्तिका गिरना या कम्पायन होना देखने से मृत्यु भय होता है ।
19. ख्वाब में नख आदि कटवाते हुए देखने से मृत्यु भय होता है ।
20. स्वप्न में पूड़ी कचौड़ी मिष्ठान आदि का भक्षण करना देखने से रोग भय एवं रोगी के देखने पर उसकी मृत्यु हो जाती है ।
21. स्वप्न में काले फूल का दर्शन पाना मृत्यु का सूचक है ।
22. यदि स्वप्न में कोई व्यक्ति अपनी माला उतारकर किसी को पहनावे तो उसकी शीघ्र ही मृत्यु हो जाती है ।
23. जो व्यक्ति ख्वाब में आकाश, शुक्र का तारा, अग्नि, ध्रुव तारा और सूर्य को देखता है वह अपनी आयु केवल 11 महीना बचा हुआ समझे ।

24. ख्वाब में यदि ताड़ बांस, खजूर या नारियल के पेड़ पर लगे कांटों द्वारा ऊपर चढ़ता है, उसकी मृत्यु शीघ्र ही हो जाती है ।
25. सपने में अगर कोई सोने या चांदी का पेशाव करता है । अथवा इसी का विष्टा करता है वह अपनी आयु केवल दस महीना बचा हुआ समझे ।
26. सपने में भूत पिशाच, या गन्धर्वों का नगर अथवा सोने का पेड़ देखे तो वह व्यक्ति का जीवन काल शेष नौ महीना बचा रहता है ।
27. सपने में मोटा आदमी पतला हो जाय या पतला आदमी मोटा हो जाय और व्यंवहार भी बदल जाये तो ऐसे व्यक्ति की आयु 8 महीने शेष रह जाती है ।
28. सपने में यदि अपनी एड़ी के ऊपर की गांठ से पैर खण्डित दिखाई दे तो वह व्यक्ति केवल सात महीने जीवित रहता है ।
29. स्वप्न में सिर पे मांस भक्षी पक्षी मंड़राता दिखाई पड़े तो वह मनुष्य की आयु छः महीने बची हुई होती है ।
30. जो व्यक्ति सपने में चाण्ड़ालों से अथवा धूलि की बरसात से नाश को प्राप्त होता है अथवा अपनी छाया किसी दूसरी तरह से देखता है वह चार महीने जीवन काल बिताने के बाद मृत्यु को प्राप्त करता है ।
31. दक्षिण दिशा में बादल रहित बिजली को चमकते देखना, उत्तर दिशा में इन्द्र धनुष देखना 60 दिन आयु बचे रहने की निशानी है ।
32. जो व्यक्ति सपने में चक्रवात बगूले देखता है या जो सपने में वायु के स्पर्श का अनुभव करता है उसका जीवन अधिक नहीं होता ।
33. सपने में जो व्यक्ति दरवाजे का गदा का अथवा जूतों का फटना देखता है उसके कुल का नाश हो जाता है ।
34. जिस व्यक्ति को सूअर पर बैठी हुई कोई स्त्री खेंचती है उस व्यक्ति के लिए वह अन्तिम रात्रि होती है अथवा वह व्यक्ति घर छोड़कर जंगल चला जाता है ।
35. सपने में जो व्यक्ति प्रेत या सर्प जूते रथ पर चढ़कर सवारी करता है उसका जीवन अधिक नहीं होता ।
36. जो व्यक्ति स्वप्न में हँसता है, चिन्ता करता और फिर नाचने लगता है, उसकी हत्या हो जाती है ।
37. स्वप्न में जिस व्यक्ति को सिंह मगर मच्छ, हाथी, मनुष्य अथवा सर्प को पकड़ कर खींचता है तो वह बंधन में पड़ जाता है ।
38. स्वप्न में दीवार पर या दीवार के नीचे चित्रकार से चित्रित राहू द्वारा ग्रसित चन्द्रमा को देखने पर मृत्यु हो जाती है ।

39. जो व्यक्ति स्वप्न में अपने इष्टदेव की प्रतीमा को फूलते हुए या चलते हुए अथवा स्थान भ्रष्ट अवस्था में देखता है, उसकी मृत्यु निकट है ।
40. स्वप्न में जिस व्यक्ति को अपने कुल देवता की मूर्ति चोरों द्वारा चुराई जाती दिखाई देती है, उसका जीवन शेष हो गया जानना चाहिए ।
41. स्वप्न में जो व्यक्ति बगीचे के बीच में पेड़ पर से गिरता है और पास में कोई रास्ता नहीं देखता, उसकी मृत्यु निकट ही है ।
42. जो व्यक्ति मुण्ड़न कराकर नगाड़े बजाते हुए स्वप्न में अपने आपको देखता है, उसकी मृत्यु निकट ही है ।
43. जिस व्यक्ति को स्वप्न में खून से सनी लाल रंग वाली तथा गले में सूखे फूलों की माला पहनी हुई स्त्री आलिंगन करती है, उसका जींवन पूरा हो गया है ।
44. खुले बालों वाली, किसी काले पदार्थ का लेप किये हुए कोई स्त्री यदि स्वप्न में अलिंगन करती है तो स्वप्न देखने वाले की मृत्यु हो जाती है ।
45. लाल अंगारे जैसे नेत्र वाली, काले कपड़े पहने हुए यदि कोई स्त्री किसी को सपने में आलिंगन करती है तो ख्वाब देखने वाले की मृत्यु निकट आ चुकी है ।
46. नंगी, पिचके पेट वाली, पीली आँखों वाली और लम्बे नाखून वाली स्त्री यदि किसी को स्वप्न में आलिंगन करती है तो वह मृत्यु को प्राप्त करता है ।
47. काली-कुरूप घुंघराले बालों वाली, नंगी स्त्री यदि किसी व्यक्ति को स्वप्न में आलिंगन करती, हाथ पकड़कर खेंचती, या रमण करती हुई दिखती है तो उसकी मृत्यु निकट ही है ।
48. जो व्यक्ति स्वप्न में अपने शरीर पर काजल अथवा तेल का लेप करके गधे पर सवार होकर दक्षिण दिशा में गमन करता है, उसका जीवन पूरा हो गया ।
49. जो व्यक्ति स्वप्न में कीचड़ में डूबता उतरता हुआ अपने आपको देखता है, उसका जीवन पूरा हो गया, समझना चाहिए ।
50. स्वप्न में जो व्यक्ति दक्षिण दिशा की तरफ मुंह करके उन्मत्त होकर नाचता हुआ दिखाई पड़ता है, समझो वह काल के गाल में समा चुका है ।
51. लाल रंग का किसी चीज का लेप किए हुए लाल वस्त्र पहने और पूर्ण आभूषण युक्त यदि कोई स्त्री स्वप्न में किसी व्यक्ति से रमण करती है, आलिगंन करती या चुम्बन लेती हुई दिखती है तो स्वप्न द्रष्टा की मृत्यु हो जाती है ।

52. जो व्यक्ति स्वप्न में किसी क्रुर व्यक्ति को निरन्तर देखता रहता है, उसकी एक वर्ष में मृत्यु हो जाती है ।
53. जो व्यक्ति अपने आप को स्वप्न में अति प्रसन्न देखता है अथवा अपना विवाह होते हुए देखता है, उसकी जिन्दगी अधिक दिन की नहीं है यह जानना चाहिए ।
54. जो व्यक्ति स्वप्न में किसी स्त्री को खफर में अन्न लेकर अपने पास आते हुए देखता है, उसकी मृत्यु निकट आ गई है ।
55. जो व्यक्ति राक्षसी, पिशाची, प्रेतनी अथवा अपनी पुत्री के साथ रमण करते हुए अपने आपको सपने में देखता है, उसका जीवन पूरा हो गया है ।
56. जिस व्यक्ति को सपने में नाखून वाले जानवर, सर्प या गीदड़ चीरते फाड़ते दिखते हैं उसकी मृत्यु दूर नहीं ।
57. स्वप्न में जो व्यक्ति अपने आप को पलंग से आसन से, परकोटे से, देव मन्दिर से, घोड़े से या अन्य किसी सवारी से नीचे गिरते हुए देखता है उसका जीवन काल समाप्त हो चुका होता है ।
58. जो व्यक्ति स्वप्न में धूल भरे आंगन में बार-बार बैठता है और आकाश में उछलता है वह अधिक नहीं जी पाता ।
59. जो व्यक्ति सपने में अपने माता-पिता या स्नेहीजनों को अपने पर क्रोध करते हुए देखता है, उसका विनाश हो जाता है ।
60. जो व्यक्ति सपने में खाट पर, अर्थी अथवा शिला पर बैठता है उसकी मृत्यु निकट आ गई है ।
61. स्वप्न में जो व्यक्ति अपने अंग से कीचड़ गोबर, राख या धूल मलता है, उसकी मृत्यु हो जाती है ।
62. जो व्यक्ति ख्वाब में चर्बी या अन्य कोई दुर्गन्ध युक्त यदार्थ खाता है, उसका जीवन पूरा हो गया है ।
63. जो व्यक्ति स्वप्न में जूही और चम्पा के फूलों को लाल रंग का देखता है, उसकी आयु समझो पूर्ण हो गयी है ।
ख्वाब में यदि कोई खजूर, गुड़ हींग या गोंद खाता है तो समझो मृत्यु निकट आ पहुँची ।
64. चाहे स्वप्न में हो या जागृत अवस्था में यदि किसी व्यक्ति को स्नान करते ही हृदय और पैर सूख जाते हैं तो समझों उसकी आयू 10 दिन शेष है ।
65. यदि किसी के शरीर से बकरी या मृत देह के समान बदबू आने लगे तो समझो उसकी आयु 15 दिनों की रह गयी ।

66. जो व्यक्ति ख्वाब में बन्दर या रीछ की सवारी करता है या उसके खींचे हुए गाड़ी पर सफर करता है उसकी मृत्यु निकट मसझें
67. यदि स्वप्न में नागा सन्यासी को प्रसन्नता पूर्वक हंसते हुए मारण विद्या का प्रयोग करते हुए देखता है तो देखने वाली की मृत्यु आ गई समझनी चाहिए।
68. यदि भोजन करने पर भी भूख लगी रहे, स्वप्न में दांत किटकिटाता हो, जिसे धूप अगरबत्ती का गंध न लगता हो, दिन-रात सोता हो, जिसे दूसरे के नेत्रों में प्रतिबिम्ब दिखाई नहीं देता, अर्द्ध रात्रि में इन्द्रधनुष देखे, जो दिन में भी तारागण देखे, जिसका मुख अकस्मात लाल हो जाय और जीभ सफेद हो जाय, ऐसे व्यक्तियों की मृत्यु काल निकट में आकर द्वार खटखटाता है।
69. जो व्यक्ति सपने में गद्दे में गिरकर निकल नहीं पाता, जो कानों को ढककर अपना शब्द भी नहीं सुनता, जिसे अपना श्वेत वस्त्र भी लाल या काला दिखे, जिसे जल या शीशे में अपनी आकृति न दिखाई दे, जिसे अपनी छाया भी न दिखाई दे, उसकी मृत्यु 5 दिन के अन्दर हो जाती है। इनसे बचने हेतु "सिद्ध गायत्री यंत्र" धारण करें।
70. स्वप्न में भूतों-प्रेतों अथवा मृतकों के साथ मद्यपान करना, चांडाल के साथ तेल पीना, पागलों की भांति नाचता हुआ चमगुदड़ी देखना, स्वप्न में शरीर पर हल्दी, नील, कागज या गोरोचन मलना, शहद, तेल लस्सी अथवा घी का लेप अपने बदन पे करना, सपने में ही ककड़ी लौकी, नींबू और तरबूज खाते अपने आपको देखना मृत्यु निकट आने की निशानी है।

विपत्ति प्रदायक स्वप्न

1. स्वप्न में लाल वर्ण का आकाश देखना कष्ट कारक एवं विपत्ति दायक माना गया है।
2. स्वप्न में किसी प्रकार का आभूषण धारण करना विपत्ति आने की निशानीं है।
3. यदि स्वप्न में कोई अपने आपको आम खाता हुए देखे तो। विपत्ति की सूचना और यदि गर्भिणी स्त्री देखे तो गर्भपात होने की आशंका रहती है।
4. सपने में कटार देखना या चलाना देखने से कष्ट भोगना पड़ता है।
5. स्वप्न में कपास का पेड़ देखना रोग सूचक है।
6. स्वप्न में किसी के साथ लड़ाई झगड़ा देखने से रोग भय एवं रोगी के लिए प्राण धातक सिद्ध होता है।

7. सपने में दुर्ग के अन्दर भ्रमण करना देखने से शारीरिक कष्ट रूप विपत्ति भोगना पड़ता है ।
8. स्वप्न में केस दर्शन से युद्ध में पराजय एवं कार्यों में असफलता मिलती है ।
9. स्वप्न में खेल खेलना देखने से शोक पश्चाताप, धन नाश, पुत्र भरण, पत्नी को कष्ट आदि होता है ।
10. स्वप्न में अपना या दूसरों का हजामत बनते हुए देखने से शारीरिक कष्ट धननाश एवं पुत्र के लिए कष्टकारक होता है ।
11. स्वप्न में अपने आपको दक्षिण दिशा गमन देखने से धन का क्षय एवं शारीरिक पीड़ा होती है, कभी कभी ऐसे स्वप्न द्रष्टा की मृत्यु भी हो जाती है ।
12. सपने में गीत गाते हुए देखना, या सुनना दोनों ही कष्टप्रद होते हैं ।
13. यदि स्वप्न में कोई महिला अपने आपको अन्न भक्षण करती हुई देखती है तो उसे गर्भपात रूपी विपत्ति का सामना करना पड़ता है ।
14. स्वप्न में श्रृंगालादिक देखने से शारीरिक कष्ट के साथ ही मृत्यु की सम्भावना भी होती है । इस प्रकार के स्वप्न अत्यधिक विपत्ति दायक होते है । जागृतावस्था में भी सियार की बोली सुनना भी कष्ट कारक है ।
15. यदि सपने में गृह को ध्वस्त होता देखे तो मृत्यु सूचक विपत्ति समझा जाता है ।
16. स्वप्न में चादर औढ़ना या बिछाना आदि देखे तो सन्तान की हानि होती है ।
17. स्वप्न में जल का पान करने से कष्ट एवं अपने आपको जल में डूबते देखने से मृत्यु या मृत्यु विपत्ति का सामना होता है ।
18. स्वप्न में यदि कोई स्त्री झाडू देखे तो विपत्तियों से घिर जाती है ।
19. सपने में फटे-पुराने और मलीन टाटों को देखने से अनिष्ट की आशांका होती है ।
20. स्वप्न में टीन का काटना या कतरना देखना अमंगल जनक होता है ।
21. ख्वाब में टूटता हुआ तारा देखना अशुभ कारक होता है ।
22. स्वप्न में तेल का देखना सदैव अमंगल कारक, इसकी उपलब्धि देखने में कष्ट, मालिश से मृत्यु तुल्य शारीरिक यन्त्रण एवं पीने से मत्त्यु भय होता है । साधारण तथा जागृतावस्था में भी कहीं गमन करते समय तेल लगाना या देखना अशुभ एवं विपत्तिदायक माना गया है ।

23. स्वप्न में धुंआ देखने से मानसिक चिन्ता, प्रिय वियोग, कार्य में विध्न एवं धननाश होता है ।
24. सपने में नट को नाचता हुआ देखने से पिता एवं मित्र को कष्ट होता है ।
25. स्वप्न में फल भक्षण करने से सन्तान को कष्ट एवं स्वयं को रोगग्रस्त होना पड़ता है ।
26. सपने में वाण चलाना देखने से पारस्परिक कलह होता है ।
27. सपने में किसी को भिक्षा देना या ग्रहण करना अपकीर्ति का कारण होता है ।
28. स्वप्न में भूकम्प देखना अनिष्ट कारक है । इससे देश व्यापी विपत्ति या राजा की मृत्यु होती है ।
29. स्वप्न में मगर देखने से युद्ध की आशंका होती है । मगर के साथ जल क्रीड़ा करते हुए देखना विपत्ति का सूचक होता है ।
30. स्वप्न में बीमार पशु देखना ज्येष्ठ पुत्र के लिए कष्ट कारक होता है ।
31. स्वप्न में श्मशान भूमि देखने से गृह कलह उत्पन्न होता है ।
32. सपने में सिर दर्द का कष्ट दिखाई पड़े तो भावी विपत्ति की सूचना और छिन्न मस्तक देखने से अनिष्टकारक फल होता है ।
33. स्वप्न में सूखे पुष्पों की माला देखने से बीमारी होती है ।
34. किसी प्रकार का रूलाई का स्वप्न देखने से अनिष्ट कारक होता है ।
35. यदि स्वप्न में घनघोर वर्षा होती हुई दिखाई पड़े तो गृह कलह एवं मित्र से वियोग होता है ।
36. स्वप्न में वैवाहिक उत्सव देखना विपत्ति दायक होता है ।
37. स्वप्न में सर्प देखना मरण कारक और उसे काटता हुआ देखने से अर्थलाभ होता है ।
38. स्वप्न में पर्वत की गुफा में प्रवेश करना विपत्ति सूचक होता है ।
39. स्वप्न में जिस व्यक्ति को विकराल स्वरूप और पीले नेत्र वाली बन्दरिया आलिंगन करती है, वह दुःखद परिस्थितियों में घिर जाता है ।
40. जो व्यक्ति सपने में अनाज में मिट्टी मिलाता है या मिलाते हुए देखता है, अथवा तेल में कोई चीज पकाता है, उसकी दुर्गति होती है ।
41. सपने में जो व्यक्ति तोलियों या कुम्हारों के साथ अपने आप को भागता हुआ देखता है वह कष्ट भोगता है ।
42. स्वप्न में जो व्यक्ति कूड़ा करकट या कांटेदार पेड़ पर सोता है, वह विपत्ति भोगता है ।

43. जो व्यक्ति स्वप्न में उपले, तुस, कंकाल, सूखी लकड़ी, पत्थर पर सोता या बैठता है वह दुःख भाजन होता है ।
44. जिसे स्वप्न में दर्जी, लुहार, चमार, झींवर, आदिवासी, जुआरी, वैध्य या नट से छूता है वह दुःख भोगता है ।
45. कनेर शीशम, खैर और जांट के वृक्षों को स्वप्न में देखना विपत्ति सूचक माना गाया है ।
46. स्वप्न में मूंग, तिल या कुलथी खाना विपत्तिदायक होता है ।
47. स्वप्न में धरती को अचानक जलमय देखने से धन स्वास्थ्य एवं मान सम्मान की हानि होती है ।
48. जो व्यक्ति सपने में हाथी, घोड़ा, वस्त्र या स्थान को हरण करते देखता है, उसे राज्यरूपी विपत्तियों का सामना करना पड़ता है ।
49. स्वप्न में पत्नी का हरण देखना लक्ष्मी का नाश, अपना अपमान देखना परिवार में क्लेश और अपने गौत्र की महिला से ही लड़ाई झगड़ा होता है ।
50. स्वप्न में अपने नाक-कान कटा देखना विपत्तिदायक होता है । ऐसे उपरोक्त स्वप्न देखने वालों को ''सिद्ध विपत्ति नाशक यंत्र'' जो मेरे कार्यालय से उपलब्ध है, मंगवाकर धारण करना चाहिए जिससे विपत्तियों से छुटकारा पाकर सुखद जीवन बीता सके ।

रोग प्रदायक स्वप्न

1. जो व्यक्ति स्वप्न में तील चावल की खिचड़ी खाता है, उसे ''क्षय रोग'' हो जाता है ।
2. जो व्यक्ति ख्वाब में गोबर सहित अत्यन्त गरम जल पीता है या दवा के साथ सरसों तेल पीता है उसे अतिसार रोग से ग्रसित होना पड़ता है ।
3. ख्वाब में पाण्डू रोगियों को देखकर यदि उसे भी स्वप्न में पाण्डु रोग हो जाये तो उस व्यक्ति के शरीर से खून समाप्त होने का भय हो जाता है ।
4. ख्वाब में यदि घर या आंगन में शहद की मक्खियों का निवास हो जाये तो वह व्यक्ति रोगी अवश्य हो जाता है ।
5. स्वप्न में अपने जूते का चोरी हो जाना रोग आने की निशानी है ।
6. स्वप्न में नाक, कान या हाथ का कटना दांत और बालों का झड़ना, घर और दरवाजे को टूटता हुआ देखना असाध्य रोगों का सूचक है ।
7. यदि कोई स्वप्न में कमल को तलाब में उगता हुआ देखे तो वह रोगी हो जाता है ।

8. काले घोड़े पर सवार होकर, शरीर में काले पदार्थ की लेपन किये, काला वस्त्र धारण किये यदि सपने में कोई अपने आपको देखता है तो उसकी मृत्यु रोगग्रस्त होकर होती है, अत: मेरे कार्यलय से सिद्ध रोग निवारण यंत्र प्राप्त कर धारण करें ।
9. स्वप्न में जिस व्यक्ति के कान में गोह या सर्प घुसता है तो रोग से पीड़ित होकर मृत्यु प्राप्त करता है ।
10. सपने में यदि कोई अपने शरीर का मांस आंत या नाखून खाता है तो उसका अंग भंग हो जाता है ।
11. यदि ख्बाव में कोई चांडालों के साथ तेल पीता है तो उसे प्रमेह रोग से पीड़ित होकर प्राण गँवाना पड़ता है ।
12. जो स्वप्न में स्त्री का स्तन पान करता है । उसकी मृत्यु हो जाती है ।
13. स्वप्न में यदि कोई कसार खाता है तो उसे क्षय रोग से पीडित होना पड़ता है ।
14. स्वप्न में यदि किसी को पीला सांप काट ले तो वह रोगी हो जाता है ।
15. स्वप्न में बारात देखने से स्वास्थ्य खराब हो जाता है ।
16. यदि कोई सम्भोग सम्बन्धी स्वप्न देखता है तो स्वास्थ्य हानि होती है ।
17. स्वप्न में दुर्घटना देखना रोग होने की निशानी है ।
18. स्वप्न में जुबान से कुछ गिरता हुआ देखना बीमारी आने की निशानी है ।
19. स्वप्न में भेड़ी का दुग्धपान करने से व्यक्ति रोगी हो जाता है ।
20. स्वप्न में सूअर का दुग्धपान भी बिमारियों का सूचक है ।
21. स्वप्न में दुर्बल बैल देखना स्वास्थ्य हीनता की निशानी है ।
22. स्वप्न में अपने को पक्षी से कटवाते देखना अकाल मृत्यु सूचक है ।
23. स्वप्न में चाकू देखने से रोग और हानि होती है ।
24. स्वप्न में त्रिशूल देखना शत्रु रोग व हानि का सूचक समझे ।

रोग समाप्ति सूचक स्वप्न

1. स्वप्न में किसी दुर्घटना से बचाव हो जाना रोगी को स्वस्थ होने की सूचना देती है ।
2. सपने में नर्स को देखना बीमार व्यक्ति के लिए स्वास्थ्य लाभ की निशानी है ।
3. स्वप्न में दाँत देखना स्वास्थ्य वृद्धि सूचक माना गया है ।
4. स्वप्न में घना केश देखना स्वास्थ्य लाभ की निशानी है ।
5. जो व्यक्ति स्वप्न में भोजन फेंकता है मानों वह अपने रोग को फेंक रहा है ।

6. स्वप्न में साबून देखना रोग नाशक होता है ।
7. स्वप्न में उड़द का दाल देखने से दुःख का अन्त हो जाता है ।
8. स्वप्न में अपने आपको रोगी देखना उत्तम समझा जाता है ।
9. स्वप्न में सुपारी देखना रोग नाशक समझा जाता है ।
10. जो व्यक्ति अपने आपको स्वप्न में विषपान करते देखता है वह समस्त रोगों से मुक्ति पाकर सुख भोगता है ।
11. सपने में पुराने घर को गिराकर जो नये गृह का निर्माण करता है, मानों वह रोग मुक्त होकर नये जीवन का निर्माण कर रहा है ।
12. यदि कुमकुम लागकर अपने विवाह में स्वप्न में बैठे तो वह समस्त रोगों से छुटकारा पा लेता है ।
13. जो व्यक्ति नदियों, कमलों, बगीचे या हरे-भरे पर्वत शिखरों को ख्वाब में देखता है वह रोग मुक्त हो जाता है ।
14. जो व्यक्ति सपने में देवताओं, ऋषियों मुनियों एवं अपने माता-पिता को सम्मान पूर्वक देखता है, उसके रोग नष्ट हो जाते हैं ।

विदेश यात्रा सम्बन्धी स्वप्न

1. जो व्यक्ति स्वप्न में शौचालय को देखता है उसका विदेश यात्रा सम्बन्धी योजना सफल हो जाती है ।
2. जो व्यक्ति स्वप्न में अपने आपको उड़ते हुए देखता है उसकी यात्रा सफल हो जाती है ।
3. जो स्वप्न में उड़ते हुए पक्षियों से आकाश को भरा हुआ देखता है वह व्यक्ति विदेश यात्रा करता है ।
4. जो व्यक्ति सपने में विमान देखता है, समझो उसकी विदेश यात्रा होने ही वाली है ।
5. जो जहाज को उड़ान भरते देखता है तो समझों कि विदेशों से धन आने ही वाला है ।
6. स्वप्न में दुर्ग देखने से विदेश गए हुए स्वजन का आगमन होता है ।
7. स्वप्न में जूते का दर्शन विदेश यात्रा की निशानी है ।
8. स्वप्न में किसी प्रकार की दुर्घटना होते हुए देखे तो विदेश गमन नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे यात्रा में विघ्न उपस्थित होता है ।
9. स्वप्न में अपने आपको भयातुर होते हुए देखे तो विदेश गमन होता है ।
10. नाव पर चढना देखने पर भी विदेश यात्रा होती है ।

मुकद्दमे में हार-जीत कराने वाले स्वप्न

1. स्वप्न में अपनी जिह्वा छेदन देखे तो मुकदमा जीत जाता है ।
2. स्वप्न में मधुर राग का गीत सुनने से मुकदमे में विजय मिलती है ।
3. यात्रा का स्वप्न देखने से भी अदालत में विजय प्राप्त होता है ।
4. ताम्बूल [पान] स्वप्न में देखने से अदालत में शत्रु का पराजय हो जाता है ।
5. मरा हुआ चूहा देखने से मुकदमें में सफलता हासिल होती है ।

शुभता दायक स्वप्न

1. स्वप्न में लड़की देखना शुभ होता है ।
2. स्वप्न में पुस्तक पढ़ना देखने से मान-सम्मान व प्रतिष्ठा मिलती है ।
3. जलती लालटेन देखने से सम्भ्रान्त परिवार से संबन्ध स्थापित होता है ।
4. जलती टार्च देखने से भी उपरोक्त फल ही मिलता है ।
5. स्वप्न में दियासलाई देखने से भाग्योन्नति होती है ।
6. स्वप्न में आग देखने से सौभाग्य में वृद्धि होती है ।
7. स्वप्न में सफेद दाढ़ी देखना शुभ है ।
8. स्वप्न में अपना अपमान देखना उन्नति की निशानी है ।
9. स्वप्न में अपनी स्त्री से आलिंगन करना भी उन्नति सूचक ही माना गया है ।
10. स्वप्न में प्रसव पीड़ा देखने से सुख-समृद्धि में वृद्धि होती है ।
11. स्वप्न में तीर्थ यात्रा करने पर मान-सम्मान बढ़ता है ।
12. स्वप्न में तालाब देखना शुभ है ।
13. स्वप्न में साधु-सन्तों को देखना शक्ति पाने की निशानी है ।
14. साधु का आश्रम ख्वाब में देखने वाला अपना जीवन शान्ति पूर्वक सम्पूर्ण सम्पन्नता के साथ बिताता है ।
15. स्वप्न में स्वच्छ आकाश देखना उन्नतिशील भविष्य का सूचक है ।
16. स्वप्न में जल में तैरना उन्नति के लक्षण हैं ।
17. स्वप्न में परी देखना रहस्यमयी उन्नति के सूचक समझे ।
18. स्वप्न में आँसू देखना दुख भागने की निशानी है ।
19. स्वप्न में चिन्तित रहना सुखद भाग्य का द्योतक है ।
20. स्वप्न में शब्जी देखना समृद्धि का साधन है ।
21. स्वप्न में अण्डे देखना सफलता की निशानी है ।
22. स्वप्न में दर्पण देखना लाभ व प्रसन्नता का पूरख है ।

23. स्वप्न में तीर चलाना अभिष्ट सिद्धि का प्रतीक है ।
24. स्वप्न में चावल देखना गम समाप्ति का द्योतक है ।
25. स्वप्न में बादल देखना उन्नति दायक होता है ।
26. स्वप्न में किसी को बिच्छू काट ले तो धन लाभ होता है ।
27. स्वप्न में ताबीज खोना अच्छे समय आने का प्रतीक है ।
28. स्वप्न में पूजा-पाठ करना शान्ति मिलने का प्रतीक है ।
29. स्वप्न में स्वर्ग की सैर करना सुख शान्ति प्राप्ति के लक्षण हैं ।
30. स्वप्न में सीढ़ी देखना उन्नति के अवसर प्राप्त करता है ।
31. स्वप्न में पहाड़ पर चढ़ना प्रगति द्योतक है ।
32. स्वप्न में तरक्की देखना, योजना सफल होने का लक्षण है ।
33. स्वप्न में रोटी देखना सफलता के लक्षण हैं ।
34. स्वप्न में रस्सी में लिपटने वाला उच्च स्थान पाप्त करता है ।
35. स्वप्न में शर्बत पीने वालों को किसी से सुदृढ़ प्रेम मिलता है ।
36. स्वप्न में तीतर देखने से किसी से सुखद सम्बन्ध बढ़े, घर में आग देखने से सरकारी धन की प्राप्ति चश्मा देखने से ज्ञान में वृद्धि और पसीना देखने से मनोकामना की सिद्धि होती है ।
37. स्वप्न में युवा स्त्री देखने से अच्छा समय, उससे सम्भोग देखने से धन लाभ, गले में धर्म चिन्ह पहनना देखने से आदर व धर्म बढ़े और विद्यवा स्त्री से सम्भोग करते अपने आपको देखने से आकर्षण बढ़ता है ।
38. अपने आपको वृद्ध स्त्री का आलिंगन स्वप्न में करने से मैत्री बढ़े, बरसात में छाता लगाकर चलना देखने से समस्याओं का निवारण, नल चालू देखने से कार्य में तुरन्त सिद्धि और चुम्बन करते अपने आपको देखने से अभिलाषा पूर्ण होती है ।
39. स्वप्न में किसी को चुम्बन देने से मित्रता हो, बनियाईन देखने से जीवन सुखद हो, फेनी खाने से मेहनत से धन वृद्धि हो और जाम पैमाना देखने से सफलता व लोक प्रियता मिलती है ।
40. स्वप्न में दान देने से प्रतिष्ठा प्राप्त, दोस्ती करना देखने से शुभता, जामुन देखने से प्रसन्नता मिले चोली पहनना देखने से वैराग्य प्राप्त हो, दीपावली देखने से समृद्धि प्राप्त हो और पेड़ पर चढ़ना देखने से उन्नति प्राप्त होती है ।

सुख प्रदायक स्वप्न

1. स्वप्न में मोंठ के दाल देखने से धन लाभ और परेशानी का अन्त,

कुलचा खाना देखने से मुफ्त का माल मिले और कमान देखने से इरादा पूर्ण होता है ।

2. स्वप्न में कफन देखने से आयु बढ़े कफन बेचना देखने से उन्नति हो और इन्द्रधनुष देखने से दुःख की समाप्ति होती है ।
3. स्वप्न में अदरख देखने से रव्याति मिले, अनानास देखने से कष्ट के बाद सुख की प्राप्ति, अंगूर देखने से चहुं ओर सफलता और रेल इन्जन देखने से यात्रा कार्य सफल होता है ।
4. स्वप्न में इमारत देखने से सेठ बने, प्रभु दर्शन देखने से खुशियां मिले, नेता की मृत्यु देखने से अच्छे कानून बने, और भाई को देखने से भाई की आयु में वृद्धि होती है ।
5. पूरी देखने से सुख शान्ति मिले, स्वप्न में परिक्रमा देखने से भक्ति मिले और वन देखने से राज्य प्रतिष्ठा मिलती है ।

संक्षित स्वप्न फल तालिका

इस अध्याय में स्वप्न तालिका प्रस्तुत कर रहे हैं । इस तालिका में स्वप्न में क्या देखा, उस स्वप्न का फल क्या है, यह सब आप एक ही दृष्टि में जान सकते हैं ।

क्रम सं०	स्वप्न में क्या देखा ?	स्वप्न फल
1.	दही देखना	धन लाभ होगा ।
2.	दूध देखना	धन लाभ होगा ।
3.	चारपाई देखना	झूठा प्रमाणित होगा
4.	बालक देखना	समय अच्छा है
5.	तार	प्रभुता समृद्धि बढ़े
6.	डण्डा	बुराई होगा
7.	दीपक	मुसीबत टले
8.	देवता	खुशी मिलेगी
9.	देवी	शान्ति मिलेगी
10.	इष्ट प्रतिमा	आयु में वृद्धि होगी
11.	पान खाना	समाज में मान मिलेगा
12.	पान फेंकना	सम्मान के ठेंस लेगगी
13.	जुड़वाँ बच्चे	धन लाभ होगा
14.	सन्दूक पाना	सुविधा मिलेगी
15.	सन्दूक खोना	परेशानी होगी

16.	सन्दूक खोलना	धन लाभ होगा
17.	पुस्तक खोना	मान-हानि होगी
18.	पुस्तक मिलना	सम्मान मिलेगा
19.	भूखे देखना	संतान विघ्न होगा
20.	तहखाना	कुलटा से सम्बन्ध
21.	पतंग	धन हानि होगी
22.	पतंग कटना	धन हानि से बचें ।
23.	पतंग उड़ाना	धन वृद्धि होगी
24.	ताली देखना	विपरीत लिंगी से मित्रता
25.	नंगा देखना	अशुभ है
26.	दवा पीना	बुराई त्यागना
27.	दवा देखना	बुराई होनेवाला है ।
28.	दवा गिरना	पापों से क्षमा मिली
29.	चींटी देखना	कठिनाई से सफलता
30.	चींटी मारना	तुरन्त सफलता
31.	चीटियां देखना	कठिनाई पर कठिनाई
32.	दाढ़ी देखना	अशुभ होगा
33.	प्रशंसा देखना	अवनति होगी
34.	अपमान पाना	उन्नति मिलेगी
35.	पम्प से पानी न निकले	धन, कारोबार में हानि
36.	ईष्ट मूर्ति की चोरी	आयु हानि
37.	ईष्ट मूर्ति का टूटना	आयु हानि
38.	कीचड़ देखना	पीड़ा की प्राप्ति
39.	पानी	धन लाभ
40	दाँत देखना	स्वास्थ्य वृद्धि
41.	पितृ देखना	शुभाशुभ की प्राप्ति
42.	स्कूल देखना	विशेषता प्राप्त हो
43.	प्रपात देखना	धन लाभ हो
44.	उस्तरा देखना	शुभ यात्रा है ।
45.	दस्ताने पाना	समृद्धि प्राप्त हो ।
46.	दस्ताने. खोना	अवनति होगी
47.	शव यात्रा	पारीवारिक क्लेश
48.	दर्पण तोड़ना	प्रसन्नता में हानि

49.	चक्की देखना	कठिनाई जीवन
50.	पिंजरा देखना	शारीरिक क्लेश
51.	भैंस	मुश्किल हल
52.	भैसा	कठिनाई बढ़े
53.	ताबीज खोना	अच्छा समय
54.	शराब पीना	धन वृद्धि
55.	केंचुवा सर्प का	शत्रु कार्यरत्
56.	प्रार्थना	शान्ति
57.	पूजा	शान्ति
58.	प्रसाद	लाभ
59.	प्रसाद बाँटना	शान्ति
60.	स्वर्ग देखना	सुख-शान्ति
61.	नर्क	क्लेश
62.	सीढ़ी से उतरना	अवनति की प्राप्ति
63.	मकान टूटना	मृत्यु होगी
64.	पहाड़	अशुभ
65.	पहाड़ पर चढ़ना	उन्नति के लक्षण
66.	पहाड़ से उतरना	अवनति के लक्षण
67.	नाटक देखना	परिवर्तनशील भविष्य
68.	शिशु देखना	सन्तान लाभ
69.	कंगन देखना	मधुर मैत्री
70.	चोली देखना	मननमुटाव हो
71.	दुल्हन	सुख लाभ
72.	बटन	समृद्धि मिले
73.	प्रेम प्रस्ताव	विवाह में विलम्ब
74.	साईकिल	योजना सफल हो
75.	गेंद देखना	व्यर्थ की परेशानी
76.	पानी का धार	शुभता प्रदान
77.	आग उठाना	व्यर्थ व्यय
78.	आवाज सुनना	भला होगा
79.	मुर्दा नंगा	पाप समापन
80.	नाखून	धनी धन से जाये
81.	बड़ा नाखून देखना	शत्रु की हार

82.	नाखून काटना	ऋण, रोग मुक्ति
83.	नाखून टूटना	सफलता में विलम्ब
84.	स्वयं को जलता देखे	असिद्धि प्राप्ति
85.	अन्धा देखना	कार्य अवरूद्ध होना
86.	काना देखना	अनुकूल समय नहीं है
87.	आक वृक्ष देखना	शारीरिक कष्ट
88.	वृद्ध स्त्री	अशुभ होगा
89.	लिंग देखना	सम्मान में वृद्धि होगी
90.	लिंग कटना	मान-हानि
91.	मस्तक देखना	राज्य लाभ
92.	चरण देखना	धन-लाभ
93.	चुम्बन देना	मित्रता हो ।
94.	चुम्बन लेना	समृद्धि प्राप्त हो
95.	गंदी बनियाईन	दुःख मिलेगा
96.	बनियाईन उतारना	कार्य हानि
97.	दोस्ती करना	शुभ
98.	चम्मच देखना	खुशामदों से सावधान
99.	चटनी खाना	दुःख स्थिति हो ।
100.	चप्पल देखना	यात्रा होगी
101.	चौखट	खुशी, प्यार मिले
102.	पेड़ पौधे	धन लाभ
103.	दरवाजा बन्द देखना	चिन्ता जनक स्थिति
104.	पगड़ी बाँधना	उन्नत समय
105.	तम्बू देखना	दीवानगी हो
106.	चित्र देखना	मिलन हो
107.	नमक देखना	खुशहाली मिले
108.	नदी	सुखमय समय
109.	नाला	संकट आने वाला
110.	नदी या नाले में गिरना	संकट के बाद सुख
111.	भीगना	सुख मिलेगा
112.	भागना	संकट समाप्त
113.	दाता मृत हों देखना,	प्रसन्नता
114.	दादी मृत हों देखना,	लाभ

115.	चाचा ,,	क्लेश
116.	चाची ,,	प्रतिष्ठा मिले
117.	नाना ,,	सद्भाव बढ़े
118.	नानी ,,	प्रेम प्राप्त हो
119.	दोस्त ,,	मिलन
120.	दुश्मन	धन लाभ
121.	प्रेमिका देखना	शीघ्र मुलाकात
122.	प्रेमी देखना	शीघ्र मिलन
123.	नौकरी छूटना	समय ठीक नहीं
124.	कुत्ता देखना	शत्रु से साक्षात्कार
125.	पिता देखना	सुरक्षात्मक समय
126.	माला	शान्ति
127.	मूंग दाल	समस्या समाधान
128.	उड़द दाल	दु:ख समाप्त
129.	मसूंर दाल	धन लाभ
130.	कपड़ा धोना	विघ्न के साथ लाभ
131.	कुत्ता काटे	कठिनाई हो
132.	कुत्ता भौंके	लोगों की छींटाकशी
133.	कुत्ता झपटे	शत्रु की हार
134.	कुत्ता आज्ञा माने	शत्रु कहे में रहे
135.	कुत्ता तलवा चाटे	शत्रु खुशामद करे
136.	कद लम्बा देखना	आयु क्षीण होना
137.	कद घटना	अपमान पाना
138.	शतरंज देखना	व्यर्थ समय कटे
139.	राख देखना	अशुभता मिले
140.	जुबान देखना	तेज तर्रार होना
141.	जुबान पर बाल	कष्ट पाना
142.	जुबान बंधी हो	दु:ख में प्रगति
143.	डण्डी बार-बार गिरे	भरोसे वाला दगा करेगा
144.	डाकखाना	शुभ सूचना मिले
145.	दौलत देखना	लाभ,स्त्री, मित्र
146.	दशा की संख्या	अभीष्ट पूर्ति
147.	तितली देखना	प्रेमिका दर्शन

148.	तितली पकड़ना	प्रेमिका प्राप्त हो
149.	तितली उड़ना	प्रेमिका हानि
150.	अमरूद देखना	कठिनता से लाभ
151.	अनार	धन मिले
152.	काले अंगूर	कहा सुनी होगी
153.	ईधन देखना	गुनाह करेंगे
154.	उल्टे कपड़े पहने	जग हँसाई हो
155.	रास्ता उबड़-खाबड़	परिश्रम से सफलता
156.	नेता प्रसन्न	क्लेश समाप्ति
157.	भाभी देखना	भतीजे का जन्म
158.	पुरुष का पाँव	शत्रुता हो
160.	पांसा फेकना	संघर्ष समाप्त
161.	पतंग देखना	दुःख पाना
162.	एक पाया टूटना	मित्र की हानि
163.	दातुन करना	खुशी मिलेगी
164.	मुर्दे को नहलाना	कोई उपकार करेगा
165.	हँसना	प्रसिद्धि मिले
166.	वन देखना	राज्य प्रतिष्ठा प्राप्ति
167.	छत्र देखना	अभिलाषा पूर्ण होना
168.	छत्र देना	अपूर्ण अभिलाषाएँ
169.	छत्र पाना	शीघ्र मनोकामना पूर्ण
170.	पत्ते देखना	सम्मान की प्राप्ति
171.	रात देखना	विघ्न आना
172.	दिन देखना	सफलता की प्राप्ति
173.	छत देखना	सुरक्षात्मक भविष्य
174.	पत्थर देखना	मित्रता नाशक
175.	नहाते देखना	बैराग्य जागे
176.	सिंहासन देखना	उन्नति और सुख प्राप्ति
177.	सिंहासन पाना	प्रगति पाना
178.	सिंहासन देना	सुख में हानि
179.	प्रकाश देखना	साधना की प्राप्ति
180.	दीवार देखना	सम्मानित होना
181.	टोपी देखना	विशेषपात्र

182.	सुपाड़ी देखना	रोग नाशक
183.	स्वस्तिक देखना	धन, सौभाग्य वृद्धि
184.	स्वस्तिक पाना	भविष्य प्रगतिशील
185.	स्वस्तिक खोना	अवनति होगी
186.	चौपड़ खेलना	उन्नति की प्राप्ति
187.	स्त्री चौपड़ खेले	सौभाग्य की प्राप्ति
188.	जुलाहा देखना	शोक
189.	बढ़ई	दुःख
190.	चमार	असफलता
192.	शुद्र स्त्री	अपने को कष्ट
192.	शुद्र स्त्री से मैथुन	कष्ट, मान-हानि
193.	स्नानगार देखना	शारीरिक गुप्त मित्रता
194.	गुम्बद देखना	पदोन्नति
195.	टेलिफोन करना	मित्रता दायक
196.	टेलिफोन सुनना	कष्ट का समय
197.	उँगलियां जुड़ी हो	उन्नति, धन लाभ
198	फैली उंगलियां	अवनति एवं व्यर्थव्यय
199.	मरा पक्षी	असफलता, हानि
200.	मंत्र पाना	शान्ति की प्राप्ति
201.	मंत्र जपना	सफलता की प्राप्ति
202.	गाय का दूध	प्रसन्नता व सफलता
203.	बिल्ली दूध	हानि होगी
204.	दूध (कुत्ती)	शत्रुता होगी
205.	दूध (ऊँट)	लाभ मिलेगा
206.	दूध (शेर)	सुख मिलेगा
207.	दूध (भेड़िया)	शत्रुता होगी
208.	दूध (सुअंर)	कष्ट सहेंगे
209.	दुकान देखना	सम्मानित होंगे
210.	दुकान करना	प्रतिष्ठा मिलेगी
211.	दुकान बेचना	मान-हानि
212.	दुकान खरीदना	धन व नाम लाभ
213.	दुकान बन्द	दुभाग्य देखना
214.	धमाका	संकट पाना

215.	चीनी देखना	हराम का धन लाभ
216.	चाय ,,	मित्र धन लाभ
217.	चूजा ,,	सुख समृद्धि बढ़े
218.	चौराहा ,,	यात्रा सफल
219.	चौराहे पर जाना	सफल व पूर्ण यात्रा
220.	चौराहे से आना	यात्रा स्थागित
221.	प्रकाशमान चौराहा	लाभदायक यात्रा
222.	अंधकार चौराहा	हानि युक्त यात्रा
223.	चार दीवारी देखना	धन जन सुरक्षा पाना
224.	चार दीवारी (उजाले में)	धन-जन लाभ
225.	चार दीवाारी (अंधेरे में)	धन-जन हानि
226.	चार दीवारी (बड़ी)	धन-जन सुरक्षित
227.	चार दीवारी (छोटी)	धन-जन असुरक्षित
228.	प्रतिबिम्ब अपना दर्पण में	समय अनुकूल नहीं
229.	प्रतिबिम्ब पति का दर्पण में	अशुभ स्थिति
230.	नक्षा देखना	लम्बी व लाभदायक यात्रा
231.	डुबकी लगाती बत्तख	शोचनिय स्थिति
232.	उड़ता बतख	धन लाभ
233.	मन्दिर का पुजारी	क्लेश उत्पन्न हो
234.	प्रेम के छपे चित्र	कारखाने की हानिं
235.	हाथ के बने चित्र	अविश्वासी दोस्त मिले
236.	पान दान	सहयोग मिले
237.	पेशाब करती स्त्री	काम बढ़े, प्रेम मिले
238.	घड़ी	शत्रु को हानि
239.	पेसाव से धुँआ उठे	महान उन्नति
240.	जलजीरा पीना	प्रसन्नता साथ हो
241.	न्यायाधीस देखना	क्लेश की समाप्ति
242.	योगिनी देखना	प्रेमिका है तो वियोग नहीं
243.	योगी देखना	पूजा पाठ में मन लगे
244.	चील देखना	बदनाम होगा
245.	छींकना	कार्य असफल होंगे
246.	स्त्री का हँसना	बदचलन होना
247.	पृथ्वी खोदना	कठिनाई से लाभ

248.	स्तन से दूध निकलना	प्रेम प्यार मिलेगा
249.	नाभि देखना	धन लाभ
250.	पृथ्वी देखना	उन्नति होगी
251.	पहिया देखना	प्रगति होगी
252.	तौलना	समृद्धि बढ़ेगी
253.	पदक	सम्मानित होगा
254.	केतली	गृहस्थ सुखी
255.	कुर्सी	पदोन्नति
256.	चिकित्सक	स्वास्थ्य लाभ
257.	पालना (झूले वाला)	पारीवारिक सुख
258.	पदाधिकारी	पदोन्नति
259.	उद्योग पति बनना	सामाजिक उन्नति
260.	बौना देखना	शुभ दिन आएगा
261.	बौनी देखना	अच्छे दिन आरम्भ
262.	बसीयत	धन लाभ
263.	पुस्तकालय	सहयोग लाभ व सिद्धि
264.	बसीयत लिखना	आयु समाप्त
265.	अजान पढ़ना देखना	समस्याओं का अंत
266.	चुंगी देना	सुख की विदाई
267.	चुंगी लेना	सौभाग्य प्राप्ति
268.	चोर देखना	हानि होगी
269.	चहचहाना	क्लेश मिले
270.	शास्त्रों का पाठ करना	विद्या बुद्धि बढ़े
271.	मृत का आलिंगन	भयकारक
272.	दोस्त का आलिंगन	सौभाग्य लाभ
273.	मन्त्री का आलिंगन	अधिकार लाभ
274.	सैनिक देखना	साहस की बढौतरी
275.	अध्यापक देखना	ज्ञान बढ़ेगा
276.	अध्यापिका	ज्ञान शांति लाभ
277.	धन देखना	चुस्ती फुर्ती बढ़ेगी
278.	नोट देखना	उद्यमी हो
279.	सिक्के	आलसी होंगे
280.	पर्स	गुप्त कार्य हो

281.	गर्भ प्रवेश	विपत्तियाँ
282.	खून की वर्षा	देश में अकाल
283.	राजा का आलिंगन	अभिलाषा पूर्ति
284.	उपनिषद देखना	तर्क बुद्धि बढ़े
285.	रेलवे स्टेशन देखना	लाभदायक यात्रा
286.	शतान देखना	दुःख मिले
287.	शौतान से लड़ना	सुख प्राप्ति
288.	शैतान से प्रेम	धन मान हानि
289.	शैतान पे क्रोध	धन-मान प्रतिष्ठा प्राप्ति
290.	कम्बल देखना	स्वास्थ्य लाभ
291.	पीली बिल्ली	प्रतिकूल समय
292.	काली बिल्ली	अनुकूल स्थिति
293.	सफेद बिल्ली	लाभ की प्राप्ति
294.	चितकबरी बिल्ली	कार्य संवरे
295.	केशरी बिल्ली	सौमाग्य बढ़े
296.	तिराहा देखना	गलत कार्य हो
297.	तिराहे पर जाना	लड़ाई-झगड़ा हो ।
298.	तिराहे से हटना	झगड़े फसाद से बचे
299.	राष्ट्रपति	ऊँचे स्तर की उन्नति
300.	प्रधानमंत्री	सवोच्य अधिकारी मिले
301.	मंत्री	मान-सम्मान लाभ
302.	सिपाही	अनधिकृत कार्य करे

स्वप्न में धर्म मंदिरों को देखने का फल

क्रम सं.	स्वप्न में क्या देखा ?	फल
1.	वेद देखने से	वैराग्य उपजे
2.	रामायण	थोड़ा संघर्ष फिर लाभ
3.	वाईबिल	ज्ञान का उदय होगा
4.	गुरु ग्रन्थ साहिब	धर्म-कर्म में रूचि मिलेगा
5.	कुराने मजीद	सुख-शान्ति, धर्म बढ़े
6.	गीता (ग्रन्थ)	पाप का नाश हो
7.	महाभारत ,,	कोई गलत कार्य होगा
8.	चर्च देखने से	शान्ति प्रदान

9.	गुरु द्वारा ,,	ज्ञान की प्राप्ति होगी
10.	मस्जिद ,,	समस्याओं का समाधान
11.	मंदिर ,,	शुभ कार्य करे ।

स्वप्न में रत्नों के देखने का फल

क्रम	स्वप्न में क्या देखा ?	फल
1.	माणिक्य देखना	अधिकार में प्रगति
2.	मोती ,,	शान्ति की प्राप्ति
3.	पन्ना देखना	धन लाभ हो
4.	पुखराज ,,	द्वेश होगा
5.	हीरा ,,	प्रेम सम्बन्ध व धन बढ़े
6.	मूंगा ,,	रोग, शत्रु नाश
7.	नीलम ,,	उन्नति शीघ्रता शीघ्र
8.	गोमेद ,,	समस्या घटे या बढ़े
9.	लहसुनिया ,,	नाम की प्राप्ति
10.	लाजवर्त देखना	मान की प्राप्ति
11.	फिरोजा ,,	व्यापारी बनेगे

स्वप्न में विभिन्न देवी-देवताओं को देखने का फल

क्रम सं०	स्वप्न में क्या देखा ?	फल
1.	भगवान विष्णु	सफलता मिलेगी
2.	,, ब्रह्मा	प्रसन्नता मिलेगी
3.	,, कृष्ण	प्रेम सौभाग्य प्राप्ति
4.	,, राम	सौभाग्य दायक
5.	,, हनुमान	रोग-शत्रु नाश
6.	,, शिव	शान्ति एवं भक्ति लाभ
7.	भगवती दुर्गा	रोग-शत्रु का विनाश
8.	,, काली	आध्यात्म की प्राप्ति
9.	,, सीता	कष्ट के बाद सफलता
10.	,, राधा	आनंद की प्राप्ति
11.	,, पार्वती	प्रसन्नता की प्राप्ति
12.	,, लक्ष्मी	धन की प्राप्ति
13.	सरस्वती	भविष्य सर्वोत्तम

14.	वीणा	धन की प्राप्ति

स्वप्न में विभन्न प्रकार के रंगों को देखने का फल

क्रम सं०	क्या देखा ?	फल
1.	लाल रंग देखना	रोग का नाश।
2.	हरा ,, ,,	सुख-शान्ति व धन प्राप्ति
3.	पीला ,, ,,	द्वेश ईर्ष्या से मुक्ति
4.	काला ,, ,,	अशुभ समय आया
5.	नारंगी ,, ,,	लाभकारी भविष्य
6.	सफेद ,, ,,	सुख-शान्ति समृद्दि प्राप्ति
7.	नीला ,, ,,	संघर्ष से लाभ
8.	सिन्दूरी ,, ,,	साहस, सौभाग्य की प्राप्ति
9.	लाल और हरा रंग	व्यापार में उन्नति
10.	हरा और काला रंग	धन का नाश आया
11.	काला और सफेद रंग	समस्याएं आयेंगी
12.	लाल और नीला रंग	समस्याओं का समाधान मिले

स्वप्न में विभिन्न प्रकार के तास के पत्तों को देखने का फल

क्रम सं०	स्वप्न में क्या देखा ?	फल
1.	ताशा देखा	धन मिलेगा
2.	ताश का दहला	अवश्य लाभ
3.	ताश की दुग्गी	असमंजस में पड़ना
4.	ताश का चौग्गा	कठिनाई से सफलता
5.	ताश का एक्का	अधिकार की प्राप्ति
6.	ताश का छक्का	प्रेम-प्यार बनेगा
7.	ताश का अट्ठा	संघर्ष करना पड़ेगा
8.	ताश का नहला	साहस में बढोतरी
9.	ताश का सत्ता	बनते कार्यों में विध्न
10.	ताश की तिग्गी	व्यवसाय में सफलता
11.	ताश का पँजा	सूझ-बूझ बढ़ेगी
12.	ताश का गुलाम	चमचागिरी करेंगे
13.	ताश की बेगम	अधिकार की प्राप्ति
14.	ताश का बादशाह	मान-सम्मान मिलेगा।

स्वप्न में धातुओं को देखने का फल

क्रम सं०	स्वप्न में क्या देखा ?	फल
1.	लोहा	आर्थिक परेशानी, रोग बिपत्ति
2.	तांबा	आर्थिक परेशानी एवं दुर्घटना हो
3.	चांदी	प्रेम वियोग एवं धोखा मिले
4.	सोना	परेशानी, रोग, एवं आर्थिक संकट का सामना हो

शकुन-अपशकुन विचार

शकुन की परिभाषा

सृष्टि के समस्त प्राणी अपने कर्मों के बन्धन में बँधे हुए हैं। किए हुए कर्मों के फल एवं करने वाले कर्मफल की शुभता के लिए, उसका प्रतिफल उत्तम पाने के लिए जो "क्रिया" की जाती है उसे ही "शकुन" कहते हैं। प्रकृति का अपना व्यवहार और शैली है, उसमें एक क्रम है और उस क्रम को पूर्वापर को समझना ही शकुन है।

शकुन शास्त्र की व्युत्पत्ति एवं रचयिता

देवी-देवताओं और ऋृषि-मुनियों की पवित्र भूमि भारत में, शकुन को विश्वास और सम्मान बहुत प्राचीन काल से ही दिया जाता रहा है। "त्रेता युग" इस सच्चाई का पूर्ण साक्षी है। गोस्वामी तुलसी दास जी ने रामायण में एक स्थान पर लिखें हैं कि "बैठी शकुन मनावति माता"। इस श्लोकन की। पंक्ति से सार निकलता है कि उन्होंने लोकाचार में व्याप्त "शकुन शास्त्र" से पूर्ण सहमति व्यक्त की है।

शकुन शास्त्री कहते हैं कि इस शास्त्र का उपदेश स्वयं त्रिनेत्र शंकर ने किया है। यहां त्रिनेत्र कहने के पीछे यह आशय है कि उनका तीसरा नेत्र ज्ञान का सूचक है। यही नेत्र का पदार्थ के अन्तस् को और समय की परत के भीतर को देख सकता है तथा शिव हमारे लिए विश्वास भूमि है। उनका वाक्य है-

"स्वंय त्रिनेत्री भगवान गणानाम्
उपादिशत् शाकुन मुत्रमं यत् ॥"

उपदेष्टा [उपदेश देने वाले] रहे हैं और यह ज्ञान ऋषि परम्परा द्वारा पोषित परिवर्धित परिमार्जित होता रहा है । इसके प्रवर्तकों में अत्रि, गर्ग, वृहस्पति, ब्यास, शुक्राचार्य, वशिष्ठ, कौत्स, भृगु, गौतम, आदि ऋषि प्रमुख रहे हैं । भविष्यत का संसूचक होने के कारण यह शास्त्र ज्योतिष का ही उपांग [उपअंग] बन गया !

शकुन शास्त्र की उपयोगिता

शकुन शास्त्र जो सूचना देता है, उसके अनुसार आचरण करने से व्यक्ति प्रतिकूल से बच सकता है और अनुकूल का लाभ उठा सकता है । यही इस शास्त्र की उपयोगिता है ।

शकुन और नियति

शकुन के विषय में यह शंका की जा सकती है कि यदि शकुन इतना प्रभावशाली है तो फिर ''नियति'' का क्या अर्थ होता है ? इस सम्बन्ध में ''बसन्त राज'' का मत है–

पूर्व जन्म जनिंत पुराविद :
कर्म दैवमिति संप्रक्षते ।
उद्यमेन तदुपर्जित तदा
दैवमूद्यमवश न तत्कथम् ॥

अर्थात् प्राचीन लोग पूर्व जन्म में किए हुए कर्म को ही भाग्य कहते हैं । इस दृष्टि में कर्म ही विपाक अवस्था में पहुँचकर नियति बन जाता है । अर्थात् भाग्य कर्म के परिणाम भूत होने के कारण कर्माश्रयी हुआ । फिर हम इस शकुन ज्ञान को उद्यम या प्रयत्न करके भाग्य का रूप क्यों नहीं दे सकते ?

इस शास्त्रीय वचन का स्पष्टीकरण है कि तात्त्विक दृष्टि से कर्म और भाग्य में कोई अन्तर नहीं है । अन्तर उस समय हो जाता है जब हम कार्य कर चुके होते हैं और वह परिणाम का रूप ग्रहण कर लेता है । ऐसी स्थिति में वह हमारे लिए निर्णयक अतएव निर्यात बन जाता है । इस आत्मचरित से मुक्त होना सम्भव नहीं होता, उसे स्थगित अथवा शिथिल किया जा सकता है और ऐसा करने के लिए भी प्रयत्न–कर्म– ही करना पड़ता है अर्थात ''कर्म का उपचार कर्म से'' इस स्पर्धा में नियति और वर्तमान का बलाबल भी विचारणीय रहता है ।

शकुन की मान्यता के अनुसार प्रथम बार विपरीत शकुन होने पर वापस लौट आना पड़ता है, दूसरी बार विपरीत होने पर फिर जाते है, किन्तु तीसरी

बार प्रतिकूल शकुन होने पर यात्रा नहीं करनी चाहिए । यह तीन बार अप शकुन होना क्या भाग्य की प्रबलता का सूचक नहीं है ?

आश्चर्य होता है हमारे ऋृषियों की प्रजा और सूक्ष्म दृष्टि पर कि उन्होंने द्विपदों चतुष्पदों, षटपदों, अनेकों पदों और पक्षियों की चेष्टा, भाव प्रकृति, भाषा आदि का गहन-सूक्ष्म निरीक्षण करके उनके परिणामों का मूल्यांकन किया और सतत् परीक्षण करके हमारे हितार्थ उनका निष्कर्ष हमें दिया ।

शकुन के विचारणीय अवस्था, कार्य क्षेत्र साधन और पौराणिक तथ्य

मुख्यत: शकुन घर से बाहर निकलने पर विचारणीय होते है अथवा हम किसी प्रयोजन से अन्यत्र जाएं तो हमारे इधर उधर या आगे पीछे होने वाली घटनाओं का फलित हमारे लिए विचारणीय रहता है । ऐसा नहीं है कि शकुन का क्षेत्र केवल यात्रा काल तक ही सीमित रहता है ।

घर के भी शकुन होते हैं, ग्राम के भी शकुन होते हैं, आने वाले समय की शुभता अशुभता के सूचक भी शकुन होते हैं । हमारे घर की स्त्रियाँ जानती हैं कि कौआ जब घर की मुडेर पर बैठकर अककर्श ध्र्वान में बोलता है तो हमारे घर पाहुन [मेहमान] आया करता है, अथवा राज में हमारे घर पर उल्लू बैठने लगता है तो एक साधारण आशंका बन जाती है कि घर में कोई अप्रिय घटना अथवा सूनापन छा जाने वाला है । चीटियां बिल से निकलने लगती है [विशेषकर अपने अण्डों को लेकर] अथवा चिड़िया मिट्टी में स्नान करने लगती है तो हम यह अनुमान लगा लेते है कि वर्षा निकट भविष्य में होने वाली है, गाय मकान की छत पर चढ़ जाती है तो किसी अप्रिय घटना की सम्भावना बलवान बन जाती है, छिपकली हमारे शरीर पर पड़ जाती है तो वह जिस अंग पर गिरती है तदनुसार फल प्राप्त होता है ।

पशु पक्षियों के इन व्यवहारों को देखकर किसी भावी का अनुमान लगाना "अन्ध विश्वास" नहीं है ।

इसमें पूर्ण वैज्ञानिकता है ।

अधिकांश पशु-पक्षियों में प्राकृतिक विशेषता होती है जैसे उल्लू यां कोचर जैसे पक्षी रात में देख सकते हैं, मुर्गा प्रात: काल बांग देता है, कौआ चालाक और चेष्टावान् होता है । यद्यपि प्रकृति ने इनके स्वरतंत्र को विकसित नहीं किया, फिर भी इनकी किसी न किसी इन्द्रिय को अतिरिक्त शक्ति दे दी । जिससे यह प्राकृतिक घटनाओं का पूर्वाभास मनुष्य की अपेक्षा शुद्ध और पहले कर लेते हैं । जब कभी ये पशु या पक्षी अप्राकृतिक व्यवहार करने लगते हैं तो

यह मान लिया जाता है कि प्रकृति में अनपेक्षित घटने की पूरी सम्भावना बन गई है । मनुष्यों ने अनेक प्राकृतिक रहस्यों को पशु-पक्षियों से ही जाना समझा है । माना ये जीव अपनी सहज वृत्ति से ही चेष्टारत् रहते हैं, फिर भी उनका हमारे प्रयोजन से सम्बन्ध बन जाता है । इस विषय में अन्तर्द्रष्टा ॠषियों का कथन है कि हमारी नियति ही उन पशु-पक्षियों की चेष्टा विशेष को प्रेरित करती है । यह तर्क अपना कार्य कारण भाव से सिद्ध होती है या नहीं कि उन पशु-पक्षियों के कार्य व्यापार का हमारे प्रयोजन से सम्बन्ध कैसे जुड़ता है- भिन्न विषय है । सूक्ष्म जगत की कार्य प्रणाली बहुत विचित्र है, पर है अवश्य ।

उस कार्य विधि के सारे रहस्य समझना बहुत कठिन हैं । सम्भव है हमारे प्रयोजन से उत्पन्न अदृश्य तरंगे इन पशु-पक्षियों की मनोवृत्ति को इसलिए प्रभावित कर देती हो कि ये बहुत अधिक संवलेदनशील होते हैं और एक कम्युटर की तरह हमारे प्रश्न का उत्तर दे देते हैं । इस प्रकार की कोई भी संगति बिठला सकते हैं किन्तु सबसे बड़ा आधार है विश्वास । विश्वास की शक्ति और दृष्टि को चुनौती नहीं दी जा सकती । उसने जिसको प्रमाणित कर दिया वह अप्रमाणित नहीं हो सकता और उसके लिए यह आवश्यक नहीं कि वह तर्क अथवा युक्ति से सिद्ध ही हो । शकुन शास्त्रियों की स्पष्ट घोषणा है कि शकुन विश्वास करने पर ही फलीभूत होता है । फलीभूत से तात्पर्य यह है कि शकुन जिस परिणाम की सूचना दे रहा है वह अपनी जगह है, पर उसपर जो जितना विश्वास रखता है उसके लिए वह उतना ही सार्थक हो जाता है ।

शकुन के प्रकार

शकुन दो प्रकार के होते हैं-''मंगल-सूचक और अमंगल सूचक'' । मंगल सूचक शकुन भी दो प्रकार के होते हैं । एक प्रायत्निक दूसरा सहज । प्रायत्निक का अर्थ होता है जैसे कोई विदेश जा रहा है अथवा गृह प्रवेश कर रह है । उस समय उनके घर की कोई महिला या कन्या जल भरा घड़ा लेकर सामने आती है तो यह ''सहज'' न होकर ''प्रायत्निक हुआ'' । गृह प्रवेश के समय हमारे घर में जो हवन वास्तु शान्ति, वेदपाठ, नाच गान आदि होते हैं वे मनुष्यकृत शुभ शकुन होते हैं ।

ऐसे ही सम्पन्न जन प्रवास के समय विद्वान ब्राह्मणों को बुलाकर पुण्याहवाचन अथवा स्वस्ति वाचन कराते हैं । यह भी अमंगल नाशक और मंगलकारक उत्तमकिन्तु मनुष्य कृत शकुन माना जाता है ।

''अमंगल सूचक शकुन क्यों कराएगा, ऐसा हमारे पूर्वजों का मत है, किन्तु आज के मनुष्य निकृष्ट मनोवृत्ति और नीच व्यवहार का प्रदर्शन अमंगल कारक शकुन करने में भी होता है । ऐसा करते हुए मैने देखा है, तांत्रिक विधि के द्वारा

लोग तांत्रिकों के द्वारा किसी के लिए अपशकुन भी करवाता रहता है जो धर्म एवं मानवता की दृष्टि से जधन्य अपराध है । मैं व्यक्गित रूप से इस अस्वभाविक प्रक्रिया की उपेक्षा करने के पक्ष में हूँ ।

शकुन की परीक्षा

शकुन की परीक्षा में कुछ ऐसे दृष्टान्त है जिनको आप घटता हुआ देख सकते हैं । अधिक नहीं परीक्षण के तौर पर आप अपने परिवार या इधर-उधर को ही अपनी परीक्षा का विषय बना सकते हैं ।

प्रातः काल उठते ही आप विभिन्न व्यक्तियों का मुंह देखने का प्रयोग करें और उस दिन का विश्लेष्ण करें आप पायेंगे कि उनमें से कुछेक का दर्शन आपके लिए अनुकूल पड़ता है, कुछेक का दर्शन करने से दिन भर अशान्ति, झगड़ा समय पर भोजन न मिलना आदि फल मिते हैं । इन सभी तरह के लोगों का प्रातः काल प्रथम दर्शन करके इस तथ्य की बार-बार परीक्षा कर सकते हैं और जब एक से परिणाम सामने आये तो आप यह मानने के लिए विवश हो कि यह भी एक प्रभावशाली विधि है ।

हमारे शास्त्रकारों ने यही सोचकर प्रातः उठते ही अपने हाथ देखने की देवमूर्ति अथवा गाय जैसे सात्विक पशु का दर्शन करने की व्यवस्था दी है । इसी क्रम से आप पायेंगे कि यह आवश्यक नहीं कि कोई किसी के लिए शुभ और किसी के लिए अशुभ हो जाता है ।

किस स्थिति के शकुन ग्रहण योग्य नहीं

अपने घोंसले में बैठा हुआ, रति और मांस के लिए आतुर अथवा इनमें प्रसक्त, डरा हुआ, मस्त, भूखा और रोगी पशु-पक्षियों के शकुन ग्रहण योग्य नहीं होते । जिनकी ध्वनि से निश्चित हो जाए कि यह अमुक पशु-पक्षी की ही है, उसे बिना देखे भी महत्व दिया जा सकता है । अन्याय आँख से दिखने पर ही विचार किया जाए । जो पशु या पक्षी नदी के दूसरे किनारे पर हो उनको देखकर शुभ या अशुभ का विचार करना बेकार है ।

ॠतु के मुताबिक अग्राह्व शकुन

[ग्रहण करने योग्य नहीं]

निम्नलिखित ॠतुओं में निम्नलिखित पशु-पक्षियों के शकुन ग्रहण करने योग्य नहीं होते । जैसे शिशर ॠतु में घोड़ा, ऊँट, बिलाव, गधा शूकर, स्वर गोश और हिरण । हेमन्त ॠतु में भैंसा, रीछ, सिंह, बिल में रहने वाले सपार्दि चीते का बच्चा और लंगूर । बसन्त ॠतु में कौआ और कोयल, वर्षा ॠतु भाद्रमास में शूकर

और भेड़िया । सावन महीने में हाथी और पपीहा । शरद् ऋृतु में कमल, सारस, क्रौंच पक्षी को भी देखने से शुभत्व का कोई फल नहीं प्राप्त होता ।

अस्वस्थ पशु-पक्षियों के शकुन

किसी प्रकार के रोगग्रस्त, भयभीत, बुढ़ापे के दुर्बलता से ग्रस्त, दीन, मन्द स्वर, कंठ विकार से ग्रस्त कर्कश और रूखे स्वर वाले पशु-पक्षियों द्वारा किया गया शकुन सफलता में बाधक सिद्ध होता है । ये पशु-पक्षी इन स्थितियों में अस्वाभाविक हो जाते हैं, अतः विचारणीय नहीं रहते । इसके विपरीत शान्त, प्रसन्न अपने स्थान में स्थित पशु-पक्षियों द्वारा किया गया शकुन सफलता के द्योतक होता है ।

स्थान एवं समय विशेष के अनुसार पशु-पक्षियों द्वारा शकुन

कुछ पशु-पक्षी जल में निवास करने वाले होते हैं कुछ स्थल पर तो कुछ आकाश में विचरण करने वाले होते हैं । अतः जो पक्षी जिस स्थान का वासी है वह अपने स्थान पर रहकर जो संकेत देता है वह अपेक्षया अधिक स्पष्ट और निश्चित होता है । व्यवहार में भी यदि मेंढक पानी के बजाय सूखी रेत में रहेगा अथवा गाय सिंह की गुफा के पास रहते हुए बोलेगी तो उनमें वह स्वाभाविकता नहीं रह सकेगी ।

रात्रि में बोलने वाले पशु-पक्षी दिन में स्वभावना निर्बल होते हैं, ऐसे ही दिनचर रात्री में निर्बल । इनके पलानु सार ही इनके फल में वृद्धि या नाश होता है । सिंह का गर्जन, हाथी, हिरण, कुक्कुट ये पूर्व दिशा में ही बलवान् रहते हैं ।

कौआ, रीछ, कबूतर, चकवा, उल्लू, कोचर, सियारी, क्रुर शब्द करने वाले अन्य पशु-पक्षी दक्षिण दिशा में मिलना ही शुभता दायक है । सारस हंस, बिलाव, चातक, लोमड़ी, खरगोश, गिद्ध, ये पश्चिम दिशा में बलवान् होते हैं । कमल, नीलकण्ठ, घोड़ा, चूहा, कोयल, और शंखध्वनि उत्तर दिशा में बलवान् माना जाता है ।

समूह एवं व्यक्ति विशेष के अनुसार शकुन फल

इस सम्बन्ध में कहा गया है कि समूह में जा रहे लोगों को जो शकुन होता है, उसका विचार समूह के प्रधान व्यक्ति के अनुकूल प्रतिकूल होने से किया जायगा । जहां कोई प्रधान नहीं अथवा हो भी तो, जो व्यक्ति जिस प्रकार का शकुन देखेगा वैसा ही फल उसे मिलेगा । अर्थात यहां शकुन व्यक्ति के अनुसार फल देने वाला भी हुआ और समूह के प्रमुख के अनुसार भी । सेना के पड़ाव

में मुख्य सेनापति अथवा राजा को होने वाला शकुन उस अभियान की सफलता अथवा विफलता को सूचित करता है । नगर में होने वाले शकुनों का विचार देवमूर्ति को आधार मानकर दिया जाता है, जहां व्यक्ति कार्य से जा रहा है वहां उसे होने वाले शकुन ही विचारणीय रहते हैं ।

पाँच शकुन सम्राट

जिस प्रकार मानवों में बुद्धि व कल्पना का स्तर भिन्न हुआ करता है उसी प्रकार पशु पक्षियों का बौद्धिक स्तर एवं मनः शक्ति भिन्न हुआ करती है । उन्नत मानसिक स्तर वाले पशु-पक्षी शकुन के रहते हैं । इसे इस तरह भी कहा जा सकता है कि नियति की इच्छा को सवाहित करने का इनमें उत्तम गुण होता है । होने को व्यक्ति स्वयं भी अपने प्रयोजन की सिद्धि अथवा असिद्धि का आभाश कर लेता है । ऐसे ही प्रत्येक पशु-पक्षी भी अदृष्ट का परिज्ञाता होता है, पर कोई अधिक दूर तक का कोई किसी विशेष का । इसलिए सभी पशु पक्षियों का शकुन शास्त्र में सभा का महत्त्व नहीं है ।

काली चिड़ियां, कौआ, कुत्ता, कोचर और शियारी ये पांच प्राणी "शकुनों के सम्राट" माने जाते हैं । हमारे ब्रह्मवादियों का विश्वास है कि इन पांचों के अधिष्ठात् देवता क्रमशः सरस्वती, गरूड़ यक्ष, चण्डी और शिवदूती हैं । इन पशु-पक्षियों की हिंसा करने से इसके अधिष्ठात् देवता अप्रसन्न होते हैं । हम जिन पशुओं अथवा पक्षियों को देवताओं के वाहन के रूप में देखते हैं, वे सामान्यता उनके अधिष्ठाता होते हैं । इसलिए स्वभावतः उनका वध या पीड़न करने से वे अधिष्ठात् देवता अप्रसन्न हो जाते हैं ।

शकुन और स्वर

स्वास्थ्य विज्ञाणों के अनुसार हमारे श्वास की गति तीन नाड़ियों में होती है । अनुभव करके देखने से ज्ञात होगा कि कभी हमारी बांयी नाक (नासा छिद्र) से श्वास अधिक आ रहा है तो कभी दायी और कभी दोनों नथुनों से समान । यही चन्द्र, सूर्य और अग्नि स्वर कहा जाता है । जो स्वर हमारे बांये हाथ रहने पर शुभ फल देता है, यदि उस समय हमारे बांए नथुने से श्वास चल रहा होता है तो उत्तम और शीघ्र फल मिलता है ।

शकुन के लिए महत्त्वपूर्ण पशु-पक्षियों की गति, स्वर, दृष्टि, भाव और चेष्टा विचारणीय होते हैं । विभिन्न-विभिन्न प्राणियो की भिन्न-भिन्न बातें हमारे भाविष्य की सूचक होती हैं । यह आवश्यक नहीं कि किसी प्राणी का बोलना शकुन शास्त्र की दृष्टि भी किसी तथ्य की सूचक हो । जिस प्राणी की ये सभी या इनमें से अधिक बातें संसूचक होती है, वह अधिक संवेदनशील होता है ।

वसन्तराज ने अपने वसन्तराज शाकुनि में मंगलाचरण करते हुए कहा है– मनुष्य और पक्षी–बुद्धि की, हाथी–महिमा की, भौंरे–रति सुख की, शरभ–उत्साह की, कनखजूरे जैसे जीव श्रेय की और सर्पादि–भोग की वृद्धि करें। यद्यपि इस क्रम में द्विपद, चतुष्पद, षटपद, अष्टपद, शतपद और अपद वर्ग के जीवों की परिगणना है और ये सम्पूर्ण नहीं तो आंशिक रूप से भविष्यत् की सूचना देने की क्षमता रखते हैं, फिर भी यह माना जा सकता है कि जिस प्रकार प्रत्येक पेड़ पौधा व तुणादि एक औषधी है उसी प्रकार सृष्टि का प्रत्येक जीव किसी न किसी प्राकृतिक विचित्रता और विशेषता से युक्त है। और हमारे पूर्वजों ने उनका सूक्ष्म निरीक्षण करके कुछ निष्कर्ष निकाले हैं। ये निष्कर्ष ही शकुन का रहस्य है। जैसे हाथी को महिमा का प्रतीक माना है। जिस घर में हाथी होगा वह महिमा मण्डित होगा ही। यह दूसरी बात है कि हाथी को किराए पर चलाने वाले की महिमा नहीं बन पाती। ऐसे ही भुजंग अर्थात पेट पर चलने वाला जीव भोग का दाता है। यात्रा में सर्प का दाहिने हाथ मिलना शुभ माना जाता है।

यात्रा प्रयोजन की सिद्धि और सम्पन्नता का भुजंग शकुन होता है।

दिशानुसार शकुनों की महत्ता

घोड़ा और सफेद रंग की वस्तु (आटे और दूध को छोड़कर पूर्व दिशा में जाने पर, मांस और मुर्दा दक्षिण दिशा में प्रयाण करते समय पश्चिम दिशा में जाते हुए कन्या और दही उत्तर दिशा में यात्रा करते समय ब्राह्मण सत्पुरुष और गाये मिले तो उत्तम–फल देती है।

एक शकुन पहले अनुकूल अवस्था में मिले और फिर प्रतिकूल रहे तो अशुभ फल दिया करता है।

जो शकुन बांये अथवा जो शकुन दांए उत्तम फल देने वाला माना जाता है अर्थात जो शुकन एक तरफ उत्तम फल देने वाला रहता है, वह यदि दोनो ओर बांए और दाहिने आवें तो ऐसे शकुन को तोरण कहते हैं। और वह सदा उत्तर फल दिया करता है।

नील कण्ठ, काबरिया, बगुला, कौआ, मीर, खंजन, गीध, तोता, मैना, बाज, गदहा बटेर–इनके शकुन दिन में माने जाते हैं।

कोचर, उल्लू, लोमड़ी, चमचेड़, खरगोश इनके शकुन रात्रि वेला में अधिक स्पष्ट तथा ग्राह्य होते हैं।

मनुष्य, नेवला, विलाव, बकरा, गाय, हिरण, शेर, गीदड़, चीता, सर्प, कोयल, सारस, सूअर ये दिन में और रात में समान रूप से ग्राह्य होते हैं।

जिनका स्वर का शकुन ग्राह्य होता है यदि वे पहले खूब आवाज करे और बाद में मन्द पड़ जाय तो उसे यात्रा में चोर–भय होता है।

विभिन्न प्रकार के शुभ शकुन

दही, घी, दूध, चावल, भरा घड़ा, पका भोजन, सरसों, चन्दन, शीशा, शंख, मांस, मछली, मिट्टी, गौरोचन, गोबर, गाय, शहद, देवता की मूर्ति, वीणा, फल, सिंहासन, फूल, अंजन, गहने, अस्त्र-शस्त्र, पान, सवारी, [हाथी घोड़े आदि] पालकी या चौंकी, ध्वजा, छत्ता, पंखा, अंकुश, कमल, जलझारी, जलती हुई अग्नि, चंवर, रत्न, सोना, चांदी, तांबा, बंधे हुए पशु, दवा, शराब, बनस्पति, नया साग ये सब सदा शुभप्रद रहती हैं। व्यक्ति चाहे शुभ कार्य के लिए जाय या अशुभ के लिए। ये सफलता सूचक रहती है। व्यक्ति को चाहिए कि उनको सामने आता देखकर दाहिने कर ले।

कर्णप्रिय वाद्य की ध्वनि, वेदपाठ इनका सुनाई देना भी शुभ लक्षण है किन्तु ये प्रस्थान के समय आकस्मिक रूप से प्रारम्भ हों तो अधिक उत्तम रहते हैं तथा ये चल रहे हों और हम प्रास्थान करें तो समान्यतया शुभ सूचना देते हैं।

प्रवास करते समय भरा घड़ा सामने से आए तो शुभ रहता है।

राजा, प्रसन्न वदन ब्राह्मण, वेश्या, कन्या, सुन्दर वस्त्र पहने मित्रगण, घोड़े या बैल पर सवार स्त्री या पुरुष, गौखर्ण स्त्री, सौभाग्यवती, श्वेत वस्त्र, श्वेत माला, सफदे चन्दन अथवा किसी सफेद सुगन्धित वस्तुका लेप किए हुए प्रसन्न वदन स्त्रीया भोजन करके तृप्त बाह्मण मिले तो कार्य सिद्ध होता है।

जाते हुए को यदि सामने से फल लेकर आता हुआ मिले अथवा फल लाकर दे तो यह यात्रा प्रयोजन के सिद्ध होने का लक्षण है।

मुकदमा दायर करने के लिए जा रहे व्यक्ति को "मारो-पीटो।" इस प्रकार के शब्द सुनाई दे तो विजय के सूचक माने जाते हैं किन्तु जाते समय यदि कोई कहे-"कहां जा रहे हैं, या मत जाइयें" तो ऐसे वाक्य यात्रा की निरर्थक अथवा विघ्न की सूचना दिया करते हैं।

वर्तमान काल में भी शकुन एक कठोर सच्चाई

पाठकों ! प्रत्येक कार्य के प्रारम्भ में शकुन घटित होता ही है। उसे हम बेशक माने या न माने। घर से यात्रा के लिए जाते समय द्वार पर घर की कन्या या सुहागिन स्त्री मिट्टी के करवे में पानी लेकर खड़ी हो जाती है। किसी भी कार्यहेतु यात्रा के समय जाते समय दही या मिष्ठान्न खाकर ही जाना शुभ माना जाता है।

बातें बहुत छोटी हैं और इनके अर्थ महान, अति महान है।

घर से निकलते ही किसी चीज से वस्त्र उलझ जाए या पांव किसी चीज से टकरा जाए अथवा पीछे से कोई पुकार ले अथवा इस भांति विदा होते समय अनुरोध हो कि ठहरो ! खाना खाकर ही जाना इत्यादि ये सब बातें क्या है ?

यह सब केवल बातें है या इनका कोई अर्थ भी है ?

जी हां ! इन सबका अर्थ है और यह अर्थ धरातल की वह ठोस सच्चाई है जिसे आप माने या न मानें परन्तु प्रस्थान करने पर दुर्घटना या कोई अशुभता अवश्य ही घटित होती है । घर से निकलते ही यदि कोई कौआ तीव्रता से काँव-काँव करने लगे तो जरा यात्रा करके तो देखिए ।

यहाँ मैं यह स्पष्ट करना चाहूंगा कि शकुन बनाये नहीं जाते यह तो प्रभु के प्रसाद के रूप में प्राप्त होते हैं । जिस भाँति कई प्रकार के फल सामग्री मिलाकर प्रसाद बनाया जाय और उसका वितरण किया जाए तो कोई आवश्यक नहीं कि ''अ'' व्यक्ति को बादाम मिला तो ''ब'' व्यक्ति को भी बादाम ही मिलेगा । यह जगत सुख दुख का विशाल सागर है और यहाँ अनगिनत सामग्री मिला करके कुदरत प्रसाद बाँट रही है और किसके हाथ में प्रसाद के रूप में क्या आता है ? यह कोई कैसे जान सकता है ?

ज्योतिषी से प्रत्येक विचार करवा करके यात्रा के लिए प्रस्थान करते समय बिल्ली रास्ता काट जाए तो ज्योतिषी के विचार धरे के धरे रह जाते हैं । यह बात मैं विद्वान ज्योतिषी के विपक्ष में नहीं लिख रहा बल्कि यह सच्चाई है । इस सच्चाई को एक तांत्रिक और ज्योतिषी होने के कारण मैं स्वयं भी स्वीकार करता हूं ।

प्रतिदिन सैकड़ों व्यक्तियों से सामना होता है और उन्हें यन्त्र मन्त्र ज्योतिष आदि की सुविधा प्रदान करने पर भी शकुन-अपशकुन नकारा नहीं जा सकता । शकुन एक सच्चाई है ।

घर से कन्या के विदा होने के बाद, घर वाले अपने घर के किसी भी व्यक्ति को उस दिन सिर नहीं धोने देते । दामाद के विदा होने के बाद उस दिन घर में झाडू नहीं लगाई जाती -यह सब क्यों ? क्या यह पिछड़ापन है ?

सम्भवत वह वर्ग स्वीकार करेगा कि यह पिछड़ापन है, जिसके ऊपर कोई जिम्मेदारी नहीं या वह जिम्मेदारी को स्वीकार नहीं करता-परन्तु विश्वास कीजिए कि यह अशुभ होता है, इसलिए सिर नहीं धोते या सफाई आदि नहीं करते ।

कुछ शकुन मनुष्य स्वयं पैदा करता है और कुछ शकुन स्वयं ही घटित होते हैं । मनुष्य के लिए पैदा किया गया शकुन शुभता के लिए ही होता है जबकि स्वंयं घटित होने वाला शकुन मुनष्य की इच्छा का कैदी नहीं होता ।

घर से प्रस्थान करते समय शुभ शकुन लेकर अर्थात स्वयं निर्मित करके प्रस्थान करें और बायीं ऑख फड़फड़ाने लगे तो आप क्या करेंगे यह तथ्य प्रमाणित करता है कि स्वयं निर्मित किए गये शकुन के आगे अशुभ शकुन मिले

तो शुभ फल नहीं होता। इसका यह आश्य भी नहीं होता कि आप शुभ शकुन का प्रयास ही छोड़ दें।

मुख्यतः घर से निकलने पर ही शकुन विचारणीय होते हैं परन्तु शकुन किसी सीमा से बंधे नहीं है कि केवल यात्रा के हेतु ही शकुन हो। घर द्वार के भी शकुन होते हैं। भविष्य के वर्णन करने वाले भी शकुन होते हैं। गाँव देश, युद्ध, विदेश आदि का भी शकुन प्रस्तुत होता है।

छींक और शकुन

"छींक" को संस्कृत में "थ्तुति" कहते हैं ? शकुन शास्त्रियों ने इसको अत्यन्त महत्त्व दिया है। छींक हमेशा अशुभ फल दिया करती है। अपवाद रूप में ही जाते समय अथवा शुभ कार्य करते समय गाय का छींकना घोर अशुभ का सूचक होता है।

प्रवास के समय पहले एक व्यक्ति छींके फिर दूसरा भी कोई अन्य तो ऐसी छींक निरर्थक होती है। वृद्ध जन की, बालक की कफ से-सर्दी जुकाम से हुई छींक निरर्थक होती है। सोने के पहले भी छींक अशुभ होती है, भोजन के पहले छींक भी अशुभ रहती है किन्तु भोजन के अंत में होने वाली छींक अगले दिन या अगली बार मिष्ठान्न की प्राप्ति करती है।

कहते हैं कोई भी शकुन होने से पहले छींक हो जाय तो शकुन के शुभ होने के बाद छींक हो जाय तो उनके शुभ होने का क्या अर्थ ? अर्थात् एक अकेली छींक सभी शकुनों को उपसर्ग की तरह बोधित करती है। शास्त्रकारों ने छींक का सूक्ष्म विश्लेषण करके इसके दिशानुसार निर्णय किए हैं और दिन के विभाग के अनुसार इसके शुभाशुभ फल बताएं हैं। दिशा का निर्णय उस व्यक्ति की स्थिति के अनुसार किया जायगा, जिसे छींक हुई है या जो किसी कार्य विशेष को सोच रहा है अथवा प्रारम्भ कर रहा है।

दिन के प्रथम प्रहर में होने वाली छींक उत्तर की तरफ हो तो शत्रु भय और पश्चिम की ओर होने पर दूर गमन कराती है, शेष दिया-विदिशा में होने पर अनुकूल फल देती है।

दूसरे प्रहर में होने वाली छींक ईशान कोण में विनाश की, दक्षिण में मृत्यु भय की, उत्तर में शत्रु संगति की सूचना देती है। शेष दिशा-विदिशा में शुभ फल देती है।

तीसरे प्रहर में होने वाली छींक ईशान कोण में होने पर व्याधि, दक्षिण दिशा में विनाश और पश्चिम दिशा में कलह की सूचना देती है, शेष दिशा विदिशा में उत्तम फल देती है।

चौथे प्रहर के पूर्व दिशा में अग्नि भय, आग्नेय कोण में भी अग्निभय, दक्षिण में कलह, पश्चिम में चोरी, वायव्य कोण में दूर प्रवास की सूचक होती है, शेष दिशाओं में अनुकूल फल की सूचना देती है । इस विवरण में उन्हीं दिशाओं और कोणों का उल्लेख किया गया है । जिनमें होने वाली छींक अशुभ सूचना देती है, शेष में होने वाली छींक शुभ फल ही प्रदान करती है । रात्रि के प्रहरों का भी यही विभाजन और यही फल होता है ।

अंगों का फड़कना और शकुन

शकुन विज्ञान के अन्दर अंगों का फड़कन बहुत बड़ा महत्त्व रखता है । यह विषय सृष्टि काल से ही इतना लोकप्रिय रहा है कि घर के बड़े-बूढ़ों से लेकर छोटे-छोटे बच्चे भी इस विषय पर वार्ता करते हैं । आमतौर पर आप इस वैज्ञानिक युग में भी यह कहते हुए सुनते होंगे कि "यार" कई दिनों से मेरी बांयी आँख फड़क रही है पता नहीं क्या अशुभ होने वाला है ?

इस संदर्भ में पुरुष का दाहिना अंग और स्त्री का बाँया अंग फड़ककरके अपनी फड़कन के अनुसार शुभाशुभ फलों को व्यक्त करते हैं तो प्रस्तुत है विभिन्न अंगों के फड़कन का व्यौरा–

सिरः–सिर का फड़कना सफलता का सूचक है । यह क्रिया सिर के पीछे भाग में हो तो मनोकामनाए पूरी होती हैं ।

माथाः–अगर माथे का सम्पूर्ण हिस्सा फड़के तो अत्यन्त परिश्रम करना पड़ता है । यदि दाहिने तरफ फड़कन हो तो यात्रा में विध्न या दुःख प्राप्त होता है और बाँयी तरफ की फड़कन शुभता एवं प्रसन्नता प्रदान करती है ।

गरदन :–गर्दन का फड़कना प्रायः शुभ ही माना जाता है और यह फड़कन रूपवती नारी से भी सर्म्पक कराता है ।

कानः–यदि मनुष्य का बाँया कान फड़के तो मन रिक्न हो जाये और दाहिना कान फड़कने से प्रमोशन प्राप्त होता है ।

भवेंः–यदि भवें फड़के तो समझ लीजिए किसी से प्यार होने वाला है ।

आंखः–बाँयी आँख का फड़कना अशुभता की निशानी और दाँयी आँख फड़कना लाभ और शुभता का सूचक माना गया है ।

पलकः–दाहिनी पलक प्रसन्नता प्रदान करे और बाँयी पलक के फड़कने से घोर विपत्ति से टकराव कराता है ।

गालः–दाहिना गाल फड़कने से लाभ और बाँये गाल की फड़कन ने व्यर्थ व्यय कराता है, परन्तु गर्भवती स्त्री के गाल मध्य में फड़कने से कन्या रत्न की प्राप्ति कराता है ।

नाकः–नाक का फड़कना शुभता का सूचक है ।

मुख:–हर परिस्थिति में मुख का फड़कना लाभदायक सिद्ध होता है ।

जीभ:–जीभ फड़कने से बेवजह का क्लेश पैदा होता है ।

होंठ:–होंठ का फड़कना शुभता का प्रतीक है ।

ठोड़ी:–ठोड़ी का फड़कना प्रसन्नता का परिचायक और शुभता की सूचना प्रदान करती है ।

कन्धे:–दाँया कन्धा फड़कने से उलझन, परेशानी, बाँया कन्धा फड़कने से शत्रु हावी और दोनों कन्धा फड़कने से विवाद पैदा होता है ।

बगल:–दाहिनी बगल फड़कने से सुख-सम्पत्ति लाभ और बाँयी बगल फड़कने से दोनों की हानि होती है ।

बाँह:–दाहिनी बाँह के फड़कने से प्रसन्नता एवं शुभता दे और बांयी बाँह की फड़कन से चिन्ता की उत्पत्ति करता है ।

हाथ:–दाँया हाथ फड़कने से मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति और बाँए हाथ की फड़कन से विरह-वेदना प्रदान कराती है ।

हथेली:–बायीं हथेली फड़कने से हानि परन्तु दायीं हथेली फड़कने से लालच प्रदान कर लाभ दिलाती है ।

पीठ:–पीठ का फड़कना प्राय: परेशानी व अशुभता की निशानी है ।

कमर:–कमर यदि दाहिनी तरफ फड़के तो अशुभ एवं दाहिनी तरफ फड़के तो शुभ फल देता है ।

पेट:–पेट का फड़कना कभी शुभ तो कभी अशुभता प्रदान करता है ।

छाती:–छाती का मध्य भाग फड़कने से लाभ, बाकी भाग फड़कने से हानि होती है ।

नाभि :–नाभि का फड़कना सर्वनाश का संकेत है ।

गुप्तांग :–गुप्तांग फड़कने से विदेश यात्रा होती है ।

पाँव की उंगली:–दाहिने पैर की प्रथम और अतिम अंगुली फड़कने से अशुभ परन्तु बाँए पैर की यही अंगुली फड़केतो हर तरफ से लाभ होता है ।

पगध्वनि:–किसी-किसी आदमी को चलने पर पांव से धप्प-धप्प की आवाज होती है तो संस्कार हीन एवं अशुभता की निशानी है ।

दाँत:–ऊपरी भाग दाँत फड़कने से प्रसन्नता और नीचे का दाँत फड़कने से दु:ख मिलता है ।

पिंडली:–पिंडली फड़कना शत्रु-उत्पन्न कराने का परिचायक है ।

हाथ का अंगूठा :–दाहिना अंगूठा फड़कने से शुभ समाचार मिले और बाँया फड़कने से हानि प्राप्त होती है ।

घुटना :–बाँये घुटने के फड़कन शुभ और दाहिने का फड़कन अशुभता प्रदान कराने वाला होता है ।

टकना --इसका बाँया अंग ही फड़कना शुभ माना गया है ।

पाँवः—दाहिना पांव फड़कने से विपत्ति का नाश और बाँया फड़के तो । सफल यात्रा प्रदान कराता है ।

नितम्बः—इसका फड़कना हर हालत में शुभ माना गया है ।

जांघ :—दाया जांघ फड़के तो शत्रु को बेचैन करे और बाँया जांघ फड़कने से सफलता मिलती है ।

हृदय :—हृदय का फड़कना सदैव अशुभ होता है ।

तिल के निशान और शकुन

ज्योतिष के अंग शकुन शास्त्र में मानव प्राणी के शरीर पर तिल के निशानों का भी शुभाशुभ वर्णन प्रस्तुत किया है, जो निम्नप्रकार है-

माथे पर तिल का निशान—यदि माथे पर बाँये तरफ तिल का निशान हो तो जीवन परेशान दायक परन्तु दाँये तरफ तिल के निशान से प्रसन्नता, सुख समृद्धि एवं धन प्राप्ति करता है ।

ठुड़ढ़ी पर तिल का निशान—यहां तिल ने स्त्री सुख में बाधा और पत्नी प्रेम-भाव में विध्न उत्पन्न करता है ।

छाती पर तिल :—जिस व्यक्ति के छाती पर तिल हो तो सिर्फ दाहिने तरफ होने से शुभ बाँयीं तरफ अशुभता प्रदान कराता है । परन्तु इसी स्थान का तिल स्त्री के लिए अत्यन्त ही लाभप्रद है ।

भौहों पर तिलः—यदि भौहों पर तिल का निशान हो तो वह व्यक्ति सदैव यात्रा करने से ही जीवन गुजारता है ।

आँखों पर तिलः—दाहिनी आँख पर तिल हो तो स्त्री प्रेमी और बाँयी आँख पर हो तो स्त्री से मुसीबतें पैदा होती है ।

नाक पर तिलः—नाक पर यदि तिल का निशान हो तो वह व्यक्ति दुष्ट प्रकृति का होता है और सदैव क्लेश करने में ही व्यस्त रहता है ।

गाल पर तिलः—यदि दाहिने तरफ हो तो शुभ परन्तु बाँये तरफ अशुभता की निशानी है ।

भूजा अर्थात बाहों पर तिलः—भुजा पर का तिल अत्यन्त ही सफलता दायक होता है । यदि दाहिने तरफ हो तो लक्ष्मीवान परन्तु बांये तरफ का तिल धन के साथ पुत्र भी प्राप्त कराता है ।

होठों पर तिल :—इस स्थान के तिल ने व्यक्ति को अत्यन्त लोभी और एय्यास बाज बनाकर रख देता है ।

कण्ठ पर तिल :—कण्ठ पर तिल के निशान वाले व्यक्ति भाग्यशाली हुआ करते हैं क्योंकि ये तिल भक्ति मार्ग पर ले जाकर खड़ा करने वाला होता है ।

कानों पर तिल :–इस स्थान के तिल ने सम्पूर्ण मनोकामनाओं को पूर्ण कराकर रख देता है ।

गर्दन पर तिल :– यहां का तिल आलसी होने का सूचक है ।

हृदय पर तिल :–यहां का तिल व्यक्ति के भाग्य को चमका कर रख देता है ।

करतल अर्थात हथेली पर तिल :–मानव के दोनों हथेलियों का तिल निशान द्रब्य प्राप्ति की सूचना देती है ।

कमर पर तिलः–भविष्य काल में दुखदायक होता है अर्थात् जवानी से लेकर बुढ़ापे तक ।

लिंग पर तिलः–यहां के तिल निशान से व्यक्ति को स्त्री का रसिया बना देता है ।

पेट पर तिल :–यहां के तिल निशान ने सदैव सुस्वादु उत्तम भोजन की उपलब्धि कराते रहते हैं ।

जंघा पर तिल :–इस स्थान के तिल निशान व्यक्ति को भोगी बनाता है ।

हाथ के अंगूठे पर तिलः–इस स्थान के तिल व्यक्ति के मस्तिष्क में "तेज" भरता रहता है ।

पैर में तिल :–इस स्थान के तिल निशान बादशाहियत जीवन एवं उसी प्रकार का सवारी भी प्रदान कराता है ।

अंगुली पर तिल :–इस स्थान के तिल इन्सान को लक्ष्मीवान बनाता है ।

मध्यमा पर तिल :–यहाँ का तिल सुख-शान्ति व सफलता प्रदान कराता है ।

अनामिका पर तिलः–यहां का तिल मानव को विद्या-बुद्धि, कीर्ति एवं धन की उपलब्धि कराता है ।

कनिष्टा पर तिलः–इस स्थान का तिल इन्सान को पुत्रवान एवं धनवान बनाता है ।

हथेली के पीछे तिलः–इस स्थान का तिल ने लोगों को कंजूस बनाकर रख देता है, परन्तु धन उसके पास जरूर होता है ।

मस्सेः–मस्से काले, काला एवं सफेद रंग के होते हैं । सफेद रंग के मस्से प्रायः शुभ फल दिया करते हैं । नाखूनों में सफेद तिल या मस्से जैसा काला दाग होना व्यक्ति के जीवन में सुखों के आगमन की सूचना है । लाल और काले रंग के मस्से-तिल-भी शुभ संकेत हैं, खासकर दाहिने तरफ ।

पंच-शकुन सम्राट का विस्तृत वर्णन

पूर्व पृष्ठों पर उल्लेख आया है कि शकुन के पांच सम्राट माने जाते हैं- काली चिड़िया अर्थात् श्याम चिड़िया, कौआ, कुत्ता और शियारी । इन सभी का दर्शन एवं बोली मानव क्या संकेत देता है, इसका वर्णन प्रस्तुत किया जा रहा है ।

श्याम चिड़िया

यह चिड़िया विभिन्न प्रदेशों में विभिन्न नाम से जाने जाते हैं, परन्तु शकुन शास्त्र में जो इनके नामों का उल्लेख है वे इस प्रकार हैं-

श्यामा वाराही शकुनी कुमारी दुर्गा च देवी चटका तथोमा ।
त्वं पोदकी पांडविका त्यमेय त्वं कृष्णिकां त्वं सितं पक्षिणी च ॥
त्वं ब्रह्मपुत्री शकुनैक देवी धनुर्धरी पाग्थसमूह माता ।
प्रत्यक्षरूपा भगवत्यमोधे नमोस्तु तुम्यं कुरु मेर्थ सिद्धिम् ॥

अर्थात् श्याम चिड़िया के सोलह नाम हैं-श्याम = काली, बराही, शकुनी = शकुन देने वाली, कुमारी, दुर्गा, चटका, उमा, पोदकी जाण्ड़विका, कृष्णिका, सितपक्षिणी, [श्वेत पंखों वाली] ब्रह्मपुत्री, शकुनैक देवी कुनों की माता, धनुर्धरी, पान्थ समूह माता ।

श्याम चिड़िया की आवाज और शकुन

श्याम चिड़िया दस तरह की आवाज करती है-जिसका शकुन फल निम्न प्रकार है-

यदि लगातर ''ची .... ची .... ची ......'' का स्वर सुनाई पड़े तो शुभ फल प्राप्त होता है ।

यदि ''चिरि चिरि'' शब्द सुनाई पड़े तो समझिए कोई विपत्ति आने वाली है ।

यदि ''चिकु-चिकु'' का शब्द उच्चारित करे तो सुनने वाले को दरिद्रता घेर लेती है । यदि श्याम चिड़िया ''कितु ..... कित्'' शब्द करे तो समझिए इच्छित फल मिलेगा ।

यदि इस चिड़िया के चोंच से ''शूलि ..... शूलि'' शब्द करता सुनते हैं तो व्यवसाय में लाभ होता है ।

यदि ''चिलुक-चुलक'' का स्वर सुनाई पड़ता है तो व्यक्ति लक्ष्मीवान होता है ।

श्याम चिड़िया का "चिलि ...... चिलि" शब्द भी शुभता प्रदान करती है ।

यदि "कूचि .... कूचि" शब्द करते सुनता है तो सुनने वाला भाग्यशाली होता है ।

श्याम चिड़िया की आवाज़ों के वर्णन से हम पाते हैं कि उसकी अधिकतर बोली शुभता प्रदायक ही है, ऐसा क्यों ?

ऐसा इसलिए कि "चिलि ..... चिलि" या "शूलि ..... शूलि" शब्द पृथ्वी तत्व का प्रतीक है । कूचि ...... कूचि शब्द तेजस्तत्व का और चिलुक ..... चिलुक ...... ची ...... ची बोल वायु तत्व का प्रतीक है और चिरि ...... चिरि शब्द आकाश तत्व का सूचक है ।

शकुन शास्त्र में अभिरुचि रखने वाले अथवा पक्षियों का अध्ययन करने वाले लोग इस चिड़िया का अध्ययन करें, इसकी विभिन्न अवसरों पर निकलने वाली विविध ध्वनियों का सूक्ष्म निरीक्षण करें तो जिस प्रकार अन्य क्षेत्रों में हमारे वर्तमान विज्ञान के चमत्कारों को स्वीकार करना पड़ा है, उसी प्रकार इस क्षेत्र में भी मान लेना पड़ेगा ।

यह चिड़िया अत्यन्त संवेदनशील है, इसलिए भविष्यत का आभास अथवा इसकी चेष्टा की ध्वनि-विशेष के आधार पर आगामी घटनाओं का पूर्वानुमान किया जा सकता है । इसमें कोई सन्देह नहीं कि प्रकृति ने मनुष्य को बुद्धिमान एवं शारीरिक दृष्टि से उत्तम बनाया है । फिर भी उसने मनुष्य की शक्ति को अनेक प्रकार के तनाव और आग्रह से इस प्रकार दबा रखा है कि उससे ऊपर नहीं उठ सकता । उसकी शक्ति विकेन्द्रित होने के कारण वीदीर्ण रहती है और निकट भविष्यत की वह पंचाङ्ग में देखता है ।

हमें प्रकृति के रहस्यों एवं क्रिया विधि को समझने में पशु-पक्षियों से बहुत सहायता मिलती है । हम ऋणी हैं, इनके और कृतज्ञ हैं उन ऋषियों के जिन्होंने इन वर्गों का सूक्ष्म निरीक्षण करके तथा अपनी दिव्य दृष्टि से निर्णय हमें दिए, जो हमारे जीवन को सुखी व निरोग रखने में सहायक बनते हैं ।

आयुर्वेद के उपदेष्टा ऋषियों ने इनके लिए कृतज्ञता ज्ञापित की है । शकुन के सम्बन्ध में ऋषि चरक, सुश्रृत वाग्भट तथा प्रभुति जी ने कहा है कि सामान्यतया प्रवास में जा रहे व्यक्ति को श्याम चिड़िया का बायीं तरफ बोलना सुफल देने वाला होता है । दाहिनी तरफ बोलना अनिष्टकारी होता है । यही यदि सामने बोले तो प्रवास का निषेध करती है और पीठ पीछे बोलने पर शुभ सूचना अथवा प्रवास की सफलता की सूचना देती है ।

यही श्याम चिड़िया यदि क्रमशः पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश तत्व ध्वनि करती है तो व्यक्ति को कामों में सिद्धि की ध्रुव सूचना देती है । पार्थिव

स्वर के पश्चात् बह्नि अथवा तेजस, तत्व की ध्वनि करने पर अक्षय फल की प्राप्ति होती है ।

पृथ्वी और जल तत्व की सूचक आवाज चिपि-चिपि या शूलि-शूलि एवं कूचि-कूचि शब्द शान्त माने जाते हैं । वायु और आकाश तत्व के शब्द क्रमशः चिलुक-चिलुक या ची-ची एवं चिरि-चिरि होते हैं । ये ध्वनियां उग्र मानी जाती हैं । कीतु-कीतु शब्द तेजस्तत्व का प्रतीक है और यह मिश्रित स्वभाव का माना जाता है ।

यात्रा अथवा किसी प्रयोजन विशेष वश जा रहे व्यक्ति को श्याम चिड़िया प्रसन्न भाव से उत्फुल्ल दृष्टि से देखती या क्रीड़ा करती मिले, सामने की तरफ आवे तो कार्य सिद्धि की सूचना देती है ।

यही पाण्डविका (श्याम चिड़िया) प्रसन्नमुखी होकर चारों ओर देख रही दिखाई देने पर लाभ व काम में सफलता प्रदान करती है ।

दाहिने पंख को खुजलाती हुई दिखे तो शत्रुनाश औ मित्रलाभ कराती है । दाहिने पंख को फड़फड़ाने पर उत्साहवर्धक समाचार, विजय और सफलता की सूचना देती है ।

यदि चोंच या पैरों से अपने बायें अंग को छूती खुजलाती है तो वस्त्राभूषण का लाभ कराती है । यह भोजन की तलाश में दिखाई दे तो कार्य सिद्धि और भोजन को प्राप्त करने झपटकर भोजन पर पहुंचे अथवा भोजन चोंच में दबाये हो तो अतिशीघ्र सफलता, भोजन करती हुई मिलने पर कार्य सिद्धि, रमण करने की इच्छा से युक्त रहने पर स्त्री लाभ कराती है ।

श्याम चिड़िया रूखी-निस्तृण जगह से हरे-भरे स्थान की तरफ जाती दिखे तो उत्तम उन्नति की सूचक रहती है ।

श्याम चिड़िया अपनी ही जाति के अन्य पक्षियों से मिले तो व्यक्ति को स्वजाति वालों से मिलना और अन्य जातीय पक्षियों से मिलने पर युद्ध में विजय प्रदान कराती है । अपने पैर से दाहिने नेत्र को खुजलाकर वह अभीष्ट स्थिति या व्यक्ति का दर्शन कराती है । पूंछ को ऊंचे-नीचे करके प्रेयसी से मिलने की सूचना देती है । प्रसन्नता से नृत्य करती हुई दिखे तो आमोद उत्सव का आयोजन कराती है ।

अपने सामने के हिस्से, उर-स्थान अथवा गुप्तांग का श्याम चिड़िया से स्पर्श करके सुन्दर युवती से समागम की सूचना देती है । पैर से मुंह पर खुजलाहट करके इच्छित भोग की प्राप्ति की सूचक बनती है । निर्जन सरोवर में सानन्द स्नान करती दिखे तो राज्य अथवा भूमि का लाभ होने की सूचना देती है ।

दाहिने ओर प्रष्ट प्रदेश को खुजला कर यह उत्तम वाहन की प्राप्ति कराती है और पैर से सिर को स्पर्श करे तो व्यक्ति को अतिशय अनन्त पद की प्राप्ति कराती है ।

श्याम चिड़िया और अपशकुन

श्याम चिड़िया के शुभ सूचक शकुनों के विवरण देने के साथ अशुभ सूचक चेष्टाओं का विवरण भी दिया जा रहा है । यह प्रकृति की व्यवस्था है कि जो वस्तु कहीं शुभ है वही वस्तु कहीं अशुभ भी है ।

यदि श्याम चिड़ैया टेढ़ी मुंह करके, डरकर या मुह फिराकर जाती है या छुप जाती है तो देखने वाले को किसी से अनावस्यक कलह और उग्र वातावरण की सम्भावना बताती है । यह अलसाई दिखे तो रोग भय, मुंह खुला रखकर जंभाई लेती दिखे तो शत्रु भय, मूत्र या बीट करते दिखे तो धन का सर्वनाश कराती है ।

यह अगर कांपती हुई दिखे तो विपत्ति, पूंछ या पंखों को उखाड़ती हुई दिखे तो बन्धुवों के नाश, निकट आए आहार का परित्याग करे तो ह्सतगत धन के विनाश की सूचना देती है ।

यह श्याम चिड़िया रमण की इच्छा से विमुख हो रही है अर्थात् पुरुष चटक रमणेच्छा से इसके पास आए और यह विरत भाव में दिखे तो स्त्री का नाश अथवा मनोरथ की हानि सूचित करती है । यदि इसे आग अथवा सर्पादि से भय हो रहा हो तो शकुनार्थी द्रष्टा को भी कहीं न कहीं से भय उत्पन्न हो जाता है ।

श्याम चिड़िया बाएं पैर अथवा चोंच से अपने जिन अंगों को खुजलाती है तो देखने वाले को वही अंगों का नाश कराती है । बायां पंख उठता दिखे तो कुल का विनाश की सूचना देती है ।

जब यह किसी प्रवासी को अथवा शकुनार्थी को देखकर रोमांचित होती है तो रोग अथवा सर्प से भय की मिट्टी से स्नान कर रही हो तो विपत्ति की, गन्दे पानी से स्नान कर रही हो तो अनिष्ट की, कीचड़ में लोटती हुई हो तो रोग की, राख में लोट रही हो तो जीवन के नाश की अथवा घर छोड़कर संन्यासी होने की सूचना देती है ।

श्याम चिड़िया मुंह में बाल या हड्डी का टुकड़ा लेकर मिले तो मृत्यु की, लकड़ी मुंह में लेकर आ रही हो कष्ट की, रस्सी मुंह में लेकर आ रही हो तो बंधन की और कोयला लेकर आ रही हो तो कुल क्षय की सम्भावना व्यक्त करती है ।

यदि यह निष्क्रिय दिखाई दे तो पराधीनता की, ऊंचा मुंह किये दिखाई दे तो मरण की, पेड़ से उतरती हुई हो तो धन नाश की, नीचा मुंह किए हुए हो तो अवनति की, पुरुष चिड़िया से दूर भागने पर वियोग की और अपना मुख लकड़ी पर घिस रही हो तो कष्ट की सूचना देती है ।

यदि बाएं हाथ की तरफ गति करती हुई किसी बिल में घुसे तो मरण या मरणान्तक कष्ट प्राप्त होता है ।

चोंच से अपने ऊंचे किए पैर के तलवे को छुवे अथवा किसी लकड़ी पर चलती हुई दिखे तो परदेश या विदेश गमन का संदेश देती है । यदि पति-पत्नी कहीं जा रहे हों और उनके बीच में से श्याम चिड़िया निकले और उनके पीछे-पीछे श्याम चिड़ा निकले तो कार्य सिद्धि में कोई संशय नहीं रहता । इसके विपरीत यदि पहले चिड़ा और उसके पीछे श्याम चिड़िया आए तो कार्य सिद्धि में देर होगी ।

यदि यह चिड़िया नीचे स्थान से ऊपर की तरफ जाती हुई दिखाई दे तो सकुन ग्राही को भी उत्तम फल मिलता है । यदि इसके विपरीत ऊंचे स्थान से नीचे स्थान की तरफ जाए तो अवनति की सूचक रहती है ।

कौआ की चेष्टा, आवाज और शकुन

शकुन शास्त्रों में कौवे की चेष्टा और आवाज शकुन-अपशकुन हेतु अत्यन्त ही प्राथमिकता रखती है । यह किसी का मित्र नहीं होता, न तो इसके ऊपर कभी विश्वास ही किया गया है । क्योंकि ये पक्षी अत्यन्त ही चतुर और धोखेबाज होता है । क्रुरता इसमें इतनी पाई जाती है कि अपने से कमजोर ही नहीं बल्कि बलवान पक्षियों के घोंसले में अण्डे या उनके अबोध बच्चे को भक्षण कर जाता है । इसके घोंसले में अन्य पक्षी कहीं चला जाए तो उसका खैर नहीं । कई बार लंगूर इसके घोंसले वाला डाल पर चला जाता है तो उसे चोंच मार कर परेशान कर देता है ।

कौवे के एक नेत्र होने का इतिहास और शकुन शास्त्र में महत्त्व

कौवे की चेष्टाओं से शकुन-अपशकुन का विवरण प्रस्तुत करने के पूर्व उसके एक नेत्र होने का इतिहास और शकुन शास्त्र में इसका महत्त्व क्यों दिया गया है, इस विषय पर चर्चा करते हैं-

शास्त्रों में वर्णित है कि एक बार इन्द्र के पुत्र जयन्त ने कौवे का रूप धारण

कर लक्ष्मी के स्तनों में चोंच मार दी थी । उससे गिर रही बूंद से जगने पर विष्णु ने देखा तो उनको बहुत क्रोध आया और जयन्त की उदण्डता के लिए उन्होंने ''इषीकास्त्र'' छोड़ा । ज्ञातब्य है कि ''इषीकास्त्र'' का प्रयोग केवल नारायण ही जानते हैं और यह परम दिव्य, अत्यन्त शक्तिशाली और अमोध अस्त्र है । सींक जैसा होने के कारण यह इषीकास्त्र कहा जाता है और आधुनिक मिसाइल की तरह पीछे पड़ जाता है तो छोड़ता नहीं । जयन्त भी इषीकास्त्र से भयभीत होकर चतुर्दिकत्राण पाने के लिए दौड़ता रहा । शिव, ब्रह्मा, इन्द्र आदि देवों ने उसकी सहायता नहीं की और अन्ततः उसे नारायण की ही शरणगति लेनी पड़ी । ''त्राहि माम्'' की अति पुकार पर नारायण ने अस्त्र संचरण करने की बात तो कह दी, किन्तु उनका अंग-भंग करने की अनिवार्यता और शस्त्र की मर्यादा का पालना करने की शर्त भी रख दी ।

जयन्त के कहने पर उसकी आंख पर वह अस्त्र चला दिया और उस अस्त्र की दिव्यता एवं विलक्षण शक्ति का ही प्रभाव रहा कि जयन्त की ही नहीं समग्र काकजाति की एक आंख जाती रही, और भविष्य में भी उसके एक ही आंख होती रही ।

यह पौराणिक आख्यान था, फिर भी काक चेष्टा जग विख्यात है । राजस्थान में ऋषि पंचमी के दिन स्त्रियां थाल में चावल भरके काक को परोसती हैं और जब तक वह चोंच नहीं मारता तब तक वे भोजन नहीं करतीं । काक भूशुंड ऋषि, परम्परा में विश्रुत है ।

शास्त्रों में कहा गया है कि इसको वनौषिधयों का अद्‌भुत ज्ञान है । चितावर की लकड़ी, जिसे स्पर्श कराने मात्र से बड़े से बड़ा ताला खुल जाता है, उसे यही जानता है ।

इस प्रकार की विचित्र परम्परा की कड़ी यह पशु-पक्षी अपनी बुद्वि, व्यवहार, रूप, चेष्टा और ज्ञान के कारण हमारे पूर्वजों के लिए अध्ययन का विषय रहा है । तंत्र शास्त्र में उल्लू के सभी अंगों के विविध उपयोग बताए हैं और कौवे के कई अंगों से कई उपयोगी एवं विलक्षण सफलतादायक कार्यकारी वस्तुएं बनाने के प्रयोग दिए हैं। पहले तो मैं इस पर विश्वास नहीं करता था परन्तु जब इस पर पूर्ण शोध कर प्रयोग किए तो ''रामबाण'' साबित हुआ ।

इस सबके बावजूद कौवे को शकुन की दृष्टि से बहुत महत्व है । भगवान राम के आगमन की सूचना देने के लिए ''तुलसी बाबा'' कौवे को ही उड़ाये थे । अतः शकुन शास्त्रियों ने कौवे को ''शकुन सम्राट'' के रूप में गणना की है और इसका अधिष्ठाता गरुड़ को कहा है ।

कौवे का वर्ण और जाति

शास्त्रों के अनुसार कौवे को चार वर्णों (जाति) में विभाजित किया गया है, परन्तु किसी किसी शास्त्र में इसका पांचवां वर्ण भी माना गया है । जिसे ''अन्त्यज'' कहा गया है । किन्तु मुख्य चार वर्णों का विश्लेषण इस प्रकार है–

1. ब्राह्मवर्णी :–यह कौवा अपनी चेष्ठा के अनुसार शकुन द्रष्टा को तुरन्त फल देता है ।

2. क्षत्रिय वर्णी :–यह शकुन द्रष्टा को तीन दिन में फल प्राप्त कराता है ।

3. वैश्य वर्णी :–ये वर्ण का कौवा द्रष्टा को सात दिन में फल देता है ।

4. शूद्र वर्णी :–इस वर्ण के कौवे ने एवं अन्त्यज वर्ण के कौवे ने शकुन-अपशकुन फल पन्द्रह दिनों में देता है ।

ब्राह्मण वर्णी का रूपाकार–आकार में बड़ा, मोटी और लम्बी चोंच वाला और सघन काले रांग का होता है । इसकी आवाज रूखी, लड़ाकू, वीर, पिंगलवर्ण की आंख वाला, नीली सी चोंच वाला और अत्यन्त चालाक होता है ।

क्षत्रिय वर्णी–इस कौवे का रंग हल्की सी सफेद झलक लिए नीला, नीली सी चोंच और अत्यन्त कर्कश शब्द नहीं बोलने वाला होता है ।

वैश्य वर्णी–इस वर्ण के कौवे का भी रंग हल्का सफ़ेद और नीली झांई लिए होता और अत्यन्त कर्कशा नहीं होता ।

शूद्र वर्णी–राख के सामन इसका रंग, कर्कश शब्द बोलने वाला और लम्बी गर्दन वाला इस जाति का कौवा होता है ।

अन्त्यज वर्णी–यह कौआ भी शूद्रवर्णी लक्षण का ही होता है परन्तु इसकी चोंच पतली होती है ।

शकुन की दृष्टि से सघन कृष्णवर्णी ब्राह्मण वर्ग का कौआ ग्राह्य होता है । यह न मिले तो जिसकी गर्दन काली हो उनसे शकुन लेने चाहिए । सफेद गर्दन वाला कौआ निन्दित है क्योंकि वह अपनी विचित्रता के कारण किसी न किसी उपद्रव की सूचना देता है ।

दिशा और प्रहर के अनुसार काक वाणी का फल

बोलचाल की भाषा में पूरे दिन को चार भागों अर्थात चार ''प्रहरों'' में बांटा गया है–

प्रात: काल को प्रथम प्रहर, दस बजे के बाद दोपहर, एक बजे के बाद तीसरा प्रहर और चार बजे के बाद चौथा प्रहर कहते हैं । इन चारों प्रहरों में काक वाणी का फल का अलग-अलग विधान है जो इस प्रकार है–

पहला प्रहर :–

1. यदि किसी व्यक्ति को पहले प्रहर में काक वाणी पूरब दिशा में सुनाई पड़े तो विजय, स्त्री प्राप्ति, धन की प्राप्ति एवं मनोवांछित फल प्रदान कराने वाली होती है। ऐसा ही फल आग्नेय कोण में अच्छे स्थान पर बैठकर बोलने पर देता है।

2. यदि इसी प्रहर में इसकी आवाज उत्तर दिशा में सुनाई पड़े तो भी धन का लाभ होता है। अत: उस दिन लाटरी आदि का प्रयोग करना चाहिए।

3. प्रात: काल दक्षिण दिशा में रमणीक स्थान पर बैठकर बोलने पर उत्तम फल की सूचना नहीं देता, किन्तु यदि इसकी चेष्टा यदि अच्छी हो तो ठीक रहता है, परन्तु यदि अत्यन्त कटु और कर्कश आवाज करे तो रोग, पराजय, धन तथा जन की हानि पहुंचाता है।

4. इस प्रहर में उत्तर-पूर्व में इसका स्वर उच्चारण शुभता प्रदान करता है।

5. इसी प्रकार यदि उत्तर-पश्चिम दिशा कोण में इसके स्वर सुना जाए तो आशाओं पर कुठाराघात होता है।

6. इस प्रहर में पश्चिम दिशा में बोल रहा कौआ वर्षा की सूचना देता है। स्त्री सुख की प्राप्ति, वस्त्र लाभ तथा प्रियजनों के आगमन की सूचना व्यक्त करता है। इसके साथ पत्नी के साथ नोंक-झोंक हो जाए तो कोई बड़ी बात नहीं।

7. यदि पश्चिम-दक्षिण कोण में इसके स्वर सुने जाएं तो शत्रुओं से समझौता होता है अथवा आशा से अधिक धनागम होता है।

8. इसी प्रकार यदि दिन के प्रथम प्रहर में दक्षिण-पूर्व में इसका स्वर सुनाई पड़े तो शत्रु पक्ष को नारी जाति से पूर्ण सहयोग प्राप्त होता है।

दूसरा प्रहर :–

1. दिन के दूसरे प्रहर में कौवे की आवाज पूरब दिशा में सुनाई पड़े तो अपना जोड़ीदार मिलता है।

2. इसी प्रहर में उत्तर दिशा की तरफ कौआ बोले तो सुख एवं प्रसन्नता प्रदान कराता है।

3. इसी प्रकार दूसरे प्रहर में पश्चिम दिशा से कौवे की आवाज सुनाई दे तो संतान के लिए लाभकारी एवं गुणकारी होता है।

4. दिन के इसी प्रहर में यदि दक्षिण दिशा से काक वाणी सुनाई पड़े तो मान-सम्मान की प्राप्ति होती है।

5. इसी प्रकार पूर्व-उत्तर की कोण दिशा से यदि काक वाणी सुनाई पड़े तो अशुभता प्रदान कराती है।

6. यदि उत्तर दक्षिण दिशा कोण से कौआ वाणी सुना जाए तो पुत्र के लिए शुभदायक होता है।

7. इसी प्रहर में पश्चिम-दक्षिण से काक वाणी सुनने पर उस समय से पूर्ण दिन तक सावधान रहना चाहिए क्योंकि कोई न कोई अशुभ जरूर होता है।

8. इसी प्रहर में दक्षिण-पूर्व दिशा कोण से सुनी हुई काक वाणी लड़ाई-झगड़ा का अभ्युदय करता है।

तीसरा प्रहर :-

1. दिन के तीसरे प्रहर में पूर्व दिशा से यदि काकवाणी सुनाई पड़े तो वर्षा अवश्य होती है। चोरी आदि भय के साथ शत्रु से विजय प्राप्त कराने में भी सक्षम होता है।

2. दिन के इसी प्रहर में उत्तर दिशा की काकवाणी श्रवण व्यक्ति को शुभ फल प्रदान कराता है, उस समय यदि प्रयास करे तो धनागम भी सम्भव है।

3. इसी प्रकार पश्चिम दिशा में कौआ बोले तो शत्रु का नाश, सुख-समृद्धि में वृद्धि तथा मनोकामनाएं पूर्ण कराता है।

4. इसी तरह यदि दक्षिण दिशा से यदि काकवाणी सुनाई पड़े तो मान-हानि एवं अशुभता प्रदान कराती है।

5. यदि पूर्व-उत्तर कोण में कौआ बोले तो रोग, संकट, भय की प्राप्ति कराता है अथवा उस दिन वर्षा भी हो सकती है।

6. यदि दिन के इसी प्रहर उत्तर-पश्चिम दिशा से काक वाणी सुनाई पड़े तो बिमारियों से छुटकारा और धन लाभ कराता है।

7. इसी प्रकार पश्चिमी दक्षिण दिशा की काक वाणी रोग, संकट और विपत्तियों की सूचना देता है।

8. दिन के इसी प्रहर में ही दक्षिण-पूर्व कोण से यदि काकवाणी सुनाई पड़े तो मान-हानि और झगड़ा का वातावरण पैदा होता है।

चौथा प्रहर :-

1. यदि चौथे प्रहर में पूरब दिशा से काकवाणी सुनाई पड़े तो सम्मान की प्राप्ति होती है और कहीं से अशुभ समाचार मिलने का भी संकेत देता है।

2. इसी प्रहर में उत्तर दिशा में यदि काकवाणी सुनाई पड़े तो प्रेमिका से मिलन होता है एवं धन लाभ और यात्रा सफल कराने का भी संकेत है।

3. यदि इसी प्रहर में पश्चिम दिशा से काकवाणी सुनाई पड़ती है तो श्रवण कर्त्ता को ऐसे व्यक्ति से मुलाकात करता है जिससे धन की प्राप्ति हो।

4. यदि चौथे प्रहर में दक्षिण दिशा से काकवाणी सुनने को मिले तो श्रवण कर्त्ता को सावधान हो जाना चाहिए, क्योंकि दुर्घटना होने का संकेत है।

5. यदि दक्षिण पूर्व कोण से काक शब्द सुनाई पड़े तो अच्छे मित्र से मिलन, परन्तु रोगादि का भय बन जाता है।

6. यदि पश्चिम दक्षिण कोण से काक शब्द सुनने को मिले तो घर से नहीं निकलना चाहिए क्योंकि बहुत बड़ा खतरे का संकेत है।

7. दिन के इसी प्रहर में काक शब्द उत्तर-पश्चिम दिशा से सुनाई पड़े तो लाभदायक, बिमारियों से छुटकारा और सुखमय यात्रा होती है।

8. यदि पूर्व-उत्तर कोण से काक शब्द सुनने को मिले तो निराशा हर कार्य में टपक पड़ती है।

शकुन देखते समय कौवे की स्थिति एवं दिशा वर्णन

कौवे का शकुन देखते समय कौवे की स्थिति अर्थात वह रमणीक स्थान पर बैठा है या किसी रुक्ष, दग्ध स्थान पर बैठा है, इसका मुंह उग्र दशा में है या शान्त दशा में, इसकी बोली कार्कश और कर्ण कटु है या सुहाने लायक- यह सब तथ्यों पर विचार करना आवश्यक होता है। कौआ किस दिशा में बैठकर बोलता है इसमें प्रमुख रूप से व्यक्ति अपने को केन्द्र मानकर दिशा का निश्चय करे और घर पे बैठकर बोलते हुए का विचार करना हो तो घर के चौंक से दिशा निर्धारण करना चाहिए।

प्रातः काल भोजन की तलाश में आए कौवे भोजन को देखकर या भोजन के लाभ-लोभ से ग्रस्त होकर आवाज करते हैं वह विचारणीय नहीं रहती। अक्सर नागरिक सभ्यता में रहने वाले कौवे अपनी मान-मर्यादा का, अतएव अपनी नैसर्गिक शक्ति का उलंघन करके अप्राकृत हो जाते हैं। शास्त्रीय दृष्टि से काकमैथुन का दर्शन घोर अशुभ होता है।

कौवे द्वारा घोंसला निर्माण और शकुन

देहाती शाकुनिक कौवे के घोंसले बनाने की क्रिया, समय और स्थान को देखकर आने वाले संवत्सा का अनुमान लगाया करते हैं। मेरा विश्वास है ग्रामीणों का यह विज्ञान व्यवहार सिद्ध तो है ही शास्त्र सम्मत भी है। तो आइए, अब इस पर शास्त्रीय दृष्टि से विचार करें-

1. कौआ यदि बैसाख के महीने में उपद्रवहीन हरे-भरे सघन वृक्ष में घोंसले बनाता है तो आने वाला मौसम अच्छा बीतता है। यदि वह निन्दित,

सूखे और बबूल या खेजड़े जैसे कांटों वाले पेड़ पर बनाता है तो दुर्भिक्ष और अनावृष्टि जैसे उत्पातों की सूचना देता है ।

2. यदि सुन्दर पत्र वाले पेड़ पर पूर्व दिशा की तरफ जा रही डाल पर घोंसला बनाता है तो अच्छी वृष्टि (वर्षा) होती है, फसल बढ़िया होती है, प्रजा निरोग और प्रसन्न रहती है तथा देश की उन्नति होती है ।

3. अग्नि कोण में घोंसला बनाने पर अल्पवृष्टि, अग्नि जनित भय, पड़ोसी देशों से शत्रुता, अकाल की संभावना और पशुओं में रोग होता है ।

4. दक्षिण दिशा में घोंसला बना रहा कौआ आने वाले संवत्सर में अनावृष्टि संक्रामक व्याधियों का भय, अन्न का अभाव और परस्पर विरोधाभाव की सूचना देता है ।

5. नैत्रृदत्य कोण में यदि कौआ घोंसला बनाता है तो आने वाले वर्ष में वर्षा काल की समाप्ति पर वर्षा होती है । फलस्वरूप दुर्भिक्ष होता है, मनुष्यों में बिमारियों का जोर होता है, महाजनों को चोरी का भय होता है, प्रजा में परस्पर वैमनस्य और कलह होती है ।

6. पश्चिम दिशा में फैल रही डाल पर कौवा घोंसला बनाकर समय पर अच्छी वर्षा होने की सूचना देता है और प्रजा में स्वस्थता, प्रसन्नता और सुख शान्ति मिलती है ।

7. वायु कोण में घोंसला बनाता है तो हवायें खूब चलती हैं पर वर्षा बहुत कम होती है, फसल नष्ट हो जाती है, चूहों का प्रकोप बढ़ जाता है, पशु धन की हानि होती है और अपराध में वृद्धि होती है ।

8. उत्तर दिशा में यदि कौवा घोंसला बनाता है तो अच्छी और सामयिक वृष्टि होती है, फल स्वरूप फसल भी बढ़िया होती है, प्रजा निरोग, स्वस्थ और सुखी रहती है ।

9. ईशान कोण में घोंसला बनाकर कौवा अशुभ की सूचना देता है । परिणामतः अल्पवृष्टि होती है, संक्रामक रोग फैलते हैं, लोगों में अपराध वृत्ति होती है और बांधवों में द्वेष होता है ।

10. यदि कौवा डाल में बिल्कुल आगे की तरफ घोंसला बनाता है तो बहुत अच्छी वृष्टि की, बीच में बनाता है तो अल्पवृष्टि की सूचना देता है ।

11. यदि कौवा घोंसला धरती पर बनाता है तो अनावृष्टि, रोगों का प्रसार और शत्रुता की वृद्धि होती है ।

12. सूखे पेड़ पर घोंसला बनाने पर अति वृष्टि से विनाश, मकान की दरार या छेद में बनाकर शत्रुओं से भय, पेड़ की खोधड़ में घोंसला बनाकर अनावृष्टि, प्रादेशिक रोगों का विस्तार होता है । परिणाम स्वरूप कई गांव खाली हो जाते हैं ।

कौवे का बीट एवं स्पर्श फल

शकुन विषय पर बात की जाए तो कौवा शकुन एक विस्तृत क्षेत्र रखता है । इसी कारण इस पक्षी पर अधिक वार्ता हो पाती है । कौवे का बीट अर्थात विष्टा का भी महत्त्वपूर्ण शकुन विधान है तथा उसका स्पर्श फल भी शकुन के मामले में बहुत बड़ा स्थान रखता है, जैसे–

1. कहीं जाते समय यदि कौवा ऊपर से बीट कर दे और वह बीट व्यक्ति के ऊपर आ गिरे तो व्यक्ति के कार्य में पूर्ण सफलता मिल जाती है ।

2. किसी अविवाहित पर वह बीट गिरे तो शीघ्र ही उसका विवाह हो जाता है ।

3. किसी कार्य पर जाते समय कौवा सामने पड़े तो उसे दाना डालें । वह दाना यदि कौआ खा लेता है तो आपका कार्य पूर्ण होगा अन्यथा नहीं ।

विशेष फल :–

1. किसी भी दिन यदि कुछ कौवे लड़ते हुए आएं और पांव की तरफ या पास गिरे तो निश्चित हो जाना चाहिए कि जो भी संकट ऊसके उपर आने वाला था या चल रहा था वह दूर हो गया ।

2. दिन के तीसरे प्रहर किसी व्यक्ति के ऊपर यदि कौआ मंडराते हुए बोले तो समझ ले कि कहीं यात्रा होने वाली है ।

3. कहीं पर बिना कारण ही बहुत से कौवे अचानक एकत्र होकर चिल्लाते हुए मंडराने लगे तो उस स्थान के प्रमुख व्यक्ति प्रधान या मुखिया सरपंच के ऊपर अवश्य ही खतरा उत्पन्न होता है ।

4. यदि किसी दिन प्रात: काल में किसी घर की छत पर कोई कौवा मरा हुआ पड़ा मिले तो उस घर में बहुत बड़ा खतरा हो सकता है । अत: उस घर वाले को चाहिए कि उस मरे हुए कौवे को सम्मान के साथ कहीं ले जाकर दफन कर दे और शान्ति हेतु घर में हवन कराये ।

5. यदि किसी के घर या दरवाजे पर कौवा कोई वस्तु गिराता है तो उसे किसी विस्तु की शीघ्र प्राप्ति होती है ।

6. यदि दिन के चौथे प्रहर कौवा सिर पे मंडरावे तो शुभ समाचार की प्राप्ति होती है ।

7. यदि दिन के किसी भी प्रहर में लोहे पर बैठकर दक्षिण दिशा की तरफ मुंह करके कौवा कर्कश स्वर में बोले तो अशुभ होने की सूचना देता है ।

8. यदि दिन में किसी भी समय सूखी लकड़ी पर बैठकर कौवा बोले तो शुभ सन्देश मिलता है ।

स्पर्श फल :–

1. खुले वातावरण में यदि उड़ते समय अन्जाने अकस्मात ही कौवे का स्पर्श मनुष्य के सिर से हो जाए तो उसका सौभाग्य और शान्ति दुःख की क्रान्ति में बदल जाता है ।

2. यदि राह चलते कौवा कन्धे से टकरा जाए तो उसे शत्रु के समक्ष सिर झुकाना पड़ता है ।

3. यदि प्रातः काल राह चलते कौवा पांव पर किसी कारण से आ गिरे तो तमाम जीवन सुखमय बना देता है ।

4. यदि भोजन करते समय भोजन थाल से कौवा चोंच मारकर खाने का हिस्सा ले उड़ता है तो उसे जीवन में सदैव पराजय का सामना करना पड़ता है ।

5. यदि राह चलते किसी व्यक्ति के सिर पे कौआ कुछ गिरा दे तो लाभ होता है ।

कौवे की विभिन्न प्रकार की बोलियां और शकुन संकेत

कितना विचित्र संसार है पक्षियों की, कितनी विलक्षण शक्ति है भविष्यत के स्पन्दन को अनुभव करने की इन पक्षियों में । यदि हम अकेले कौवे को ही हमारे परीक्षण या अनुभव अध्ययन का विषय बना लें तो उनके रहस्य और विचित्र विलक्षण अनुभव सामने आएंगे । पाठको ! शकुन उसके लिए सार्थक रहते हैं जो उन पर विश्वास करते हैं–"माना तो देव नहीं तो पत्थर ।" परन्तु यह बात कटु सत्य है, ऋषि महर्षियों का अनुभव को कदापि निरर्थक साबित नहीं कर सकते, कि पशु–पक्षी या भविष्यत की पक्की सूचना देते हैं ।

संक्षेप में विभिन्न ग्रन्थों में वर्णित विवेचन के अनुसार यह कहा गया है कि कौआ 32 (बत्तीस) तरह की बोली बोलता है और उन बोलियों के अलग-अलग शकुन फल निकलते हैं, जैसे–

1. यदि कौआ "कोलि ...... कोलि" शब्द करे तो फसल अच्छी होती है ।

2. इसके "कुं ..... कुं" जैसी आवाज लाभ की सूचना देता है ।

3. "कोय ...... कोय" बोलकर राजनेता या ग्राम प्रधान अथवा सरपंच की मृत्यु की सूचना देता है ।

4. "कुरलु ...... कुरलु" बोलता है तो घर में सुख-शान्ति का माहौल पैदा होता है ।

5. इसकी "कु ... कु .... कु" ध्वनि सुनने वाले को मृत्यु का संकेत देती है ।

6. ''क्लेन .... क्लेन'' बोलकर मित्र की मृत्यु दर्शाता है ।

7. ''कुरूत ...... कूरूत'' बोलकर, सुनने वाले को लड़ाई झगड़े का संकेत देता है ।

8. ''कोछुं ..... कोछुं'' बोलता है तो श्रवण कर्ता को शरीर कष्ट पहुंचाता है ।

9. ''कां ..... कां'' बोलना श्रवण कर्ता के लाभ की सूचना देता है ।

10. ''क: .... क:'' बोलना श्रवण कर्ता को राजनेता से सम्पर्क कायम कराता है ।

11. ''कुलु .... कुलु'' की आवाज श्रवण कर्ता की मृत्यु की सूचक है ।

12. ''क्व ..... क्व'' बोलना श्रवण कर्ता को शुभ की सूचना देता है ।

13. ''क्रें ..... क्रें'' जैसी बोली श्रवण कर्ता के लिए धन-लाभ का सूचक है ।

14. ''कौ ..... कौ'' की आवाज घर में चोरी होने की सूचना देता है ।

15. ''क्री .... क्री'' बोलकर श्रवण कर्ता को सुन्दर स्त्री से भोग-विलास करवाता है ।

16. कौवे की ''कोवं .... कोवं'' का आवाज धन, पशु या किसी प्रिय वस्तु के विनाश का सूचक है ।

17. ''कुलं ..... कुलं'' की बोली रांजा से दण्डित करने या कारागार जाने की सूचना देती है ।

18. ''कोई .... कोई'' की आवाज श्रवण कर्ता को कल्याण कराता है ।

19. ''क्लेत .... क्लेत'' बोलकर वर्षा की सूचना देता है ।

20. ''क्रों .... क्रों'' बोलकर मंगलमय, सुख-शान्ति का सूचक बताता है ।

21. इसकी ''केकं .... केकं'' की बोली तूफान या किसी प्राकृतिक प्रकोप की सूचना प्रदान करता है ।

22. ''कोरं ..... कोरं'' बोलकर श्रवण कर्ता को धन लाभ कराता है ।

23. कौवे की ''कुरंट ...... कुरंट'' आवाज श्रवण कर्ता को पदोन्नति की सूचना देता है ।

24. ''करंक .... करंक'' बोलकर कई व्यक्तियों के आगमन की सूचना देता है ।

25. ''करको .... करको'' बोलकर विपत्ति की सूचना देता है ।

26. ''केतं .... केतं'' का स्वर किसी बहुमूल्य वस्तु खोने की सूचना प्रदान करता है ।

27. ''कुरनु ..... कुरनु'' की आवाज धन लाभ कराता है ।

28. ''कूल .... कूल'' की आवाज वस्त्रादि लाभ कराता है ।
29. ''के कं .... के कं'' की आवाज प्रियजन का समागम कराता है ।
30. ''करछि .... करछि'' की आवाज सुख-सम्पदा प्रदान करता है ।
31. ''किल्यू .... किल्यू'' काकवाणी सुनने से मृत्यु समान कष्ट होता है ।
32. ''किपली ...... किपली'' रूपी काकवाणी सुनने से प्रेमिका से प्रेम बढ़ता है ।

इसकी विविध प्रकार की ध्वनियों को टेप करके रखा जाए और उनकी भिन्नताओं को ध्यान से समझा जाए तो संकेतों का अर्थ समझने में पूर्ण लाभदायक सिद्ध हो सकता है ।

कौवों के अण्डों से लाभ-हानि ज्ञान

1. कौवी यदि एक अण्डा देती है तो शास्त्रों में उसे ''वारूण'' कहा जाता है, परिणामतः अच्छी वर्षा, उत्तम फसल और भविष्य का वर्ष हर्षोल्लास में भरा होता है ।

2. दो अंडे देने पर उसे ''अग्नि'' कहा जाता है, परिणामतः वृष्टि कम होगी, खेत में डाला हुआ बीज फलेगा नहीं, उससे प्रजा में दुर्भिक्ष और हाहाकार मच जाता है ।

3. तीन अंडे देना काक के लिए ''वायु तत्व'' की निशानी है, परिणामतः खेतों में डाला हुआ बीज चिड़िया चुग जाती है और फसल अच्छी नहीं होती ।

4. कौवी का चार अंडे देना ''इन्द्र तत्व'' की निशानी है, परिणामतः खूब फसल होती है और प्रजाओं में आनन्द छा जाता है ।

कौवे के द्वारा शकुन

''शास्त्रानुसार'' जब भी कौवे से शकुन प्राप्त करना हो तो पवित्रता पूर्वक (भात) चावल तैयार करें, फिर उसे एक बर्तन में लेकर दहीं मिलायें । दोनों वस्तुओं को मिलाते समय यह मंत्र मन ही मन उच्चारण करें-

मुंक्षे बलं पक्षितु मंत्रपूतं त्वं प्राणिषु प्राशिषि सर्वलक्ष ।
गुप्ते निजां स्त्री भजसे नमोडस्तु तुम्यं खगेन्द्राय सकृत्प्रजाय ॥

तत्पश्चात् दही भात के कटोरे को आंगन में रख दें । जब कौआ उसे खाने आवे तो या खाकर जाने लगे तो उसकी चेष्टा और बोली को शकुन फल निकालें । शकुन फल बोली और चेष्टाओं के अनुसार इस प्रकार है-

1. यदि कौवा दही भात कटोरे के बायीं तरफ आता है, कर्कश ध्वनि करता है, अथवा कटोरे की भोजन सामग्री ग्रहण कर बायीं ओर उड़ जाता है

तो यात्रा अवश्य सफल होगी और यात्रा करने वाला व्यक्ति मनोकामनापूर्ण करके ही वापस आएगा, इसमें कोई सन्देह नहीं ।

2. ऐसे ही यदि दाहिने तरफ आकर भोजन भक्षण कर उड़कर कटोरे के बाएं तरफ आता है तो मधुर शब्द करके उड़ जाता है तो शकुनार्थी प्रयोजन में सफल होकर वापस आता है ।

3. पीठ पीछे उड़ता आता हुआ कौआ यदि कर्णप्रिय आवाज सुनाता है यात्रा करने वाले को पूर्ण लाभ होता है ।

4. यदि शकुनार्थी को राह चलते उड़ता हुआ कौआ दाहिने तरफ से बांई तरफ आ जाए तो कार्य में सफलता की सूचना देता है ।

5. यात्रा करते हुए व्यक्ति के सामने आकर यदि कौवा अकर्कश ध्वनि करता है और आगे-आगे उड़ता है तो कार्य में सिद्धि मिल जाती है ।

6. यदि कौवे को पैर से सिर खुजलाता हुआ शकुनार्थी देखे तो सिद्धि का सूचक होता है ।

7. यदि कौवा उड़कर कुएं पर बैठता है तो यात्री को खोई हुई वस्तु की प्राप्ति होती है ।

8. यदि उड़ते हुए कौवे को कोई भी व्यक्ति नदी किनारे बैठते देखता है तो उसे शीघ्र सफलता मिलती है ।

9. यदि कौआ भरे हुए घड़े या अण्डे पर बैठता है तो दर्शन कर्ता को भरपूर धन की प्राप्ति होती है । परन्तु उसका स्वर मधुर हो ।

10. महल अथवा अटारी पर बैठकर, फसल पकी धरती पर अथवा हरी-भरी धरती पर बैठकर दर्शन कर्ता को धन-धान्य वृद्धि की सूचना देता है ।

11. यात्री या शकुनार्थी के आगे अथवा पीछे की तरफ गोबर अथवा दूध वाले पेड़ पर बैठा हुआ मधुर स्वर में बोलता हुआ, बीट करता हुआ दिखे तो उत्तम खान-पान की प्राप्ति होती है ।

12. मुंह में फल, रोटी, मांस आदि लिए हुए दिखने पर कौवा अभिष्ट सिद्धि का सूचक होता है । इस शकुन के अनुसार मिष्ठान्न भोजन मिलता है और प्रसन्नता का वातावरण बनता है ।

13. जाते हुए व्यक्ति के सामने की तरफ गाय की पीठ पर, दूध, पेड़ या गोबर पर अपनी चोंच रगड़ता हुआ दिखे अथवा किसी और का भोजन छीनता हुआ दिखे तो विविध भोजन प्राप्त होता है ।

14. अनाज, दूध, दही को प्राप्त करके आनन्दित स्वर में आवाज करता हुआ मिले तो अर्थ प्राप्ति की सूचना देता है ।

15. चोंच में सूखा तिनका लेकर मिले तो अर्थ या अन्य किसी वस्तु के लाभ की सूचना देता है ।

16. सुन्दर पत्ते, फूल, कोपल या फलने वाले वृक्ष पर बैठकर यदि काक मधुर स्वर में बोलता हुआ मिलता है तो मनोरथ सिद्धि की सूचना देता है ।

17. पेड़ की चोटी पर बैठकर शान्त स्वर में बोलता है तो स्त्री सुख की प्राप्ति कराता है ।

18. अनाज की ढेरी पर बैठकर बोलता है तो श्रवण कर्ता को धन लाभ कराता है ।

19. गाय की पीठ पर बैठकर बोलता हुआ मिलता है तो द्रष्टा को दूध, दही या स्त्री सुख की प्राप्ति कराता है ।

20. ऊँट की पीठ पर बैठा हुआ मिलने पर कुशल-मंगल करता है ।

21. गधे की पीठ पर बैठा हुआ मिलता है तो शत्रु पैदा करता है ।

22. सुअर की पीठ पर बैठा दिखे तो धन का लाभ देता है ।

23. बैल के पीठ पर बैठा दिखने पर ज्वरादि की संभावना व्यक्त करता है ।

24. शव पर बैठा दिखे तो घोर अशुभ की सूचना देता है ।

25. दाहिनी तरफ बोलता है या दाहिनी तरफ आता है, सामने अभिमुख आता है या सामने से आता हुआ पीछे की तरफ जाता है तो रक्तपात कराता है ।

26. गाय की पूंछ या बांबी पर बैठकर बोलता है तो सर्प दर्शन कराता है ।

27. सामने बैठकर कर्कश स्वर में बोलता है तो हानि कराता है ।

28. पीछे की तरफ बैठकर कठोर स्वर करके मृत्यु भय की सूचना देता है ।

29. मुंह फाड़े हुए किसी भी तरफ दिखाई पड़े तो अशुभ होता है ।

30. यों तो कौवे का बाईं तरफ बोलना या आना शुभ होता है, किन्तु यदि वह बायीं तरफ किसी काठ को नोंचता हुआ दिखता है तो रक्तपात कराता है ।

31. यदि चोंच से किसी सूखी हुई हड्डी को नोंचता हुआ मिलता है तो हड्डी टूटने की सम्भावना और लड़ता हुआ मिलने पर वध की सूचना देता है ।

32. बायीं ओर किसी सूखे पेड़ पर बैठा हुआ मिले तो रोग सूचक होता है ।

33. गीले वृक्ष पर बैठा हुआ किसी पक्षी से झगड़े तो विफलता की सूचना देता है ।

34. सूखे और कांटेदार पेड़ पर बैठकर यदि यह पंखों को धुनता है या कर्कश स्वर करता है तो मृत्यु अथवा मृत्यु के समान कष्ट की सूचना देता है ।

35. पेड़ की टूटी डाल पर बैठा हुआ दिखे तो कारागार जाने की संभावना व्यक्त करता है ।

36. किसी बिल्ली वगैरह पर बैठा हुआ दिखे तो बन्धन की संभावना व्यक्त करता है ।

37. गुलाब के पेड़ पर बैठा हुआ दिंखता है तो कार्य में सफलता मिलती परन्तु किसी से लडाई भी हो सकती है ।

38. रस्सी, बाल, बेल, सूखी लकड़ी, चमड़ा, जीर्ण वस्त्र, पेड़ के छिलके, कोयले, लहूलुहान सिर की हड्डी, इनमें से कोई चीज मुंह में लेकर मिलता है तो पुण्य क्षय और पाप वृद्धि की सूचना देता है ।

39. ऊँचा मुंह करके पंखों को आन्दोलित करता हुआ और कटु स्वर से बोलता हुआ मिलता है तो मृत्यु की सूचना देता है ।

40. एक पांव को सिकोड़ कर अन्यमस्क भाव से सूर्य को देखता हुआ उग्र स्वर में बोलता हुआ दिखाई पड़े तो युद्ध होने की सम्भावना व्यक्त करता है ।

41. हाथी, घोड़े और मनुष्य के सिर पर बैठकर यह मृत्यु की सूचना देता है ।

42. यदि ये किसी व्यक्ति के आस-पास, दाएं-बाएं या चक्राकार घूमे तो भय का कारण बनता है ।

43. रात्रि में बहुत से कौवे एकत्रित हों और आवाज करने लगे तो जनता के लिए विनाश की सूचना देते हैं ।

44. जब कोई मिट्टी से स्नान करता हुआ अथवा पानी को देखकर आवाज करता है तो वर्षा होने की संभावना व्यक्त करता है अथवा जल में स्नान करके मिट्टी पर बैठकर आवाज करे तो भी वर्षा की सूचना देता है ।

45. जिस व्यक्ति के घर पर मध्यान्ह काल में बैठकर कौवा क्रूर शब्द करता है और अंगों में कंपाता है उसके घर चोरी होती है ।

46. यदि कौवा तीखे स्वर में आवाज करे और मुंह में तिनका या पत्ता लेकर बैठे तो आग लगने की संभावना होती है अथवा अन्य प्रकार के दुख होते हैं ।

47. घर पर स्थित व्यक्ति के आगे अथवा यात्रा कर रहे व्यक्ति के दृष्टि पथ में कौवा छांव में बैठकर बोलता है तो लाभ धरती का लाभ बताता है, पानी में बैठकर बोलने पर विपत्ति और पत्थर पर बैठकर बोलता है तो कार्य नाश की सूचना देता है ।

48. यदि चोंच या अन्य अंग पर खून से सना होकर दरवाजे पर बैठकर कौवा बोलता है तो बालक की मृत्यु होती है ।

49. पंखों को फड़फड़ाता हुआ उग्र स्वर में बोलता है तो अशुभ होता है ।

50. ऊपर उड़ता हुआ पंख फैलाकर कौवा कर्कश स्वर करता है अथवा क्रोध में आ कर किसी और कौवे पर चढ़ता है तो घोर अशुभ का सूचक होता है ।

51. किसी घड़े पर बैठकर बोलता हुआ कौवा गर्भवती स्त्री के पुत्र जन्म की सूचना देता है ।

52. यदि किसी कांटेदार डाल को लेकर उड़ता है तो राज सम्मानित व्यक्ति का आगमन होता है ।

53. मन्त्र-ग्रहण, व्यापार प्रारम्भ या खरीद फरोख्त, विवाह-शादी के प्रस्ताव आदि के समय कौवा भरे मुंह, खासकर अन्न, घी, विष्टा या मांस चोंच में दबाकर आता है तो कार्य सिद्धि का सूचक होता है ।

54. कौवे को मैथुन करते देखना अथवा श्वेत काक का दिखना घोर अशुभ रहता है । ऐसी स्थिति में व्यक्ति को ''विपत्ति नाशक सिद्ध यंत्र'' धारण करना चाहिए अन्यंथा सर्वनाश का भय होता है ।

काक शकुन लेने की अद्भुत विधि

इस परिशिष्ठ में कौवे से शकुन लेने का अति विशिष्ठ विधि वर्णित किया जा रहा है । जिसे कौवे से बिल्कुल सत्य और प्रमाणिक शकुन लेना हो वे व्यक्ति अपने निवास स्थान से पूरब-पश्चिम या उत्तर दिशा में ऐसे वृक्ष का पता करें जिस पर रात्रि के समय अनेकों कौवे रहते हों । वृक्ष का पता लग जाने के पश्चात् किसी भी दिन संध्या कालीन बेला में दहीं और चावल मिला कर पिंड (बड़े लड्डू आकार का) बना लें । उस पिंड को लेकर उसी वृक्ष के पास ले जाकर वृक्ष के जड़ में पवित्र स्थान देखकर पिंड रख दें और मन में स्मरण करें कि हे काक भुषुण्डि जी, कल मैं अपने अमुक कार्य की सफलता हेतु शकुन पूछने आऊँगा इसके लिए निमंत्रण के रूप में यह दही चावल का बना लड्डू, आप को समर्पित करता हूँ, इसे स्वीकार करें ।

अगले दिन सुबह उसी पेड़ के नीचे जाकर धरती को साफ करके ताजा गोबर से चौकोर चौंका लगावें । इस चौंके के बीच में ब्रह्मम विष्णु और सूर्य का पूजन करें । पूजन विधि इस प्रकार है-

ऊँ ब्रह्मा नमः, ऊँ विवणवे नमः, ऊँ सूर्याय नमः ।

इस प्रकार गंगाजल, अक्षत, फल, वेलपत्र, वस्त्र, धूप दीप, प्रसाद और दक्षिणा समर्पित करें । यह पूजन करने के लिए पूर्ण षोड़षोपर चार विधि किसी वेदज्ञ पंडित से जान लें फिर पूजन करें । इसके बाद चौकोर में चारों दिशाओं,

दिक्पालों चारों दिशाओं के देवताओं का पूजन करें । इन सभी पूजन से पहले गणपति पूजन अति आवश्यक है । सभी देवताओं के षोड़शोपचार पूजन करने के पश्चात् निम्न मंत्र से खगेन्द्र का आवाहन करें ।

भुंक्षे बलिं पक्षिशु मंत्र पूतं त्वं प्राणिषु प्राणिधि सर्वलक्ष ।
गुप्ते निजां स्त्रीं भजसे नमोस्तु तुम्यं खगेन्द्राय सकृत्प्राजय ।।

तत्पश्चात् फिर वही दही चावल का लड्डू बनाकर बलि दें । बलि देने का मंत्र निम्न प्रकार है–

ओम् इन्द्राय नमः, ओम् यमाय नमः
ऊँ वरूणाय नमः, ऊँ कुवेराय नमः,
ऊँ भूतनाथाय नमः वायसाः बीर्लः गृह्वन्तु में स्वाहा ।

इस मंत्र को बोलकर बलि पिण्डी को रख दें । इन पिण्डों पे गंधपुष्पादि अर्पण कर दें । इसके पश्चात् ''मम कार्यस्य सिद्धि-असिद्धि वा दिशान्तु'' बोलते हुए अपने अभिष्ट कार्य को विचार लें ।

बलि देकर वहां से उठकर थोड़ी दूर हटकर बिलकुल स्थिर खड़ा हो जाएं, जिससे कौवे वृक्ष से उतर कर बलि ग्रहण कर लें । उनके बलि ग्रहण करने से अपने कार्य की सफलता या विफलता का विचार करें।

1. यदि कौवा पूर्व दिशा में बैठकर पिंड़ खाता है तो सफलता और धनागम की सूचना समझे।
2. अग्नि कोण में बैठकर खाता है तो अग्नि भय बताता है।
3. दक्षिण दिशा की तरफ से खाता है तो धन हानि होती है।
4. नैश्रृत्य कोण में बैठकर खाता है तो धन में वृद्धि होगी।
5. पश्चिम दिशा में बैठकर खाने से अभिष्ठ सिद्धि समझे।
6. वायु कोण में बैठकर खाने से अल्पवृ्ष्टि की सूचनाच समझे।
7. उत्तर दिशा की तरफ बैठकर खाता है तो सुख-शान्ति और सफलता का सूचक समझे।
8. ईशान कोण में बैठकर खाता है तो इच्छित कार्य में सफलता मिलेगी।
9. यदि कई कौवे एक बार ही बैठकर पिंड़ खाने लगे तो मिश्रित फल होगा ।
10. यदि ये कौवे बलि को चोंच से बिखेरकर ही चले जाते है, खाते नही तो घोर अशुभ होने वाला है, यही समझे ।

कुत्ते की चेष्टा आवाज और शकुन

''कुत्ता'' कहने को तो जानवर होता है परन्तु आधुनिक युग के मानव

जाति से भी अधिक वफादार प्राणी है । इनकी स्वामी भक्ति जग प्रसिद्ध है। यो गुप्तचर विभाग इसका लाभ अपराधियों की खोज करने में उठाते है और शिकारी के लिए भी यह एक सहायक पशु है। तान्त्रिकों का मानना है कि इनकी आँखे हवा में भी देख सकती है और जहाँ पर कुत्ते का निवास होता है या जो इसे पालता हैउसके घर भूत प्रेत आदि का प्रकोप नही होता ।

कुत्ते की वफादारी की एक प्राचीन कथा

सृष्टि काल से ही कुत्ता जाति ने देवताओं,दानवों, ऋषि-मुनियों एवं मानवों से वफादारी निभाया है। ''शास्त्रानुसार '' पूर्व समय में देवताओं की गाये चराने के लिए ''पणि'' नामक राक्षस जाया करता था । राक्षस ने तो सब दिन देवताओ से दुष्टता की, तो पणि भी कैसे चूकते। एक दिन वे गांयों को चराकर वापस आते समय देव लोक न जाकर किसी पर्वत की गुफा में सभी गांयों को लेकर छुप- गए।

शाम तक '' पणि'' [राक्षस] जब गायों को लेकर देवलोक नहीं पहुँचे ते देवताओं में हाहाकार मच गया क्योकि उन्हे रात में दूध नही मिला । चिन्तित देवगणों ने प्रातःकाल होते ही 'गीध' को बुलाकर आदेश दिया कि जाओ त्रिलोक मे जहा भी देवगण की गायों को लेकर पणि छुपा है,उसे तलाश कर ले आओ।

गीध उड़ता हुआ ढूँढते ढूँढते उसी पर्वत गुफा में पहुच गया जहाँ गायों को लेकर पणि राक्षस छुपा हुआ था। राक्षस पणि देवताओं को देखकर समझ गया कि इसे देवताओं ने मेरी ही तलाश करने यहाँ भेजा है। यह समझकर उसने गीघ राज का खूब सम्मान किया अच्छे अच्छे व्यजंन घी-दूध से बने उसको खिलाए और चापलूसी भरी बातों में विनय किया कि हे गीधराज! आप देवताओं को मेरा या उनकी गांयों का पता नही बताना, आप जब भी इधर आवेंगे तो मैं आपकी सेवा में सदैव तत्पर रहूँगा।

गीधराज खाने के लोभ में वहा दो-तीन दिन ठहर गये फिर देवलोक जाकर देवताओं से बोला- हे देवगण त्रिलोक में आपकी गाये कही भी नही हैं और न ही राक्षस पणि का कुछ पता चला। इस बात को सुनकर देवराज इन्द्र ने अपनी दिव्य शक्ति से देखा तो पता लग गया कि गीध झूठ बोल रहा है, इसलिए उन्होने ''सरमा'' नामक कुतिया को बुलाकर पता लगाने को भेजा । सरमा सूघती-2 पणि राक्षस के स्थान पर पहुंच गई। पणि ने सरमा को देखकर उसकी बहुत प्रशंसा की और चापलूसी भरी बाते की, उसे भी खाने के लिए विभिन्न प्रकार के व्यञ्जन दिए,परन्तु सरमा ने अस्वीकार कर दिया । क्योंकि

कुत्ते की जाति लोभ में आकर अपने मालिक से कभी दगा नही करती । यह उसका सृष्टि काल से ही स्वभाविक गुण चला आ रहा है ।

तब राक्षस पणि से खुशामद करते हुए कहा कि तुम देवताओं को हमारा और गायों का पता नही बताना, मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ। इस पर सरमा(कुतिया) बोली ऐ पणि! तुमने देवताओं से विश्वासघात किया है परन्तु मैं ऐसा कदापि नही कर सकती,अपना खैर समझो तो मेरे साथ ही गायों को लेकर चलो और देवताओं को सौप दो अन्यथा इसका परिणाम बहुत बुरा होगा। सरमा की इस बात पर राक्षस नाराज हो गया और उसे मारने को दौड़ा। सरमा जैसे-तैसे भागकर देवताओं को पणि के कुटिल नीति और गायों को लेकर पर्वत की गुफा में छुपने की जानकारी दी। तत्वश्चात् देवगणों ने पणि को मारकर गायों को देवलोक ले आए।

देवराज इन्द्र जब वापस आए तो गीध पर अति क्रोधित हो गए और शाप दिए कि अरे गीध तूने खाने के लोभ में देवताओं से झूठ बोला मैं तुझे शाप देता हूँ कि आज के बाद युग-युगान्तर तक खाने हेतु तुझे मरा पशु ही प्राप्त होगा और तुम्हारा दर्शन भी किसी के लिए अशुभ होगा। कर्तव्य निष्ठा पर खुश होकर तभी सरमा को वरदान दिये कि ऐ सरमा, तूने आज देवगणों का अपने सच्चे कर्तव्यों से दिल जीत लिया है अतः तुझे वरदान देता हूँ कि जन्म जन्मांतर तक मानव जाति तुझे अपने घर सम्मान के साथ रखेगा और तुम्हारी जाति सदैव मानव का वफादार साबित होगा ।

कुत्ते के विभिन्न नाम

''स्वामी भक्ति'' गुणों के अनुसार देवताओं ने कुत्ते के 14 नाम दर्शाये है- कुत्ता, श्वा, श्वान, भल्लु, सरमासुत, सारमेय, कोलेचक, कपिल, जागरुक, मंडल, कुक्कुर, यक्ष और शुनक।

कुत्ते में भौकने की आदत क्यो?

न्यायाधिकरण ने कुत्ते की साक्षी को वैधानिक महत्व भले ही न दिया है, किन्तु खोजी कुत्ता की बुद्धि से और अनुसंध्धान शक्ति से पुलिस से अनेक असम्य अपराधों का रहस्योद्घटन किया है।

यह घ्राण जीवी है,''सोमतत्व'' के अनुपात को यह अच्छी तरह जान सकता है। भय के आवेश से सोमतत्व नष्ट होता है और सोमतत्व की कमी से यह उत्तेजित होता है। इसलिये डरने वाले या डर कर भागने वाले व्यक्ति के पीछे यह अधिक भौकता है। चोरों में भी भय अधिक होने के कारण सोमत्त्व

की कमी हो जाती है। इसलिए यह पहचान कर लेता है। इसके अलावा प्रेतों,पिशाचों, और यमदूतों का भी यह देख लेता है। प्रेत विधा विशार दे का यह विश्वास है कि प्रेतग्रस्त घर में कुत्ता रहे तो वह उसे देखकर भौकने लगेगा तथा उसके भौकने से प्रेत की शान्ति भंग होगी और वह वँहा से भाग जायगा।

कुत्ते की दो प्रमुख चेष्टाएँ

कुत्ते की तीन प्रमुख आदते है। (1)भौकना (2) भोजन कम चबाकर ही निगल जाना और(3) सोने से पहले उस स्थान का चक्कर काटना।

जिसमें भौकने की आदत इनमें क्यो है,इसका वर्णन वर्णित कर चुका, अब कम चबाकर ही भोजन निगल जाने की क्रिया पर विचार करे।–

पूर्व समय में कुत्ता मूलत जंगली पशु था। जब यह जंगल में रहता था तो समूह में शिकार करता था और समूह में ही खाया करता था। समूह भोजनऔर पशु का लोभ से उसमे चबा-चबा कर खाने से यह कम खा पाता।ऐसी स्थिति में उसने खाने की बजाय निगलना शुरु कर दिया।

सोने से पहले चक्कर काटने के सम्बन्ध में प्राणि शास्त्रियों का कहना है कि जब यह जंगल में घास में रहा करता था तो घास इस जाति को चुभा करती थी, इसलिये चारों तरफ घुमकर यह ऊँची घास को झुकाकर या रोंदकर इस तरह कर लिया करता था कि वह चुभे नही।

इनमें अन्वीक्षण का परिणाम है और कुत्ते में ये आदते आज भी विद्यमान हैं।

कुत्ते की चेष्टाएँ और शकुन फल

1. यदि कुत्ता दाहिने पैर से दाहिना अंग खुजलाता है या छूता है तो दर्शनार्थी को उत्तम फल प्राप्त होता है। किन्तु बाँए पैर से दाहिने अंग खुजलाकर निष्फलता की सूचना देता है।

2. यदि शकुनार्थी के आगे कुत्ता अपने दाहिने अंग को किसी खंभे या दीवार से रगडता है तो शीघ्र विवाह होता है और लड़की सुखी विवाहित जीवन बिताती है ।

3. यदि किसी व्यक्ति के समक्ष कुत्ता दाहिना पैर उठाकर घड़े पर पेशाब करता है तो उसकी लड़की या बहन शीध्र विवाहित होती है और उसे भाग्यवान् सन्तान की प्राप्ति होती है।

4. यदि कुत्ता अपने बाँये अँगों को कंपाता हुआ घर में घुसता है तो लड़की अपने दुषित आचरण के कारण विवाह के बाद भी सुख प्राप्त नही करती।

5. यदि कुत्ता बाये पैर से नाक को खुजलाता है या नाक को जमीन में रगड़ता है या बांयी ओर घूमकर टेढा चलता है तो शकुनार्थी कन्या या दर्शनार्थी कन्या विधवा हो सकती है।

6. यदि शकुन लेने वाले के सामने कुत्ता विष्टा करे,वमन करे, अथवा बांये पैर से खोपरी, बांबी, राख आदि को खोदने लगे तो घोर अशुभ की सूचना होती है।

7. विवाह सम्बन्धी शकुनार्थी के समक्ष यदि कुत्ता किसी कुतिया की योनि सूघने लगे तो प्रस्तावित कन्या की योनि अच्छी नहीं होती । यदि वह रतिक्रिया करने लगे तो दोनों का विवाह उत्तम फल देने वाला रहेगा । दोनों में परस्पर प्यार सम्बन्ध सदैव कायम रहेगा ।

8. शकुनार्थी कन्या पक्ष के सामने बाँये पैर से जीभ के खुजलाकर वर के भोग-प्रिय होने की और जीभ से बाँये पैर को चाटकर वर के यात्रा द्वारा जीविकोपार्जन करने की सूचना देता है।

9. परीक्षा देते जाते हेतु विद्यार्थी के दाहिने तरफ यदि कुत्ता गुजरता है तो वह पास हो जाता है और यदि बॉयी तरफ गुजरता है तो फेल होने की संभावना रहती है ।

10. किसी शकुनार्थी को देखकर यदि कुत्ता मधुर स्वर में आवाज करता है, तो उत्तम फल मिलता है ।

11. यदि कुत्ता चन्द्रमा को देखकर प्रसन्न होता हुआ मधुर शब्द में आवाज देता है तो शुभता मिलती है ।

12. कुत्ता यदि अपनी जीभ से दाहिने अंग को चाटता है तो दर्शनार्थी को लाभ की सूचना देता है । इसी प्रकार यदि जीभ, दांत अथवा नाखूनों से दाहिने अंग को छूता है तो भी दर्शनार्थी को सफलताएँ मिलती है ।

13. यदि कुत्ता अपनी दाहिनी आँख से देखते हुए नाभि को चाटता है अथवा मकान की छत्त पर चढ़कर सोता है तो घनघोर वर्षा की संभावना होती है ।

14. यदि कुत्ता अपने पेट को पांव से छूता है तो लाभ, हृदय को छूता है तो अति लाभ होने की सूचना व्यक्त है ।

15. यदि कुत्ता आसमान को देखकर जम्हाई ले या ऑखों से ऑसू गिराए तो अच्छी बरसात के कारण भरपूर अन्न की उपज होती है ।

16. यदि व्यक्ति किसी भय कारक या चिन्ताजनक स्थितियों से ग्रस्त होकर कुत्ते का शकुन लेता है और कुत्ता उसे देखकर आलस्स पूर्वक जम्माई लेने लगता है अथवा विष्टा करता है तो व्यक्ति भय या चिन्ता से मुक्ति पा लेता है। शुभ प्रश्न में ऐसा करता है तो फल हानिकारक मिलता है।

17. बरसात के दिनों में यदि कुत्ता घास-फूस पर चढ़कर अथवा घर की छत पर चढ़कर ऊँचे स्वर में रोता है तो अति वृष्टि होती है । यदि वर्षा ऋतु से भिन्न समय में ऐसी चेष्टा करता है तो रोग, आग-आदि से लोग परेशान होते है।

18. यदि शकुनार्थिनी कन्या को देखकर कुत्ता पेशाब को सूंघता या चाटता है तो पति पत्नी में विवाहोपरान्त अत्यन्त प्यार बढ़ता है । यदि जीभ से बॉये गलफडे को चाटता है तो कन्या का भावी पति रसोइये का काम करने वाला होता है ।

19. यदि शकुनार्थिनी कन्या को देखकर बांये पैर से गाल, आँख-कान को खुजलाये तो कन्या अपने पति गृह में जाकर राजकुमारी की तरह सुख व प्रेम से जाती है ।

संक्षिप्त में इस प्रकार मानें कि यदि शकुनार्थी पुरुष है तो कुत्ते की दाहिने अंग की चेष्टाएँ, यदि कन्या है तो बाँये अंग की चेष्टाएँ शुभ फल प्रदान करता है ।

20. किसानों को खेत में हल व बीज ले जाते समय यदि कुत्ता बाँये मिले और वापस घर आते समय दाहिने मिले तो फसल खेतों में बहुत अच्छी होती है ।

21. जुआरी व्यक्ति के जुआ खेलने जाते समय यदि कुत्ता, कुत्ती के साथ लीला विलास करता है तो जुए में जीत होती है ।

22. जुआ खेलने जाने वाले व्यक्ति के दाहिनी तरफ यदि कुत्ता अंगडाई लेता है, नींद लेता है, विष्टा या वमन करता है तो जुए में पूर्ण धन प्राप्त करता है ।

23. यदि कुत्ता कहीं से भागता हुआ आकर किसी खम्भे से लिपट जाता है अथवा चूल्हे पर चढ़ जाता है तो घर में प्रेमी व्यक्ति केआने की सूचना देता है ।

24. किसी वेश्या से सम्भोग करने के लिए जा रहे व्यक्ति के दाहिने तरफ और वेश्या किसी धनवान से धन लाभ के निमित्त जाय तो उसके बाँयी ओर जाये तो उसके बाँयी तरफ कुत्ते का मिलना या चेष्टा करना शुभ माना जाता है। इसके विपरीत स्थिति होने पर फल अशुभ होता है।

25. कुत्ता दरवाजे पर अपने पैरों को खुजलाता है तो किसी मेहमान के आने की सूचना देता है। स्मरण रहे यदि कुत्ता सदैव दरवाजे पर ही बैठता हो तो ऐसी बात नही होती।

26. कुत्ता गर्भवती स्त्री को देखकर,उसके दाहिने जाकर अच्छे स्थान पर बैठकर पेशाब करने लगता है तो उसे पुत्र रत्न की प्राप्ति,और बांये ऐसा करता है तो पुत्री को जन्म देती है। पेशाब के अलावा प्रसन्न मुदरा में यदि कोई अन्य चेष्टाएँ करता है तो गर्भपात की संभावना व्यक्त करता है।

27. यदि बहुत से कुत्ते सूर्य को देखकर जोर से भौके या रोवे या वमन करे अथवा सिर व कानों को हिलावे तो भारी विपदा आने का संकेत देता है।

28. यदि आपसे दाहिने तरफ कुत्ता मीठे स्वर में बोल रहा है या साफ जगह में पेशाब कर रहा है तो कार्य सिद्धि का संकेत देता है।

29. यदि किसी व्यापारी के दाहिनी तरफ पांव से दाहिने ही अंग को खुजलाता है या छूता है तो व्यापार में प्रगति करने की सूचना देता है।

30. कान या पूंछ से कटा हुआ रोगी-कुत्ता जा रहे व्यक्ति को बार-बार देखे तो अपशकुन बताता है।

31. यदि कोई नौकर की तलाश में या नौकरी की तलाश में जा रहा हो और कुत्ता दाहिनी तरफ से गुजर जाय तो सफलता का संकेत देता है।

32. पलंग, आसन, छत्ता और अग्नि पर पेशाब करे तो लक्ष्मी घर में आती है।

33. यदि अनेकानेक कुत्ते किसी स्थान पर खड़े होकर मायूस दिखाई दे तो आस पास के लोगों को लड़ाई झगडा और मुकदमे बाजी का संकेत देता है

34. आटा छानने वाला छननी, उखल, मूसल और सूप पर कुत्ता पेशाब करता है तो दर्शनार्थी को बेवजह धन मिलता है ।

35. यदि किसी यात्री के आगे कुत्ता मुंह में पत्थर दबाये हुए आता है तो विपत्ति सूचक होता है।

36. यदि कुत्ता अपने पैरों से मिट्टी उछालता है या हड्डी मुँह में पकडकर भौंकता है तो घनघोर अशुभ की सूचना है।

37. यदि कुत्ता ऊँचे स्थान पर खडा होकर दाहिने पैर से सिर को खुजलाता है तो दर्शनार्थी के कार्य सिद्ध होने का सूचक है।

38. यदि कोई यात्री अपने किसी कार्य के लिए जा रहा हो और कुत्ता अपने स्थान पर बैठे-बैठे उसे आँखे फाडकर दिखता मिले तो कार्य पूर्ण हो जाता है।

39. यदि कुत्ता किसी यात्री को देखकर बैठे-बैठे ही गर्दन उठाकर देखता है तो शुभ और यदि कान हिलाता या फडफडाता है तो अपशकुन समझे अर्थात कार्य्र सिद्ध नही होगा।

40. ग्रीष्म ऋृतु में छांह में बैठकर यदि कुत्ता उग्र रुप में आसन लगाकर बैठा है तो समझो लड़ाई झगड़े की सूचना दे रहा है।

41. यदि अनेक कुत्ते मिलकर गॉव में कर्कश स्वर में भौकते या रोते . है तो ग्राम प्रमुख की मृत्यु हो जाती है।

42. जिसके घर में कुत्ता आसमान, बिष्टा या गोबर के अधिक देर तक देखता रहता है तो उसे स्त्री सुख और धन के साथ प्रसन्नता की प्राप्ति होती है।

43. जिस प्रकार ड़ंडा मारने पर कुत्ता रोता है यदि उसी प्रकार आवश्यक ही रोवे या कई कुत्ते मण्डल बनाकर दौड़े तो भयानक संक्रामक रोग वहॉ पर फैलने का संकेत देता है।

44. यदि कुत्ता धरती पर अपने सिर को रगड़ता हुआ दिखता है तो उस स्थान पर गड़े धन की सूचना देता है।

45. यदि कुत्ता मकान की दीवार को खोदता है तो उस घर में चोर भय का संकेत देता है।

46. यदि अनाज के स्थान पर घर को कुत्ता फोड़े तो धन प्राप्त होता है।

47. संघ्या के समय यदि कुत्ता सूर्य की तरफ मुंह करके भोकता है तो किसानों को क्षति पहुचती है,वायु कोण में मुख करके बोलने पर चोर,आंधी-तूफ़ान आने का संकेत देता है।

48. शेष शरीर बाहर और मुख दरवाजे के अन्दर करके यदि कुत्ता अपनी मालकिन पर भौकता है तो उसे बीमार होने का संकेत देता है। इसके विपरीत सिर को बाहर करके भौंकता है तो उसकी मालकिन चरित्रहीन है- ये सूचना देता है।

49. यदि आधी रात में उत्तर दिशा की ओर मुंह करके भौकता है तो ब्राह्मण जाति पर मुसीबतें,गायों की मृत्यु और गर्भिनी नारी को गर्भपात की सूचना देता है।

5. दर्शनार्थी यदि कुत्ते को बायां घुटना सूघतें देखे तो धन लाभ,दाहिना देखे तो स्त्रियों से क्लेश,बाई जाघ को सूघकर सुन्दरी से गमन एंव दाहिना सूंघकर दोस्तों से दुश्मनी की सूचना देता है।

51. यदि शकुनार्थी को देखकर कुत्ता सूर्य की तरफ मुंह करके विष्टा करे तो कार्य में असफलता मिलती है।

52. यदि कुत्ता किसी के दोनों हाथों को सूंघता है तो चोरों या शत्रुओं से सामना का संकेत और यदि मांस अथवा खाने की वस्तु को राख में छुपाता है तो आग लगने की सूचना देता है।

53. रात्रि के समय यदि गदहे और कुत्ते एक जगह एकत्र हो जाय तो गांव में उजाड़ होने की सम्भावना व्यक्त करता है।

54. यदि रात्रि के समय कुत्ता श्मशान भूमि में भौके तो वहां के क्षेत्र के किसी नेता की मृत्यु होती है।

55. यदि कुत्ता वृक्ष के नीचे खड़ा होकर भौंकता है तो अति वृष्टि होती है।

56. मुख्य द्वार पर खड़ा होकर भौके तो पीड़ा और पलंग या खाट के नीचे बैठकर भौके तो सोने वाले को बीमारी सूचना का संकेत देता है।

स्मरण रहे–किसी घर में पालतू कुत्ता हो तो वह जाने-आने वाले को स्वभावतः सूघां करता है अतः उसपर शकुन फल का कोई असर नही होता।

57. गोबर के चौकें पर यदि कुत्ते या उसका जोड़ा आनन्दित होकर किलोल करता हो अथवा भोंग करता हो तो विपुल धन प्राप्ति की सूचना देता है।

58. यदि दर्शनार्थी रोगी है और देखता है कि कुत्ता शरीर फैलाकर नींद में मुंह फाड़कर लार निकाल रहा है तो वे अपना जीवन अन्तिम समझे।

59. यदि यात्री दयनीय अवस्था में एक नेत्र से आंसू बहाता हो तो दर्शनार्थी के घर में दुःखद समस्या पैदा होती है।

60. यदि यात्री को राह में सामने से मुंह में विष्टा या वस्त्र का टुकड़ा अथवा कोई अच्छी वस्तु लेकर शवान आता दिखाई पड़े तो यात्री को शुभ होने की सूचना देता है।

61. कुत्ता हल्दी, गेरु या मांस से लिप्त मुख होकर भौंकता है तो सोने की प्राप्ति,पुष्प या फल पर दृष्टि डालकर भौंकने से खजाने की प्राप्ति,पेड की जड़ में पत्तों से खेलता मिले तो सुख प्राप्ति, खून सने मुंह मिले तो भूमि की प्राप्ति और दाहिने पैर से सिर खुजलाये तो लाभ का संकेत देता है।

62. यात्रा करते व्यक्ति के बांयी तरफ यदि कुत्ता थोड़ी दूर जाकर वापस आ जाता है तो यात्री के अपने कार्य में सफलता मिलती है।

63. इसी प्रकार यात्रा ही करते समय सामने की तरफ से क्रीड़ा करते प्रसन्न मुख हो कुत्ता यात्री के पांव पर आकर लोटने लगता है तो अत्यन्त लाभ होता है।

64. कुत्ता यदि मुख में किसी प्रकार का फल पक़डकर घर में प्रवेश करता है तो पुत्र की प्राप्ति कराता है।

65. यात्री के बांयी तरफ ऊँचे स्थान से उतरकर नीचे स्थान को जाते हुए यदि कुत्ता मिले तो यात्री को अपने कार्य में असफलता की सूचना देता है।

66. यदि किसी रोगी के समक्ष दोनों ऑक एवं कानों को नचाते हुए कुत्ता रोता है तो रोगी की मृत्यु की सूचना देता है।

67. यदि रोगी के मुख व नासिका को कुत्ता चाटता है तो रोगी की मृत्यु दस दिनों में हो जाने का सूचक है।

68. यदि यात्री को सूंघकर कुत्ता उसके साथ-2 चले अथवा चलने के पश्चात् अपना सिर खुजलावे तो यात्री को मनोरथ पूर्ण होने का संकेत देता है।

69. यदि काले कुत्ते को छोड़कर अन्य कुत्ता फूलों को मुंह में दबाकर भागता हुआ मिले तो अशुभ होने की सूचना देता है।

70. यात्री के सामने से मुख में जूता दबाकर यदि कुत्ता सामने आता है या सामने से गुजरता है तो धन हानि,यदि आकर समक्ष खड़ा हो जाता है तो धन प्राप्ति कराने का संकेत देता है।

71. यात्री के समक्ष गायों के साथ क्रीड़ा करते हुए यदि कुत्ता मिले तो मनोकामना पूर्ण होती है।

72. यात्री के समक्ष जलती लकड़ी मुहं में दबाये यदि कुत्ता आता है तो उसके मृत्यु की सूचना देता है।

73. यदि जलती लकड़ी बुझी हुई मुंह में दबाकर आवे तो यात्री को एक्सिडेन्ट होने का संकेत देता है।

74. यात्री के सामने यदि मानव शरीर का कोई टुकड़ा मुँह में दबाकर आता है तो भूमि लाभ की सूचना देता है।

75. यदि पालतू कुत्ता कुतिया के साथ क्रीड़ा करता है तो मित्रों से मिलन यदि अनेक कुत्ते-कुत्ती एक साथ क्लिोल करते हुए मिले तो घर में आन्नद की प्राप्ति होती है।

76. यदि कुत्ता बगल या सामने से किसी को काटने दौड़ता है तो रक्तपात जैसी अप्रिय घटना को सूचित करता है।

77. यात्रा कर रहे व्यक्ति को पीछे से यदि कुत्ता नाखून अथवा मुख से उसके कपड़े खीचें तो भयानक अनर्थ की सूचना और यदि सामने से यह क्रिया करे तो शुभ होने की सूचना देता है।

सियारी और शकुन

शकुन शास्त्र के अन्दर सियारी की आवाज और चेष्टाएँ शकुन के अन्तर्गत अत्यन्त ही महत्व रखता है। शियार अर्थात गीदड़ वन पशुओं में अति चालाक जानवर होता है,क्योंकि यह तीव्र बुद्धि का होता है। इसी कारण से इसे जंगली जानवरों ने ''पंडित'' की संज्ञा दी है।शास्त्रों में वर्णित है कि जब-जब भी वन्य पशुओं पर किसी प्रकार की विपत्ति आई है तो इसी के मशविरे से छुटकारा प्राप्त हुआ है। इनमें पुरुष वर्ग सियार से शकुन नही प्राप्त होता। शकुन ''सियारी'' से प्राप्त किया जाता है,जिसकी आवाज शियार से हल्का और पतली होती है।

सियार को तांत्रिक शास्त्र में –''शिवा'' कहते हैं और तांत्रिक लोग विशेष प्रकार के अनुष्ठानों में –'' शिवावलि'' का प्रयोग करते है और इसकी आवाज से अपने अभिष्ट कर्म की सफलता या विफलता का शकुन लिया करते हैं। जरायम पेशा जातियाँ आज भी सियारी की बोली के शकुन को बहुत महत्त्व देते है और उसका अर्थ भी अच्छी तरह समझते है। इसकी बोली और चेष्टावों के अनुसार जो शकुन प्राप्त होता है वो निम्न प्रकार है–

1. यदि दिन के प्रथम पहर में ईशान,पूर्व व अग्नि कोण दिशा में सियारी बोलती है तो अशुभ माना जाता है,परन्तु यदि दूसरे प्रहर में पूरब,अग्नि कोण व दक्षिण दिशा में बोलती है तो और भी भयंकर विपदा का संकेत देती है।

2. यदि दिन के तीसरे प्रहर में अग्नि कोण,नैत्रृदृव्य कोण में बोलती है तो उपरोक्त फल की ही सूचना देती है।

3. इसी प्रकार के फल रात्रि के प्रथम पहर में नैत्रृदत्य कोण,पश्चिम, वायब्य कोण और उत्तर दिशा,रात्रि के तीसरे पहर में वायब्य कोण,उत्तर व ईशान कोण में तथा रात्रि के चौथे प्रहर में उत्तर,ईशान व पूरब में बोलकर देती है।

इसके विपरीत दिन के प्रथम प्रहर में दक्षिण, नैत्रृदत्य, पश्चिम, वायब्य और उत्तर दिशा में,दूसरे प्रहर में नैत्रदृत्य, पश्चिम, वायब्य, उत्तर व ईशान कोण में, तीसरे प्रहर में पश्चिम, वायब्य, उत्तर, ईशान व पूर्व दिशा में,चौथे प्रहर में वायब्य, उत्तर, ईशान, पूर्व में आरम्भ में बोलती है तो श्रवण कर्ता को खुशखबरी,धनप्राप्ति के अवसर व प्रियजनों से मिलन होता है।

4 ऐसे ही रात्रि के प्रहारों में जिन दिशाओँ में इसका बोलना अशुभ माना जाता है उनके भिन्न में बोलती है तो ऊपर लिखे शुभ शकुन माने जाते है और तदनुसार ही अनुकूल फल मिलते है ।

5. ऊपर जिन प्रहारों में सियारी का बोलना अशुभ माना गया है वे सूर्य के प्रभाव से दीप्त कहलाती हैं और जिनमें शुभ फल मिलने की बात कही है,वे शान्त दिशा कहलाती हैं ।

6. शान्त दिशा में सियारी के एक बार बोलने पर धन प्राप्ति, दो बार बोलने पर इच्छावों की पूर्ति, तीन बार बोलने पर लाभ,चार बार बोलने पर अति लक्ष्मी प्राप्त,पांच बार बोलने पर परम शुभ, छः बार बोलने पर भय नाश और सात बार बोलने पर श्रोता को सम्पूर्ण सुखों की प्राप्ति करवाती है ।

7. यदि दिप्त दिशा में एक बार बोलती है तो भयानक स्थिति, दो बार बोलने से धन का विनाश,चार बार बोलने पर प्रियजनों से विद्रोह, पाँच बार बोलने पर भय की सूचना, छःबार बोलने पर कार्य में बाधा, और सात बार बोलकर श्रोता को अनेका नेक विपत्तियों की सूचना देती है ।

8. शकुनार्थी के घर से या जहां पर वो स्थित है,उससे पूरब मे यदि सियारी एक बार बोलती है तो अर्थ प्राप्ति,दो बार बोलने पर खजाने की प्राप्ति,तीन बार बोलने से इच्छावों की पूर्ति, छः बार बोलने पर कानून से भय,सात बार बोलने पर अति भय और आठ बार बोलने से धनहीन होने की सूचना देती है।

9. सियारी यदि पश्चिम दिशा मे एक बार बोलती है तो भय, दो बार में हानि तीन बार बोलने से राज्य के दूतों का आगमन,चार बार बोलने पर हानि,पांच बार बोलने पर चोरी का भय, छः बार बोलने पर राज्य पक्ष से भय, सात बार बोलने पर भी भय और आठ बार की बोली निरर्थक जाता है।

10. अग्नि कोण में यदि सियारी एक बार बोलती तो भय,दो बारबोलने पर राजभय,तीन बार बोलने पर भी भय,चार-पाँच-छः-सात बार बोलने पर भी कलह-क्लेश और उसकी आठ बार की बोली निरर्थक होती है।

11. सियारी नैर्ॠत्य कोण में यदि एक बार बोलती है तो ग्रामीणों को संकट,दो बार बोलने पर पशुओं का विनाश, तीन बार बोलने पर मृत्यु समान कष्ट,चार बार बोलने पर मनुष्यों एवं पशुवों को हानि पॉच बार बोलने पर कानून का भय, सात बार बोलने पर शत्रु से भय और उसकी आठ बार की बोली निरर्थक होती है ।

12. सियारी दक्षिण दिशा में एक बार बोले तो शुभ,दो बार की बोली अशुभ,तीन बार पर असाध्य रोगों की सूचना,चार बार बोलने पर प्रिय मिलन, पांच बार बोलने से पुत्र एवं छः बार बोलने पर कन्या की प्राप्ति, सात बार बोलने से भयानक स्थिति की सूचना और आठ बार की बोली व्यर्थ समझा जाता है।

13. वायु कोण में एक बार बोलने या दो बार बोलने पर शत्रु भय, तीन बार बोलने पर वर्षा,चार बार बोलने से अति वृष्टि,पांच बार बोलने से बादलों से आकाश घिरे,छः व सात बार बोलने से भय की सूचना, परन्तु उसकी आठ बार की बोलने से कोई अर्थ नही रखता।

14. यदि दक्षिण दिशा में सायंकालीन समय जाते हुए यात्री के समक्ष सियारी बोले तो उसकी मृत्यु की सूचना देती है।

15. यदि उत्तर दिशा में सियारी एक बार बोले तो समाज में किसी की मृत्यु,दो बार बोले तो शत्रु भय तीन बार बोले तो बाह्मण की हत्या, चार बार बोले तो क्षत्रिय की हत्या,पांच बार बोलने पर वैश्या वध,छः बार बोलने पर शूद्र का विनाश, सात बार बोलने पर भी शत्रु भय, परन्तु आठ बार की बोली बेकार होती है।

16. यदि दक्षिण दिशा में जा रहे यात्री के पीछे की तरफ से सियारी बोलती है तो यात्रा में मृत्यु दायक कष्ट उत्पन्न होता है।

17. यदि ईशान कोण में सियारी एक बार बोले तो आसमान बादलों से घिरे, दो बार बोले तो वर्षा, तीन बार बोले तोअति घनघोर वर्षा,चार बार बोले तो तीव्र मेघ गर्जना व ओलावृष्टि, पांच बार बोलने पर किसी की मौंत, छः बार बोलने पर भूमि की प्राप्ति, सात बार बोले तो भयानक परिस्थिति और उसकी आठ बार की बोली सदैव निरर्थक समझे।

18. यदि पश्चिम दिशा जा रहे यात्री को रात के चौथे पहर व दिन के प्रथम व द्वितीय प्रहर में सियारी सामने समक्ष होकर बोलती है तो अति शुभ और इनसे विपरीत समय में बोलती है तो गलत कार्यो मे सफलता मिलती है।

19. यदि पूर्व दिशा की ओर जा रहे यात्री के सामने सूर्य की ओर देखकर सियारी बोलती है तो यात्रा में कष्ट और विध्न बाधाएँ उत्पन्न होती हैं ।

20. पूरब की ओर जाते यात्री के पीठ पीछे यदि सियारी बोलती है तो अर्थलाभ व मनोकामनाएँ पूर्ण होने की सूचना देती है ।

21. पश्चिम दिशा में जाते हुए यात्री के दाहिने तरफ यदि सियारी बोलती है तो महा अनर्थ की सूचना देती है ।

22. दक्षिण दिशा में जा रहे यात्री को रात के समय यदि सियारी दाहिनी- बोलती है तो विपुल सम्पत्ति प्राप्ति की सूचना देती है।

23. पश्चिम दिशा में जा रहे यात्री के तीसरे प्रहर से दिन के दूसरे प्रहर तक यदि सियारी बायी तरफ बोलती है तो कार्यसिद्धि सूचक समझे।

24. इसी दिशा में यदि यात्री के पीछे की तरफ बोलती है तो धन विनाश सूचक बोल समझे।

25. दक्षिण दिशा में जाते यात्री को तीसरे प्रहर में अथवा संध्याकालीन वेला में यदि सियारी बायी तरफ बोलती है तो धन-प्रासि,भूमि प्राप्ति और सरकारी पद पाने की सूचना देती है।

26. संध्याकालीन वेला में उत्तर दिशा जाते हुए यात्री के पूरव तरफ यदि सियारी बोलती है तो मनोरथ पूर्ण का सूचक होता है।

27. मध्याह्न के समय उत्तर दिशा जाते यात्री के पीछे पीछे यदि बोलती है मृत्यु समान कष्ट व धन नाश होने की सूचना है।

28. यदि उत्तर जाने वाले के सामने की दिशा में सियारी बोलती है तो यात्रा सफल होता है।

29. यात्री के दाहिने ओर फिर बायें ओर यदि सियारी बोलती है तो अर्थलाभ के साथ कार्य सिद्धि का संकेत है।

30. यदि सियारी गॉव के मध्य में आकर जोर-जोर से आवाज करती है तो गॉववासियों को घोर संकट में फंसने की सूचना देती है।

31. यदि संध्याकालीन समय में क्रूर स्वर में सियारी गॉव की सीमा पर तीन दिन तक बोलती रहे तो युद्ध और पराजय का संकेत देता है।

32. यदि किसी के घर के पास अर्द्ध रात्रि में लगातार पांच दिन आकर सियारी बोले तो घर में चोरी होने की सूचना देती है।

कोचर पक्षी और शकुनफल

कोचर पक्षी का दूसरा नाम पिंगला भी है। यह रात्रिचर पक्षी मांस भक्षी होता है। शक्ल से यह उल्लू जैसा छींददार पंखों वाली होती है। उल्लू के तरह ही इसे रात को दिखाई पड़ता है और दिन में किसी वृक्ष के धोधड़ या सूने मकान के अन्धेंरे कोने में छिपकर बैठती है। इसकी विशिष्ट विशेषता है कि रात के समय किसी व्यक्ति को देखकर आवाज़ करने में चूक नहीं सकती।

कोचर का लिंग व अवस्था ज्ञान

बड़ी चोंच वाला हल्के पीलें रंग का धुर्धुर बोलने वाला पुरुष एवं भारी शरीर अधिक बोलने वाली स्त्री जाति की होती है। बाल्यावस्था में तांबे रंग का चोंच छोटी पूछ और मेंढक की तरह उछल-उछल कर चलता है। जो वृद्ध हो जाता उसकी आवाज मोटी और भारी होती है, धूसर रंग मोटी जांघ तथा दयनीय आवाज करने वाली गर्भवती होती है ।

कोचर के स्वरों की पहचान

कोचर रात्रिचर पक्षी है, इसकी चेष्टा आदि दिखते नहीं इसलिए इसके शब्द को ही शकुन में महत्ता दी गई है ।

जिस प्रकार श्याम चिड़िया के शब्दों का पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश तत्वों का प्रतीक मानकर विवेचन किया गया है उसी प्रकार तात्विक वर्गीकरण कोचर के स्वरों का भी किया गया है । किन्तु इसके और श्यामा के बोलने की शैली भिन्न है । इसलिए इसके बोलने का वर्गीकरण स्वर की आवृत्ति के अनुसार किया गया है ।

मुख्य रूप से पांच स्वर तक यह बोला करती है जैसे-

चिल......चिल......चिलिज, चिलि.....चिलि......चिलि, चिलिल ये क्रमशः एक से पांच-पांच मात्रा तक ही ध्वनियां है और पृथ्वी तत्व की सूचक है ।

इसी प्रकार जल तत्व सूचक स्वर है-किचू, किच, किचिचि, किंचि,

किचि......किचि.....किचिचि । ये भी क्रमशः एक मात्तिक से पंचमात्तिक तक विस्तारित हो जाते हैं ।

तेजस् तत्वीय ध्वनि कुकू, कुकुक...कु-कु-कु-कु-कु-कु ये ध्वनियां मात्रागत वृद्धि की प्रतीक है पर सम्बद्ध है तैजस तत्व से ।

चिच् चिच् चिचु, चीचुचि, चीचु-चीचु, चिच चिुच चिर्चाचय इस प्रकार की ध्वनिया वायु तत्व की प्रतीक हैं । इसी तरह चिक् चिकचिक, चिक चिकचिक इत्यादि ध्वनि आकाश तत्व की प्रतीक है ।

प्रसन्न होकर वार्तालाप करते समय पृथ्वी तत्व के स्वर में, कामातुर होकर जल तत्व के स्वर में तथा सन्तुष्टि में तेजस तत्व का स्वर निकालता है । क्रोधित अवस्था में वायु तत्व और शोक युक्त स्थिति में आकाश तत्व का स्वर करता है ।

पूर्व और दक्षिण दिशा में पृथ्वी तत्व का स्वर बलवान रहता है । पश्चिम और उत्तर दिशा में जल तत्व का स्वर, अग्नि कोण में तेज़स तत्व, वायब्य कोण में वायु तत्व का स्वर और नैत्रृत्य तथा ईशान कोण में आकाश तत्व का स्वर बलवान रहता है ।

1. यदि शकुनार्थी को देखकर पिंगला पक्षी अपने अंग को देखता है तो मित्र लाभ की सूचना देती है ।

2. यदि दो पक्षी एक दूसरे के कान में चोंच आदि रगड़ते हैं तो दर्शनार्थी को उत्तम भोजन प्राप्त होता है ।

3. यदि पिंगला पक्षी मुंह को खुजलाए तो उत्तम भोजन, वक्ष स्थल को खुजलाए तो प्रियजनों से मिलन, चोंच से पैर खुजलाए तो आभूषण लाभ और विदेशों से धन की प्राप्ति होती है ।

4. चोंच से या पैर से बांए अंग को खुजलाए या दाहिने पैर से बांए अंग को खुजलाए तो अशुभ फल देती है ।

5. यदि शकुनार्थी को देखकर अथवा प्रश्न करने पर उड़ जाती है तो प्रवास कराती है और चुप रह जाती है तो यात्रा का निषेध करती है ।

6. यदि शकुनार्थी यात्री को देखकर पिंगला अपने मुंह में कोई भोज्य वस्तु लेकर जिस दिशा में उठती है उस दिशा में यात्री की यात्रा शुभ फल देता है ।

7. यदि शकुनार्थ को देखकर पिंगला किसी भोज्य पदार्थ को लेने दौड़ती है, उसे पकड़कर खा लेती है और वापस आ जाती है तो यात्रा सम्पन्न करता है और लाभ प्राप्त करके वापस लौटता है ।

8. यदि पिंगला शकुनार्थी को देखकर किसी भोज्य वस्तु को प्राप्त करके दूसरे पेड़ पर बैठकर खाती है और वही बैठी रह जाती है तो प्रवास करने वाला व्यक्ति विदेश में प्रचुर धन कमाता है और वहीं बस जाता है ।

9. यदि कोचर यात्रा कर रहे व्यक्ति के पहले बाई तरफ और फिर दाहिनी तरफ बोलती है तो पहले लाभ और बाद में हानि होती है ।

छिपकली और शकुन

छिपकली से हम सब परिचित हैं, क्योंकि यह प्रत्येक घर में पाने वाला एक जीव है । हमारे घरों को विषैले कीड़े-मकोड़ों से सुरक्षित रखने वाला यह जीव स्वयं ही अत्यन्त विषैला होता है । सम्भवतः इसके शकुन पर बहुत कम ही विचार किया जाता है परन्तु यह मानना ही पड़ेगा कि इस जीव के द्वारा दिये गये शकुन तथा संदेश शत् प्रतिशत सत्य प्रमाणित होते हैं । इसके शकुन फल निम्न प्रकार हैं-

1. यदि सिर के ऊपर छिपकली गिरती है तो समाज में मान प्रतिष्ठा, यदि सिर के मध्य में गिरे तो थोड़ी कम प्रतिष्ठा परन्तु व्यक्ति कुछ रोगी हो जाता है।

2. यदि छिपकली ललाट पर गिरे तो सगे-सम्बन्धियों से सम्पर्क और शुभता की प्राप्ति होती है ।

3. यदि यह जीव नाक के नोंक पर गिरे तो अत्यन्त अशुभ परन्तु बाँयी नाक पर गिरे तो शुभता का सूचक है ।

4. यदि छिपकली दांये गाल पर गिरे तो शुभ, बांए गाल पर गिरना अशुभ माना गया है ।

5. यदि यह जीव गर्दन पे गिर जाय तो समझिए कि आपके शत्रुवों का विनाश निकट आ गया है ।

6. दाहिने कन्धे पर छिपकली गिरे तो राज्य सम्मान, कार्यों में सफलता परन्तु बांए कन्धे पर गिरने से विपरीत फल देता है ।

7. यह जीव यदि हाथ या हथेली पर गिरे तो कार्यों में सफलता एवं शुभता की सूचना देता है ।

8. इसके पांव पर गिरना शुभ और अंडकोश पर गिरना अशुभता की निशानी है ।

9. जांघ पर गिरे तो विजय दिलाता परन्तु दाहिनी जांघ पर गिरना हानिकारक है ।

10. छिपकली यदि पेट के मध्य नाभि पर गिरे तो बुरे दिन समाप्त हो जाते हैं ।

11. यह जीव यदि पेट के किसी अन्य भाग पर गिरता है तो सौभाग्य वर्द्धक माना जाता है ।

12. यदि यह जीव पीठ पर गिरता है तो व्यक्ति के साथ कोई छल करता है।

13. छिपकली यदि कान पर गिरे तो शुभ परन्तु कनपटी पर गिरना अशुभता की निशानी है।

14. यदि किसी स्त्री के स्तन पर गिरता है तो पुरुष से रमण कराता और पुत्र रत्न की प्राप्ति होती है।

15. छिपकली यदि नीचे से शरीर पर चढ़े तो शुभ यदि ऊपर के तरफ से गिरकर शरीर पर नीचे उतरे तो हानि होती है।

16. भोजन करते समय यदि यह जीव किर्र किर्र की आवाज करे तो उत्तम भोजन और धन लाभ होता है।

17. यात्रा में जाते समय यदि दाँए बाँए आवाज करे तो यात्रा में सफलता परन्तु पीछे से इसका स्वर मिलना कार्य व यात्रा में हानि पैदा करता है।

18. स्नान कर वस्त्र धारण करते समय यदि यह जीव स्वर उच्चारण करे तो भोग-विलास व प्रेम संगति कराता है।

19. प्रथम प्रहर यदि रात के प्रथम पहर में छिपकली पश्चिम दिशा घर में बोले तो अशुभता का परिचायक है।

20. यदि यह जीव रात के प्रथम प्रहर में घर के अन्दर उत्तर-पश्चिम कोण में बोले तो जातक को धन लाभ का संकेत देती है।

21. यदि गृह में उत्तर दिशा में इसी प्रहर में बोले तो प्रियजनों का आगमन होता है।

22. यदि रात्रि के प्रथम प्रहर में गृह के पूर्व-उत्तर कोण में बोले तो धन लाभ और शत्रुवों का नाश होने का संकेत देती है।

23. यदि दिन के पहले प्रहर में छिपकली पश्चिम दिशा में [घर के दीवार पर] बोले तो अतिशुभ होता है।

24. यदि दिन के इसी प्रहर में यह जीव उत्तर पश्चिम कोण में बोले तो अशुभ घटना घटने का संकेत है।

25. इस जीव का गृह के अन्दर उत्तर दिशा में बोलना व्यवसाय में लाभ व धन प्राप्त कराने का लक्षण है।

26. यदि रात्रि के प्रथम प्रहर में छिपकली घर के पूर्व दिशा में बोले तो सौभाग्य की प्राप्ति कराती है।

27. यदि यह जीव दिन के प्रथम प्रहर में दक्षिण दिशा में बोले तो कार्य में सफलताएं प्राप्त कराती है।

28. यदि रात्रि के प्रथम प्रहर में छिपकली पश्चिम दक्षिण गृह कोण में बोले तो दूसरे दिन भोजन मुश्किल से प्राप्त होता है ।

29. यदि रात्रि के इसी प्रहर में छिपकली दक्षिण पूर्व कोण, घर में बोले तो कार्य में सफलता व शुभता की प्राप्ति होती है ।

30. यदि दिन के प्रथम प्रहर में दक्षिण पूर्व कोण में बोले तो सुख समृद्धि प्राप्त होता है ।

द्वितीय प्रहर :–

1. यदि रात्रि के द्वितीय प्रहर में छिपकली गृह के उत्तर-पश्चिम कोण में बोले तो किसी पदाधिकारी के हाथों कार्य सफलता का सूचक है ।

2. यदि दिन के दूसरे प्रहर में यह जीव घर के उत्तर दिशा में दीवार पर बोले तो लड़ाई-झगड़ा व अशुभ समाचर का सूचक है ।

3. यदि रात्रि के द्वितीय प्रहर में यह जीव उत्तर दिशा में बोले तो लक्ष्मी घर में आती हैं ।

4. यदि दिन के दूसरे प्रहर में छिपकली पूर्व उत्तर कोण में स्वर करे तो । अशुभता का संकेत है ।

5. रात्रि द्वितीय प्रहर, पूर्व दिशा में स्वर करे तो शुभ फल दायक है ।

6. यदि दिन के द्वितीय प्रहर में पूर्व दिशा में बोले तो अशुभ समाचार मिलता है ।

7. यदि दिन के द्वितीय प्रहर में यह जीव दक्षिण पूर्व दिशा में बोले तो शुभ होने की सूचना देती है ।

8. यदि दिन के इसी प्रहर में पश्चिम दक्षिण दिशा में बोले तो शत्रु नाश होता है ।

9. यदि इसी प्रहर में पश्चिम दिशा में स्वर करे तो व्यर्थ का धन खर्च होता है ।

10. यदि रात्रि के दूसरे प्रहर में पश्चिम दिशा में बोले तो उच्च पद के अधिकारी घर में आते हैं ।

11. यदि छिपकली रात्रि के दूसरे प्रहर में पश्चिम दक्षिण कोण में बोले तो अशुभ, दक्षिण दिशा में बोले तो व्यर्थ का कलह, और दक्षिण-पूर्व दिशा में बोले तो प्रेमी को प्रेमिका से मिलन का संकेत होता है ।

तृतीय प्रहर :–

1. यदि छिपकली दिन के तृतीय प्रहर में पूर्व दिशा में बोले तो मित्र

समागम, पूर्व उत्तर कोण में बोले तो शुभ, और उत्तर दिशा में स्वर करे तो मित्र मिलन का संकेत देती है ।

2. यदि दिन् के इसी प्रहर में उत्तर पश्चिम कोण में बोले तो अधिकारी का आगमन पश्चिम में बोले तो लड़ाई झगड़े, पश्चिम दक्षिण में बोले तो शत्रु बढ़े और रोगी बने, और अकेली दक्षिण दिशा में बोले तो स्त्री समागम की सूचना होती है-।

3. छिपकली यदि दिन के इसी प्रहर में दक्षिण पूर्व कोण में बोले तो ऐसी आराम की प्राप्ति संदेश देता है ।

4. रात्रि के तृतीय प्रहर में यदि छिपकली पूरब दिशा में बोले तो भाग्य जगावे, पूर्व उत्तर तो शत्रु को हानि पहुंचाता है ।

5. यदि रात्रि के इसी प्रहर में यह जीव उत्तर पश्चिम में बोले तो शुभ समाचार की प्राप्ति, पश्चिम में बोले तो व्यवसाय में लाभ,

6. यदि रात्री के इसी प्रहर में पश्चिम दक्षिण कोण में बोले तो अशुभ, दक्षिण में बोले तो शत्रु से लाभ और दक्षिण पूर्व कोण में बोले तो शत्रु की हानि करती है ।

चतुर्थ प्रहर–

1. यदि दिन के चौथे प्रहर में छिपकली पूर्व-उत्तर कोण में स्वर करे तो घनघोर वर्षा एवं धन लाभ, उत्तर में बोले तो मित्र का आगमन, उत्तर पश्चिम में बोले तो अशुभ और पश्चिम दिशा में बोले तो रूपवती नारी से मिलन कराती है ।

2. यदि दिन के चौथे प्रहर में यह जीव प्रश्चिम-दक्षिण कोण में बोले तो धन का नाश दक्षिण में बोले तो शत्रु के स्त्री से लाभ और दक्षिण पूर्व में बोले तो उत्तम भोजन प्राप्त कराती है ।

3. यदि रात्रि के इसी प्रहर में पूर्व दिशा में बोले तो शत्रु का विनाश, पूर्व-उत्तर कोण से भी धन लाभ, परन्तु इसी प्रहर में पश्चिम में बोले तो शोक समाचार का संकेत समझें ।

4. यदि रात्रि के चतुर्थ प्रहर दक्षिण दिशा में बोले तो कलह से बचें, और यदि दक्षिण पूर्व कोण में बोले तो सुख समृद्धि में बढोतरी होती है ।

नोट–छिपकली प्रायः मकान के अन्दर दीवारों से, तस्वीरों से या घड़ियों से चिपक कर बैठती है और ये जीव भ्रमण अक्सर दिवारों पर ही करती है । अतः इसी के आधार पर शकुन में दिशाओं का ज्ञान करना चाहिए ।

विभिन्न वृक्षों द्वारा शकुन ज्ञान

शकुन शास्त्रियों ने पशु-पक्षियों के अलावा अनेकों प्रकार के पेड़-पोधों से भी शकुन प्राप्त करने का विधान उद्धत किया है जो निम्न प्रकार है-

कमल के फूलः-कमल के फूल विधाता श्री ब्रह्मा जी की पत्नी माता सरस्वती का आसन है । यह पुष्प जब अधिक खिले तो ब्राह्मणों को देश में अधिक मान मर्यादा का संकेत देता है ।

आक के फूलः-आक के वृक्ष छोटे छोटे आकार में होते हैं । इन वृक्षों में जब जब भी अधिक फूल लगते हैं तब-तब सोने का भाव मन्दा होता है।

पीलू के फूलः-शकुन शास्त्र में वर्णित है कि इसके पौधों में जब-जब भी अधिक पुष्प खिलते हैं तो आस-पास के क्षेत्रों में रोग व्याधि नाश हो जाया करता है ।

गुड़हल के फूलः-गुड़हल भी एक पुष्प का वृक्ष होता है । इस वृक्ष पर जब-जब भी अधिक फूल लगते हैं तब-तब माणिक मूंगा अधिक पैदा होकर, इन रत्नों के कीमत बाजार में गिर जाता है ।

जामुन :- जामुन एक प्रकार का फल होता है जिसका रंग काला होता है । इन वृक्षों में जिस वर्ष अधिक फल-फूल लगे तो तिल का उपज बहुत होता है ।

बकायन :-बकायन वृक्ष का पत्ता मवेशियों में दवाई के काम में लाया जाता है । इस पत्ते का स्वाद तीता (कड़ुआ) होने के कारण इसे महानीम भी कहते हैं । इस वृक्ष पर अधिक फल-फूल आने से मछलियों का जल से अधिक उत्पादन होता है ।

आमः-इस वृक्ष में अधिक फल-फूल आने से जनता में आन्नद की प्राप्ति होती है ।

महुआ :-इस वृक्ष में अधिक फल-फूल लगने से गेहूं का पैदावार अधिक होती है ।

चम्पा के फूल :-चम्पा वृक्ष के फूल अति सुगन्धित होते हैं जिससे सांप मदहोश होकर इस फूल के पास खिंचा चला आता है । इस वृक्ष में अधिक फूल लगने के परिणाम स्वरूप सोना का भाव मन्दा होता है ।

अमलतास :-इसके वृक्ष में अधिक फूल लगने से रईस लोग और धनी हो जाते हैं ।

वेश्या का शकुन

किसी जरूरी कार्य में जाते हुए मार्ग में यदि सजी संवरी प्रसन्नचित्त किसी वेश्या से मुलाकात हो जाती है तो कार्य में सफलता मिलने का संकेत है। यदि बाल विखराये अस्त व्यस्त सी दशा में मिले तो कार्य पूर्ण नहीं होता।

समाज के अन्दर वेश्या को हीन भाव से देखा जाता है, किन्तु शकुन शास्त्र में इसका महत्त्व इसलिए दिया गया है कि यह इन्द्र की अत्त्सराओं के समान है अतः परिणाम स्वरूप इसे शुभ माना जाता है।

विभिन्न पशु-पक्षियों से शकुन ज्ञान

हंस

हंस विख्यात पक्षी की गिनती में आता है। यह निरामिष भोजी पक्षी है। स्वच्छ सरोवर में कमल के जाल में रहने वाला यह पक्षी हमारे लिए श्रद्धा का पात्र रहा है।

विश्व की सवोच्च झील मान-सरोवर में इसका निवास माना गया है। भगवती देवी माता सरस्वती का यह बाहन जितनी ऊँचाई पर उड़ा करता है उतना ही सरल सात्त्विक भी है। संभव है, इसीलिए शकुन शास्त्रकारों ने इसका दर्शन, इसका स्वर सभी दिशाओं में शुभ माना है।

यह बाँए आता है या दाहिने उग्रदिशा में या दिप्त में या शान्त में यह सर्वत्र शुभ और कार्य सिद्धि का सूचक है। और तो और प्रवास करते समय कोई हंस का नाम भी ले ले तो या सुन ले तो शुभ रहता है।

प्रवासी को देखने पर अथवा हमारे किसी कार्य के आरम्भ करने पर इसके बोलने के भिन्न-भिन्न फल अवश्य बताए गये हैं। जैसे पहली बार बोले तो चारों से मुलाकात है दो बार बोले तो खजाना मिले, तीन बार बोलने पर भय, चार बार बोलने पर लड़ाई-झगड़े की संभावना और पांच बार बोले तो राजा से श्रवणकर्ता को सम्मान प्राप्त होता है।

गिरगिट

गिरगिट भी विषैला जीव है और शक्ल में यह छिपकली जैसी ही होती है। यह रंग बदलने वाला जीव अक्सर सफेद-लाल, सफेद काला, एवं रंगीन धारीदार होता है। गिरगिट प्रायः एक स्थान पर बैठकर गर्दन ऊपर-नीचे किया करता है। धारीदार रंगीन गिरगिट के दर्शन शुभ माने जाते हैं।

शरीर के विभिन्न अंगों पर इसके चढ़ने या गिरने का फल छिपलकली समान ही होते हैं अतः इसका शकुन विचार भी छिपकली भांति ही करें ।

बगुला

बगुला नदी के किनारे अक्सर रहता है क्योंकि यह मीन पक्षी है । वर्ण में यह हंस की तरह ही सफेद होता है । इसके शकुन के विषय में कहा गया है । कि यदि यह एक पैर के बल खड़ा दिखाई दे तो धन-धान्य और रति सुख की प्राप्ति कराता है, भूमि की ओर राहगीर को देखकर बार-बार देखता है तो सारी विध्न-बाधाओं को दूर करता है । यदि यह भयातुर होकर चारों दिशाओं में देखे तो जातक के घर चोरी होने की सूचना देता है और निर्भय निःशंक होकर अपने शरीर को देखता है तो स्त्री और सम्पत्ति का लाभ कराता है ।

जंगली कबूतर

जंगली कबूतर को घर में लाना या स्वयं आ जाना शकुन के मामले में अशुभ माना जाता है ।

चिमगादड़

यह रात्रि को उड़ने-फिरने वाला जीव है । इसे पायः अशुभ ही माना जाता है । यह जीव जिस घर में बसेरा कर लेता है उस घर का सत्यानाश कर देता है । इसे दिन में दिखाई नहीं देता और जहां रहता है उल्टा ही लटका रहता है ।

चक्रवाक

हंस की तरह ही चक्रवाक का जोड़ा किसी भी दिशा में दिखाई देने पर शुभ फल की सूचना देता है । इस जोड़े को चकवा-चकवी का जोड़ा भी कहते हैं । यह करूण शब्द करता हुआ दिखे तो विपत्ति की सूचना देता है ।

बाज

यह एक उड़ने वाला पक्षी है और प्रायः ऊँचे स्थान पर ही बैठता है । कई राजे महाराजे इसे अपने साथ रखते थे । संभवतः यह एक शिकारी पक्षी माना जाता था । इसका ऊँचा उड़ना या ऊँचा बैठना ही इसकी राज सी शान की घोषणा है । राजा का प्रिय पक्षी सदैव ही इसने आदर पाया है ।

यात्रा के समय इसका बाँए या पीछे रहना या बोलना यात्रा में राजसी ठाठ देता है अर्थात विजय दिलाता है ।

सारस

सारस पक्षी अक्सर जोड़े में ही देखा जाता है और जोड़े को देखना सदा ही शुभ रहता है, किन्तु जब यह पीठ पीछे से आवाज करे तो यात्रा नहीं करना चाहिए। यह प्रवासी के बायीं तरफ बोलकर स्त्री व धन का लाभ कराता है,आगे बोलकर धन लाभ कराता है। दोनों ही तरफ सारस का जोड़ा हो और उनमें एक बोलनें लगे तो स्त्री लाभ होता है। यदि जाते हुए को देखकर दोनों ही सारस एक साथ बोलने लगे तो अभिष्ट सिद्धि के सूचक होते है–बात क्रोच पक्षी के जोड़े के लिए है।

मुर्गा

मुर्गा एक लोकप्रिय जीव है। इसको पाला भी जाता है और इनका भक्षण भी किया जाता है।

1. यह प्रातः काल जब बाग देता है तो शुभ माना जाता है।

2. यदि किसी शुभ कार्य के लिए व्यक्ति यात्रा करने के तैयार हो और यह जीव जोर-जोर से शब्द करने लगे तो यात्रा सफल हो जाता है।

3. यदि मुर्गा जातक के दाहिने तरफ बोले तो अति शुभ माना जाता है।

4. रात्रि काल में भी यह वांग दे तो शुभता की निशानी है।

5. यदि मुर्गा दिन में लगातार रुक-रुक कर बोले तो विपत्ति आने की सूचना देता है।

टेक पक्षी

टेक पक्षी यदि यात्रा करने वाले के सामने मिले तो अशुभ माना जाता है। यह बॉए मिलने से कार्य में रुकावट की , सामने, पीछे और दॉए मिले तो मृत्यु समान दुःख का सूचक है,परन्तु यात्री के आगे-आगे आवाज करते हुए उड़ता चले तो युद्ध मे विजय का सूचक समझा जाता है।

नीलकंठ

''नीलकंठ'' भगवान शंकर के नाम की यह पक्षी मानव के लिए दर्शन सूचक है। यदि प्रातःकाल ही सबसे पहले इसका दर्शन हो तो भगवान नीलकंठ की कृपा से सारा का सारा दिन ही आनंदमय व्यतीत होता है।

इस पक्षी के शरीर पर रंग सज्जा भी बहुत ही लुभावनी होती है। यदि इसे ध्यान से देखा जाए तो ह्रदय प्रसन्न हो जाता है। यात्रा के समय इसके दर्शन

सुखमय यात्रा की सूचना देते हैं । बच्चों में विश्वास पाया जाता है कि इसके दर्शन से परीक्षा में सफलता मिलती है ।

तोता

''तोता पक्षी'' को शौक से अनेकानेक लोग पिंजरे में बंद रखकर पालते हैं। इसकी तीन जातियाँ होती हैं। पहला ''राजशुक'' जो मनुष्य जैसी भाषा बोलता है। दूसरा ''काष्टक शुक''– जो जंगली तोता हैं। तीसरा ''ग्रामशुक''– हम सामान्यतः तोता कहते है।

यात्रा में प्रस्थान करते समय राजशुक बाए-बोलता हुआ और नगर में प्रवेश करते समय दाहिना बोलने पर शुभ माना जाता है।

टिटहरी

मीठी एंव तीव्र आवाज, इस पक्षी की विशेषता है। इसके दर्शन के लाभ की कोई प्रमाणिकता के शकुन विशेष सहायक एवं हितकारी है। यात्रा के समय इसकी आवाज लाभकारी होती है। किसी भी शुभ कार्य के प्रारम्भ में अगर आसानी पूर्वक सम्पन्न हो जाता है। जब प्रसूता स्त्री बच्चा जनने के करीब पहुँचती है जो उस समय यदि उसे टिटहरी का शब्द सुनने को मिले तो वह पुत्र रत्न की प्राप्ति की सूचना देती है। किसी भी शुभ कार्य में इसका स्वर सुना जाना शुभता का सूचक माना जाता है।

सारिका मैना

सारिका का दर्शन सदैव ही अशुभ होता है। इसके दिखने पर कलह–क्लेश,मानसिक परेशानी और अनेकों प्रकार के विध्न खड़े होते है। यह यदि यात्री के आगे की तरफ दिखाई पड़े तो चोर डाकुओं का भय पीछे की तरफ दिखे तो मित्रों से दुष्टता,बांए हाथ दिखने से पत्नी से मननुटाव और दाहिने दिखने से प्रियजनों से वियोग कराती है।

मोर

''मोर'' तो राजसी पक्षी है। यह कुछ ही प्रान्तों में कही–कहीं पाये जाते है इसलिए इसके दर्शन सुलभ नही। जंगल या पहाड़ो के आस पास रहने वालों को तथा गॉव आदि के निवासियों को ही इस पक्षी के शकुन का लाभ मिलता है ।

यह एक खूबसूरत पक्षी ही नही अपितु एक पवित्र पक्षी भी है । यह अपनी

मादा के साथ सम्भोग नही करता । इसी पवित्रता के कारण ही तांत्रिक वर्ग में इसके पंखों का झाड़ना बनाकर अभिमंत्रिक करके रोग व्याधि, भूतप्रेत आदि का झाडा करते हैं । इसकी सांप से लड़ाई तो जगत प्रसिद्ध ही है। कहते हैं कि जिस घर में इसके पंख रखे जाते हैं वहा सांप प्रवेश नही करता । सजावट के लिए भी इसके पंखों को घर में सजाया जाता है । इसके पंख का पंखा बनाकर के गर्मी के दिनों में हवा करने से तुरन्त ही स्फूर्ति प्राप्त होती है ।

भारद्वाज चकोर

इस पक्षी का दिखना, इसकी आवाज सुनना, इसका नाम लेना या किसी के मुख से इसका नाम सुनना ये सभी जगह सभी अवसरों पर शुभ माने जाते हैं ।

बकरी

यह एक दुधारु पशु है । इसके दर्शन या इसका स्वर शकुन के रुप में कहीं जाते समय कुछ करते समय या निवास के समय प्रायः शुभता ही प्रदान करता है, किन्तु प्रवास करते समय यदि यह छीक दे तो यात्रा नही करनी चाहिए ।

बकरा

इसका दर्शन यात्रा पर जाते समय शुभ माना जाता है। यह पशु यदि सपने में दिखे तो लक्ष्मी प्राप्ति की सूचना है। सपने में जो भी क्रिया की जा रही हो और बकरा शकुन देवे तो दिन में वह क्रिया करके लाभ अवश्य उठाना चाहिए ।

भास पक्षी

यात्रा करते समय भास पक्षी सदा दक्षिण या दाहिनी तरफ दिखना शुभ है। प्रवास करते समय यदि मनुष्य को बहुत से पक्षी एकत्रित होकर जाते हुए दिखे तो चोर भय की आशंका, अनेक पक्षी मिलकर आवाज करते हुए घर की तरफ आए तो राज पुरुषों से मित्रता व बेशुमार धन प्राप्त होता है ।

मकड़ी

किसी भी शुभ कार्य के आरम्भ में मकड़ी या उसका जोल देखना अशुभ माना जाता है ।

तीतर

1. यदि यात्रा में प्रस्थान करते समय तीतर पक्षी पहले दाहिने

बोलकर फिर बॉए बोलता है तो शुभ फल का सूचक और गृह प्रवेश के समय पहले बायां फिर दाहिना बोलता है तो लक्ष्मी प्राप्ति सूचक समझा जाता है।

2. तीतर जब "कपिंजल कपिंजल" ऐसी आवाज करता है तो शकुनार्थी के उत्साह में वृद्धि और कार्य की सफलता सूचित करता है।

3. आकाश की तरफ मुंह करके आवाज करता हुआ तीतर दिखाई दे तो अशुभ होता है। तथा धन हानि कराता है।

4. यदि एक साथ बांयी ओर दाहिनी तरफ तीतर बोलता है तो उत्तम शकुन माना जाता है ।

चिड़िया की विष्टा

यात्रा में प्रस्थान करते समय या मार्ग में उड़ती हुई चिड़िया यदि जातक पर विष्टा कर दे तो उसे रास्ते में पड़ा हुआ धन मिलता है । यदि कहीं पर बैठे व्यक्ति के शरीर पर यह विष्टा करती है तो उसे दरिद्र बना देती है ।

गीध

गीध का दर्शन सदा ही अशुभ होता है किन्तु पीठ पीछे आवाज करने पर अर्थलाभ कराता है । प्रवासी के बाएं हाथ की तरफ बोलकर लड़ाई, झगड़े, दाहिने बोलकर शत्रु से वैर और सामने की तरफ बोलकर मृत्यु होने की सूचना देता है ।

सूअर

यदि यात्रा करते हुए यात्री को मार्ग में कीचड़ से लथपथ सूअर मिले तो कार्य में सफलता और साफ-सूथरा मिले तो कार्य में विघ्न पैदा होता है ।

पक्षी शवलिका

यह पक्षी बांई तरफ मिले तो शुभ, यदि मास पक्षी के साथ रहे तो अधिक शुभ, मुंह में मांस का टुकड़ा लेकर यदि किसी के सिर पर बैठे तो राज्य पद पाने का सूचक समझा जाता है ।

खरगोश

ऐसे तो खरगोश आधुनिक् युग में बड़े-बड़े घरों में पालना फैशन बना लिया गया है, परन्तु किसी भी कार्य के लिए खरगोश का शकुन भयकारक होता है । कहीं आते या जाते समय खरगोश का दर्शन अति अशुभता प्रधान करता है ।

उल्लू

उल्लू रात्रिचर पक्षी है । इसकी आवाज और दर्शन बांई तरफ ही शुभ रहा करते हैं । यात्रा करते समय यदि ये दायीं तरफ मिले तो अशुभ, परन्तु पीठ के पीछे आवाज करना शुभता की निशानी है ।

यह जब "हुम् हुम्" ऐसी आवाज करता है तो बुरा प्रभाव नहीं होता । और इसे घर पर बैठना अशुभ माना जाता है । यदि किसी घर की छत पर बैठकर यह बोलता है तो उस घर के स्वामी की मृत्यु की सूचना देता है । एक सप्ताह से अधिक समय तक यदि यह घर की मुंडेर पर बैठता है तो घर के विनष्ट अथवा सूने हो जाने की सूचना देता है । तीन दिन तक उल्लू यदि दरवाजे पर बैठकर रोता है तो चोरी होने की प्रबल आशंका होती है । इसके दोष की शान्ति के लिए मांस की बलि देनी चाहिए या किसी तांत्रिक से सम्पर्क करना चाहिए । यदि यह जीव दिन में किसी भी दिशा में बोलता है तो अशुभता प्रदान करता है ।

सर्प

सर्प मानव जाति या किसी भी जीवों का मित्र नहीं होता, इसलिए इसका दर्शन सदैव दुःखदायी होता है । यदि सर्प-सर्पिनी भोग कर रहा हो और उसके ऊपर कोई चादर तेज सवारी पर बैठकर डाल दे और उसे क्रोधवश सर्प-सर्पिनी उसे टुकड़े-टुकड़े कर दे तो वह चादर यदि इन्सान के हाथ लगे और उसे किसी भी शुभ कार्य में साथ रखें तो पूर्ण सफलता मिलती है । खासकर मुकदमे आदि में जीत अवश्य होती है । परन्तु चादर उसके ऊपर डालने वाला व्यक्ति चादर डालकर सर्तकता से तुरन्त वहां से भाग जाए वरना वे ड़स लेते हैं और इन्सान को मार देता है । चादर उठाने के लिए बांद में तब आवे जब सर्प सर्पिनी वहां से कहीं और चला जाए ।

पालतू कबूतर

यह कबूतर गॉवों और शहरों में लोग घर में पालते हैं । इसका मांस बहुत ही गरम होता है और क्षय रोग की बिमारियों के लिए अति लाभप्रद है ।

यदि यात्रा करते हुए यात्री को दाहिनी तरफ मिले तो भाई का नाश बांए और आगे जाता हुआ मिले तो । धन प्राप्ति, पीछे की तरफ जाना भय की सूचना देता है । यह जिस व्यक्ति पर बीट करता है उस व्यक्ति की मृत्यु निकट भविष्य में ही हो जाती है इसे मकान में घुसना, पलंग, कुर्सी या सवारी पर बैठना अशुभ माना जाता है ।

"शिवि के उपाख्यान में" जब शिवि की गोद में आकर कबूतर बैठता है तो उसके पुरोहित इसे घोर अशुभ बतलाकर दान पुण्य के द्वारा इसकी दोष शान्ति की बातें बतलाते हैं ।

गाय

प्राचीन समय से ही माना जाता रहा है कि गाय में तेंतीस करोड़ देवता निवास करते हैं । इसीलिए भगवान कृष्ण स्वयं गायों के चरवाह बने । पूजा कर्म केलिए गऊ पूजन सर्वोपरि पूजन माना जाता है । ऐसी मान्यता है कि गाय जिस द्वार पर बंधी होती है, उस द्वार में निवास करने वाले की सर्वत्र जय होती है । गाय की सेवा करने के फलस्वरूप स्वर्ग की प्राप्ति का अधिकार संभव एवं सुलभ हो जाता है ।

चिकित्सा समुदाय ने भी गाय के मूत्र और दूध को कई रोगों के लिए अमृत समान स्वीकार किया है, इसी कारण हिन्दू वर्ग के लोग इन्हें गौ माता कहकर पुकारा करते हैं । अतः गौ माता का दर्शन शकुन के रूप में समस्त स्थिति में शुभता का सूचक है ।

गायों का झुण्ड

यदि किसी के दरवाजे पर गाये झुण्ड लगाकर बैठना प्रारम्भ कर दे तो उस घर के निवासी का भाग्योदय हो जाता है और वह लक्ष्मीवान होकर सुख-भोग करता है ।

गायों की छींक

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करते समय या किसी कार्य हेतु प्रस्थान करते समय यदि गाय छींक मार दे तो जातक को यात्रा केन्सिल कर देना चाहिए क्योंकि गाय की छींक अत्यन्त ही अशुभ कारी मानी गयी है ।

खंजन चिड़िया

यह अति विचित्र पक्षी है । इसकी आँखें बहुत चंचल होती हैं । आकार में यह सामान्य चिड़िया के आकार का होता है । शकुन शास्त्रियों के अनुसार तथा ग्रन्थों में किए गये विवरण के अनुसार यह वर्षा काल में अदृश्य हो जाता है । तंत्र में तिरस्करिणी विद्या और प्रयोग में एक प्रयोग खंजन शिखा का भी है । इसकी शिखा को तोड़कर ताबीज में रखने और ताबीज को धारण करने पर व्यक्ति अदृश्य हो जाता है । सी. आई. ए. के वैज्ञानिक अदृश्य कारिणी विद्या

पर अनुसंधान कर रहे हैं और सुनने में आया है कि ऐसे कतिपय सफल प्रयोग कर भी चुके हैं ।

खंजन चार प्रकार के होते हैं–

भद्र, भद्रांवर, प्रभद्र और समान्तभद्र ।

1. कंठ और सामने का भाग, जिसका काले रंग का हो, वह भद्र खंजन कहलाता है ।

2. जिसके केवल गले में काली रेखा रहती है उसे भद्राबर खंजन कहा जाता है ।

3. जिसके सिर और सामने का भाग काला हो और कंठ तथा पीठ सफेद हो वह प्रभद्र खंजन कहलाता है ।

4. जिसके कंठ सामने पूंछ आदि पर काला होता है वह समन्त भद्र खंजन होता है ।

शकुन के प्रयोग से इनमें क्रमशः अधिक उपयुक्त होती है । अर्थात भद्रसे अधिक प्रभद्र, प्रभद्र से अधिक भद्राम्बर, भद्राम्बर से अधिक समन्त भद्र रहता है ।

शकुन फल–

1. हाथियों का पिलखाना, घुड़साल, बगीचे, महल, स्वच्छ बादल, रहित आकाश, लिपी हुई धरती, दही आदि के बर्तन, राजपुरुषों के निकट, छायादार पेड़, नई घास, पुष्प पत्ते, फल युक्त वृक्षों की डाल पर पहली बार खंजन का दर्शन होने पर अच्छे लाभ व धन प्राप्त होता है ।

2. नदीं, तालाब के किनारे, कमल का फूल, गाय के उपले, गाय की पीठ, दूब, राजमहल अटारी, दूध वाले वृक्ष पर आकर यदि खंजन बैठता है तो देखने वाले का व्याधिनाश उत्तम वस्त्र की प्राप्ति एवं भविष्य में परम धनी हो जाता है ।

3. खंजन यदि भैंस अथवा किसी झण्ड़े पर बैठा दिखाई दे तो धनागम, उपले हरे-भरे मैदान में दिखे तो सुन्दर वस्त्र और नाव अथवा घर में बैठा दिखे तो धन प्राप्ति की सूचना देता है ।

4. हल चली भूमि पर बैठा दिखाई दे तो अनावश्यक कलह क्लेश प्रातः काल दिखने पर प्रिय जनों से मिलन, आकाश में उड़ता हुआ दिखने पर बांधवों से स्नेह और आकाश से उड़ता हुआ धरती पर आती दिखाई दे तो लक्ष्मी प्राप्ति की सूचना देता है ।

5. इसी प्रकार सुन्दर मनोरम स्थानों पर प्रसन्न मुद्रा में बैठा हुआ दिखाई दे तो शुभ फल दिया करता है ।

6. लता, पत्थर, कांटेदार पेड़, सूखा पेड़, जली हड्डी, भूसा, रेत, पलास,

वृक्ष, स्तंभ आदि पर क्रोधित अवस्था में बैठा दिखाई दे तो रोग और कलह उत्पन्न करता है ।

बिल्ली रास्ता काटे

कहीं पर जाते समय यदि बिल्ली रास्ता काट दे तो प्राचीन समय से ही माना जा रहा है कि यह अशुभ ही होता है । इस शकुन के शुभ होने का अभी तक कोई प्रमाण नहीं मिला ।

हाथी

प्रस्थान कर रहे व्यक्ति को हाथी के दर्शन होना शुभ लक्षण माना जाता है । यदि यह प्रवासी को देखकर अप्रेरित भाव से अपनी सूंड ऊँची करता है अथवा सूंड को उठाकर दाहिने दांत पर रखता है तो कार्य सिद्ध होता है ।

घोड़ा

प्रवासी के बांए तरफ से घोड़ा गुजरे या हिनहिनाये तो शुभ शकुन होता है अथवा दाहिने पैर से धरती को खोदता है या अपने दाहिने अंग को खुजलाता है तो कार्य सिद्ध होने की सूचना देता है ।

हिरण

यात्रा के समय या प्रातः काल हिरण यदि दाहिने या बांए मिले तो अत्यन्त लाभदायक होता है । इस शकुन के कारण धन-धान्य की प्राप्ति होती है ।

गधा

एक स्थान पर खड़ा होकर यदि गधा बाईं तरफ बोलता है तो शुभ सूचक रहता है । दाहिने, आगे और पीछे बोल रहा गधा अशुभ माना जाता है ।

यदि कोई व्यक्ति प्रस्थान करते समय दो गधों को प्रेम पूर्वक आपस में दांतों से खुजलाते हुए देखता है तो उसे परिवार के प्रियजनों से मिलने का सुख प्राप्त होता है ।

सम्भोग रत गदर्भदंपति दिखने पर स्त्री सुख की प्राप्ति, परस्पर लड़ते हुए दिखने पर मृत्यु अथवा बंधन की प्राप्ति अपने शरीर अथवा कानों को फड़फड़ाता दिखने पर कार्यनाश कराता है तथा ग्राम में प्रवेश करते समय यदि दाहिनी तरफ बोलता है तो उत्तम कार्य सिद्धि का सूचक होता है ।

भैंस

किसी भी कार्यवश जाते समय प्रारम्भ में भैंस दिखाई दे तो कार्य पूर्ण हो जाता है ।

सांढ़ (बैल)

प्रवासी के बाई तरफ बोलना, सींग से धरती को खोदना, तथा दाहिनी तरफ की चेष्टा करना और आधी रात में बोलना–शुभ लक्षण है । बैल का बाईं तरफ से दाहिनी ओर जाना तथा दाहिनी तरफ रहकर चेष्टा करना शुभ फल देता है, परन्तु यात्रा करते समय यदि दोनों ओर भैंसे आ जाय तो घोर अशुभ समझना चाहिए ।

पेड़ पर चढ़ता हुआ सर्प

कहीं जाते समय यदि पेड़ पर चढ़ता सांप दिखाई दे तो भविष्य में सूरज समान चमकने का संकेत देता है ।

चील

चील एक ऐसा पक्षी है जिसे शहरी और देहाती सभी लोग जानते हैं । यह उड़ते समय यदि किसी के सिर से र्स्पश हो जाय तो उसकी मृत्यु निकट समझना चाहिए । यदि किसी मकान के छत पर चीलें बैठना प्रारम्भ कर दे तो उसका घर उजाड़ कर रख देता है ।

मेंढक

यदि खेत में या नदी नाले, तालाब में मेंढक उछल–कूद करते दिखाई दे तो भारी वर्षा होने की संभावना होती है ।

चीटियों का झुण्ड

चीटियों का झुण्ड यदि रेल की भांति आगे आगे–पीछे ऊपर को जाती दिखाई दे तो समझिये वर्षा होने वाली है ।

चिड़ियों का घोंसला

प्राय: सभी घरों में चिड़ियां अपना घोंसला बना ही देती हैं । घोंसला बनातें समय या बन जाने के बाद उस स्थान के नीचे कूड़े करकट का ढेर अवश्य लग जाता है परन्तु शुभ शकुन माना जाता है । अत: किसी भी मनुष्य को चिड़ियों का घोंसला नहीं उजाड़ना चाहिए ।

नेवला

यदि यात्रा करते समय मार्ग में नेवले का दर्शन हो जाय तो यात्रा सफल होने का संकेत है ।

लोमड़ी

लोमड़ी का दर्शन सिद्धि प्रदायक होता है । यात्रा करते समय मार्ग में यात्री के बांए से गुजरे या दाहिने से, दोनों तरफ शुभ माना जाता है ।

ग्रामीण पशु

यदि गांव की पशुवें रात्रि के समय अक्सर रोने लगे तो गांव में भयानक विपत्ति आने का संकेत देता है ।

हीनांग व्यक्ति

यद्यपि हीन अंग वाले व्यक्तियों के प्रति घृणा या दुर्भाव मेरे मन में नहीं है और न ऐसा करने का मुझे अधिकार ही है । फिर शास्त्रों ने अनेक इस प्रकार के प्रयोजन बतलाए हैं जिनमें अधिक अथवा हीन अंग वालों का निषेध किया है ।

माना वे भी मानव हैं और उसको भी वे समस्त अधिकार प्राप्त हैं जो सभी मनुष्य को मिले हुए हैं । इस दृष्टि से दो नम्बर पर रखना अनुचित है, किन्तु इस शास्त्रीय व्यवस्था के पीछे कोई न कोई कारण अवश्य रहा है । मोटे तोरे पर हम यह मानते हैं कि व्यक्ति के अंग परिवार स्वास्थ्य आर्थिक स्थिति में विशेषता न सही, समान्य स्तर होता, एक प्राकृतिक न्याय है यदि उसमें कोई कमी है तो उसका भी कारण होगा ही । वह कारण प्रत्यक्ष नहीं है तो अप्रत्यक्ष है, क्योंकि कारण के बिना कार्य संभव ही नहीं होता । ऐसी स्थिति में निश्चय में उसका कोई पूर्व जन्मकृत दुष्कर्म है जो इस रूप में प्रकट हुआ है और प्रकट चिन्ह पाप का परिचय पत्र है, माना वर्तमान में उसने कोई पाप न किया, पर यह जीवन तो भविष्यत की कार्य स्थली है । इस जन्म के कर्मों का फल कालान्तर में, अन्य जन्मों में भोगता है ।

प्रवास करते समय एकाक्षी व्यक्ति का मिलना शुभ फल नहीं देता है । इसके परिहार के लिए कहा गया है कि उसकी जो आँख विकृत हो, उसे परली तरफ रखकर अपनी ओर उस आंख को (अपने से मिलने वाले हाथ की तरफ) ले लिया जाय तो सही है । पैर से लंगड़ा, एक हाथ कटा हुआ आदि लोगों का भी यही हाथ है । ये भी शुभ शकुन नहीं होते, परन्तु इसका तिरस्कार करना भी महापाप है ।

विधवा स्त्री

यह कैसे लिखा जाय कि विधवा स्त्री शकुन के मामले में अशुभ होती है, क्योंकि प्रकृति के दण्ड विधान के अर्न्तगत किस घर की नारी खिंची चली जावे इसका कुछ पता नहीं । यदि अपने ही घर में हमारी मां-बहन- विधवा हो जावे तो क्या हम घृणा करेंगें ?

कदापि नहीं। खासकर मैं तो इसे मानने के हक में नहीं। परन्तु पूर्व समय में विधवाओं को ऋषि-महार्षियों ने विधवाओं को शुभ कार्य में वर्जित माने थे। उनका कहना था यात्रा के समय विधवा या वन्ध्या स्त्री का मिलना अशुभ कारक होता है। इन तथ्यों के पीछे क्या राज था यह तो वही महापुरुष जाने।

निपुत्र, तेली, धोबी, कसाई, मुण्डित मस्तक लोग और सोनार का मिलना भी यात्रा के लिए अशुभता रूप वरदान है।

यात्राकाल शव दर्शन

यात्रा काल "शव" का सामने मिलना शुभ रहता है। पर उसके साथ रोना-पीटना नहीं होना चाहिए।

आकाश दर्शन के शुभाशुभ फल

सायंकाल आकाश पर यदि लाली हो तो युद्ध की संभावना, नीला हो तो वर्षा की आशंका, सफेद हो तो भय, परन्तु सायं काल यदि आकाश का रंग पीला हो जाय तो रोग व्याधि बढने का संकेत है।

धूम्रकेतु

आसमान में जब-जब भी "धूम्रकेतु" का उदय होता है तब-तब राज्य भंग का योग बनता है और प्रजावों पर रोग, व्याधि और अनेका नेक महामारियों का प्रकोप होता है।

सुहागिन नारी

यात्रा काल में सजी संवरी सुहागन नारी प्रसन्न मुद्रा में मिले तो यात्रा सफल होता है, साथ ही यदि गोद में खूबसूरत शिशु हो तो सोने में सुहागा रूपी शुभता प्रदान करती है।

कुंआरी कन्या

यात्रा काल कुंवारी कन्या का दर्शन लाभप्रद ही नहीं बल्कि पूर्ण सफलता भी प्रदान करता है।

शंख-ध्वनि

यात्रा के समय यदि शंख बजने की आवाज सुनाई पड़े तो सर्व मंगलदायक होता है। यह शकुन मिलने पर दुश्मन से मुकाबला करने या युद्ध में जाने पर विजय की प्राप्ति होती है।

आँधी

किसी भी कार्य हेतु प्रस्थान करते समय या किसी शुभ कार्य के प्रारम्भ में आँधी उठा जाए तो यह एक अत्यन्त ही अशुभता सूचक होता है ।

शराबी

यात्रा काल में शराबी व्यक्ति मिलना अशुभ माना जाता है । लड़ाई-झगड़ा की आवाज सुनाई पड़े तो यात्रा नहीं करनी चाहिए ।

भिखारी

प्रातः काल के समय नित्य क्रिया से सम्पन्न होने के पश्चात् मुख्य द्वार खोलने पर यदि कोई भिखारी उपस्थित हो जाये और वह आपसे भीख की चाहना करे तो अन्न वस्त्रादि के अलावा उसे गुड़ भी दान करना चाहिए । गुड़ देने का शकुन आपका डूबा हुआ धन वापस ले आयगा ।

आग

किसी शुभ यात्रा के समय प्रारम्भ में ही जलती हुई आग दिखाई दे तो कार्य पूर्ण हो जाने का संकेत है ।

पूजा-पाठ

किसी भी कार्यारम्भ के समय अकस्मात् ही कहीं पर पूजा पाठ प्रारम्भ हो । और वहां के स्वर शकुन के रूप में सुनाई दे तो कार्य की सिद्धि और मान प्रतिष्ठा भी प्राप्त होती है ।

कुल्ला

प्रातः काल दाँतों की सफाई के बाद कुल्ला करते समय अन्जाने में यदि पानी गले में चला गया तो उस दिन तबियत प्रसन्न और सुस्वादु व्यंजुन की प्राप्ति होती है ।

कंघी

बालों में कंघी करते समय कंघी हाथ से छूट करके दरबाजे से बाहर नाली में जा गिरे तो उस व्यक्ति के घर में एक दो दिन के अन्दर कई मेहमान एक साथ ही आते हैं, जिससे उसके घर में रौनक बढ़ जाता है ।

कबाड़ी

किसी भी कार्य हेतु-प्रस्थान करते समय टूटा-फूटा लोहा आदि खरीदने वाला कबाड़ी सामने से मिले तो कार्य के सफलता पूर्वक सम्पन्न होने का संकेत होता है ।

कदापि नहीं । खासकर मैं तो इसे मानने के हक में नहीं । परन्तु पूर्व समय में विधवाओं को ऋषि-महार्षियों ने विधवाओं को शुभ कार्य में वर्जित माने थे । उनका कहना था यात्रा के समय विधवा या वन्ध्या स्त्री का मिलना अशुभ कारक होता है । इन तथ्यों के पीछे क्या राज था यह तो वही महापुरुष जाने ।

निपुत्र, तेली, धोबी, कसाई, मुण्डित मस्तक लोग और सोनार का मिलना भी यात्रा के लिए अशुभता रूप वरदान है ।

यात्राकाल शव दर्शन

यात्रा काल ''शव'' का सामने मिलना शुभ रहता है । पर उसके साथ रोना-पीटना नहीं होना चाहिए ।

आकाश दर्शन के शुभाशुभ फल

सायंकाल आकाश पर यदि लाली हो तो युद्ध की संभावना, नीला हो तो वर्षा की आशंका, सफेद हो तो भय, परन्तु सायं काल यदि आकाश का रंग पीला हो जाय तो रोग व्याधि बढने का संकेत है ।

धूम्रकेतु

आसमान में जब-जब भी ''धूम्रकेतु'' का उदय होता है तब-तब राज्य भंग का योग बनता है और प्रजावों पर रोग, व्याधि और अनेका नेक महामारियों का प्रकोप होता है ।

सुहागिन नारी

यात्रा काल में सजी संवरी सुहागन नारी प्रसन्न मुद्रा में मिले तो यात्रा सफल होता है, साथ ही यदि गोद में खूबसूरत शिशु हो तो सोने में सुहागा रूपी शुभता प्रदान करती है ।

कुंआरी कन्या

यात्रा काल कुंवारी कन्या का दर्शन लाभप्रद ही नहीं बल्कि पूर्ण सफलता भी प्रदान करता है ।

शंख-ध्वनि

यात्रा के समय यदि शंख बजने की आवाज सुनाई पड़े तो सर्व मंगलदायक होता है । यह शकुन मिलने पर दुश्मन से मुकाबला करने या युद्ध में जाने पर विजय की प्राप्ति होती है ।

आँधी

किसी भी कार्य हेतु प्रस्थान करते समय या किसी शुभ कार्य के प्रारम्भ में आँधी उठा जाए तो यह एक अत्यन्त ही अशुभता सूचक होता है ।

शराबी

यात्रा काल में शराबी व्यक्ति मिलना अशुभ माना जाता है । लड़ाई-झगड़ा की आवाज सुनाई पड़े तो यात्रा नहीं करनी चाहिए ।

भिखारी

प्रातः काल के समय नित्य क्रिया से सम्पन्न होने के पश्चात् मुख्य द्वार खोलने पर यदि कोई भिखारी उपस्थित हो जाये और वह आपसे भीख की चाहना करे तो अन्न वस्त्रादि के अलावा उसे गुड़ भी दान करना चाहिए । गुड़ देने का शकुन आपका डूबा हुआ धन वापस ले आयगा ।

आग

किसी शुभ यात्रा के समय प्रारम्भ में ही जलती हुई आग दिखाई दे तो कार्य पूर्ण हो जाने का संकेत है ।

पूजा-पाठ

किसी भी कार्यारम्भ के समय अकस्मात् ही कहीं पर पूजा पाठ प्रारम्भ हो । और वहां के स्वर शकुन के रूप में सुनाई दे तो कार्य की सिद्धि और मान प्रतिष्ठा भी प्राप्त होती है ।

कुल्ला

प्रातः काल दाँतों की सफाई के बाद कुल्ला करते समय अन्जाने में यदि पानी गले में चला गया तो उस दिन तबियत प्रसन्न और सुस्वादु व्यंजुन की प्राप्ति होती है ।

कंघी

बालों में कंघी करते समय कंघी हाथ से छूट करके दरबाजे से बाहर नाली में जा गिरे तो उस व्यक्ति के घर में एक दो दिन के अन्दर कई मेहमान एक साथ ही आते हैं, जिससे उसके घर में रौनक बढ़ जाता है ।

कबाड़ी

किसी भी कार्य हेतु-प्रस्थान करते समय टूटा-फूटा लोहा आदि खरीदने वाला कबाड़ी सामने से मिले तो कार्य के सफलता पूर्वक सम्पन्न होने का संकेत होता है ।

सफाई कर्मचारी

यात्रा पर जाते समय यदि सफाई कर्मचारी गली में झाड़ू लगाता हुआ मिले तो कार्य पूर्णता का संकेत होता है ।

टूटते सितारे

कभी-कभी देखा जाता है कि कोई सितारा अपने स्थान से टूटकर दूर तक चमकीली रेखा बनाता हुआ लूप्त हो जाता है । यह देखना अशुभ माना गया है । यात्रा काल में यदि यह दिखाई दे तो यात्रा स्थगित कर देना चाहिए ।

काले वस्त्रधारी

काला वस्त्र पहनना शनि दोष वालों के लिए शनिवार के दिन भले ही लाभकारी है परन्तु नीचे से ऊपर तक काले वस्त्रधारी का दर्शन पाना यात्रा के समय शुभ सूचक नहीं माना गया है ।

पाँव का ठोकर

किसी शुभ कार्य हेतु यात्रा के प्रारम्भ में ही पाँव में किसी चीज का ठोकर लग जाय अर्थात ठोकर से आपका पांव पीड़ित हो जाय तो यात्रा नहीं करें, क्योंकि कार्य में असफलता ही हाथ लगने वाली है ।

पैसे गिरना

कही जाते समय रस्ते में फुटकर पैसे गिर जांय या कपड़े पहनने के वक्त पाकेट से जमीन पर गिरकर पैसे झन्न की आवाज़ करे तो समझिये कि लक्ष्मी घर में आने वाली हैं ।

वृद्ध नर-नारी

यात्रा काल में मार्ग में यदि वृद्ध नर-नारी के जोड़े दिखाई दे तो कार्य शुभ होने का प्रमाण है ।

घड़ी का घंटा

किसी कार्य का निर्णय लेने वक्त यदि दीवार घड़ी का घंटा अपने आप बोल जाय तो कार्य निर्णय का परिणाम अत्यन्त शुभ होता है ।

दूध का उबलना

दूध गरम करने वक्त कभी-कभी चूल्हे के ऊपर से उबल कर नीचे गिर जाता है, इसपर घर की बड़ी-बुढ़िया रसोई के कार्य करने वाली अपनी बहू बेटियों को बहुत डांटती हैं । कहती हैं कि तुम्हारी असावधानी के कारण ही

दूध उबलकर बर्बाद हो गया । जबकि ऐसा उन्हें नहीं कहना चाहिए, क्योंकि अचनाक दूध का उबलना सुख समाप्ति धन दौलत एवं मान सम्मान प्राति का सूचक है । यदि इस कार्य में हम किसी पर बिगड़ते हैं तो अपनी आयी हुई शुभता को ठुकराते हैं, नष्ट करते हैं । अत: जब भी कभी अचानक ही चूल्हे ऊपर से दूध उबल जाय तो देवी-देवता मूर्ति या तस्वीर के आगे धूप-दीप करके अपना सौभाग्य मांगना चाहिए ।

जल से भरा घड़ा

किसी भी कार्य हेतु घर से निकलते समय यदि अपकों जल से परिपूर्ण घड़ा दिखाई पड़े तो शुभदायक समझें ।

हथेली की खुजली

रोग रहित हथेली बांयी यदि अकस्मात खुजलाने लगे तो धन का व्यय और दाहिना खुजलावे तो घर और रूपयों के आगमन का संकेत देता है, परन्तु स्त्री, जाति को इसके विपरीत फल मिलता है ।

साधू

यात्रा क प्रारम्भ समय में साधू सन्त एवं गुरू का एवं ब्राह्मण का दर्शन मिलना शुभता का प्रतीक है ।

देव प्रतिमा खण्डित होना

किसी भी देवी या देवता की प्रतिमा का टूटना या खंडित होना अत्यन्त ही अशुभ होता है । यदि ऐसा हो जाय तो किसी योग्य पंडित को बुलवाकर इस अशुभता का उपाय अवश्य कराना चाहिए ।

नोट :—उपरोक्त विषयों के अनुसार ही मानव प्राणी अपने शुभाशुभ स्वप्न एवंम शकुन का फल निकालकर यदि अपने कार्य प्रारम्भ करे तो पूर्ण सफलता के योग बनते हैं ।

ज्योतिषा-नुसार भवन निर्माण हेतु जमीन का चुनाव

आधुनिक युग में धनवान लोग गाँवों एवं शहरों में धड़ाधड़ जमीन खरीद क़र कोठियों का निर्माण किए जा रहे हैं । वे इन बातों पर विचार ही नहीं करते कि जो जमीन हम खरीद रहे हैं वह भवन निर्माण हेतु शुभ है या अशुभ ! चौंकिए नहीं जनाव, जमीन भी अपने आयात, आकार और कोण विशेष के आधार पर व्यक्ति को शुभाशुभ फल प्रदान करती है । उनपर भवन निर्माण कर रहने वाले लोग उनके शुभाशुभ फलों से कदापि वंचित नहीं रह सकते ।

अक्सर धनवान लोग ही हमारे पास "तांत्रिक यंत्र प्राप्ति की याचना करने आते हैं। जिसे देखने के पश्चात् आप यही कहेंगे कि ये लोग तो दुःखी हो ही नहीं सकते, परन्तु यह सोचना आपका तब निराधार साबित हो जायगा जब आप उनके दुखों के बारे में जान सकेंगे। किसी को हृदय दुःख किसी को पारीवारिक दुःख, किसी को शारीरिक दुःख, किसी को निपुत्र होने का दुःख किसी का पुत्र कुपुत्र होने का दुःख तो किसी को पत्नी से निरादर का दुःख और कुछ लोग यह कहते हुए सुने जाते हैं कि पंडित जी, हमारे पास परमात्मा का दिया हुआ सब कुछ है पर शान्ति नहीं।

आपने कभी सोचा कि ऐसा क्यों होता है ? ऐसा इसलिए होता है कि उनके भवनों का जमीन आकार एवं कोणों के हिसाब से अशुभ है और उसी अशुभता के कारण उन्हें अनेकानेक परेशानियों से गुजरना पड़ता है।

अतः मनुष्य को चाहिए कि भवन निर्माण हेतु जमीन खरीदते समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान अवश्य दे और इनमें से जो जमीन आपके लिए शुभ हों वही खरीदें। शुभ जमीन पर भवन निर्माण करके ही आप अपने परिवार को सुख-समृद्धि व प्रसन्नता प्रदान कर सकते हैं।

भूखंड की आकृति

1. जिस जमीन की लम्बाई चौड़ाई बराबर हो वहां पर भवन निर्माण अति शुभ माना जाता है, क्योंकि ऐसी जमीन धन दायक एवं सफलता प्रदान कराने वाली होती है।

2. यदि जमीन लम्बाई में ज्यादा हो और चौड़ाई कम हो तो उस स्थान का भवन निर्माण भी अति शुभदायक होता है।

3. यदि जमीन गोलाकार हो तो कोठियों का निर्माण शुभ ही माना जाता है।

4. जमीन का षट्कोण होना भवन निर्माण हेतु अरिष्ट नाशक एवं शुभता प्रदायक माना गया है।

5. यदि भूखंड अष्टकोणात्मक गोलाकार हो तो वहाँ का भवन निर्माण मुसीबतदायक होता है।

6. यदि भूखंड त्रिभुजाकार हो तो गृह स्वमी सदैव विपत्तियों में फंसा रहता है।

7. यदि भूखंड रथ के आकार का हो तो गृह स्वामी को अनेकानेक विकट समस्यांए जीवन भर सताती रहती हैं।

8. यदि भूखंड दो जुड़े हुए रथों की आकृति वाला हो तो गृह स्वामी सदैव दुखी रहता है।

9. छाजमुखी भूखंड गृहस्वामी के धन सम्पत्ति का नाश कर देता है ।

10. यदि पंखी आकार का भूखंड हो तो गृह स्वामी को गरीब बना देता है ।

11. धनुष आकार का भूखंड गृहस्वामी को अनेक शत्रुवों से सामना कराता है ।

12. अर्द्ध गोलाकार भूखंड गृहस्वामी के समस्त कार्य को अधूरा ही रखता है ।

13. तबले आकार का भूखंड गृहस्वामी का समस्त धन बर्बाद कर देता है ।

14. मृदंग आकार का भूखंड गृहस्वामी को जीवन में कभी शान्ति प्रदान नहीं करता ।

15. वायब्य कोण में बढ़ा हुआ भूखंड अशुभ होता है ।

16. आग्नेय कोण में बढ़ा हुआ भूखंड एवं ईशान कोण में घटा हुआ भूखंड भवन निर्माण हेतु अशुभ होता है ।

17. नैत्रृदव्य कोण में घटा हुआ भूखंड अशुभ परन्तु बढ़ा हुआ शुभ माना जाता है ।

मुख्य द्वार व सहायक दरवाजे का निर्माण

1. सारे भूखंड को 9 बराबर हिस्से में विभाजित करके चिह्नित करें । चित्र के अनुसार G के निशान पर द्वार-उपद्वार बना सकते हैं । परन्तु X के निशान पर भूलकर भी द्वार या मुख्य द्वार न बनावें ।

2. यदि द्वार पूर्व की ओर बनाना हो तो ईशान कोण से दो हिस्से छोड़कर अन्य दो हिस्सों में द्वार बनाना शुभ रहता है ।

3. यदि द्वार पश्चिम की दीवार में बनाना चाहते हैं तो नैर्ऋत्य कोण के तीन भाग छोड़कर आगे के दो हिस्सों में द्वार बना सकते हैं ।

4. यदि द्वार उत्तर की दिशा में बनाना है तो वायब्य कोण से तीन भाग छोड़कर दो भाग में बनावें तो शुभ रहेगा ।

5. यदि द्वार दक्षिण में बनाना है तो आग्नेय कोण से तीन भाग छोड़कर आगे के दो भागों में द्वार बनाना श्रेयस्कर रहेगा ।

राजमार्ग की दिशा व भूखंड निर्णय

1. यदि भूखंड के दोनो ओर उत्तर व पश्चिम दिशा में राजमार्ग हो तो ऐसा भूखंड सामान्य फल दायक है ।

2. यदि भूखंड के पश्चिम व दक्षिण दिशा में राजमार्ग हो तो उपरोक्त फल ही प्राप्त होगा ।

3. यदि भूखंड के दक्षिण एवं पूर्व दिशा की ओर राजमार्ग हो तो यह अनिष्ट फल दायक है । ऐसे मकान में रहने वाला जातक दरिद्र हो जाता है ।

4. यदि भूखंड के पूर्व एवं पश्चिम दोनों दिशाओं में राजमार्ग हो तो भूस्वामी के लिए भूखंड मिश्रित फल दायक हो जाता है ।

5. यदि भूखंड के उत्तर व दक्षिण दोनों दिशाओं में राजमार्ग हो तो उस भवन में रहने वाला ज्यादा तरक्की नहीं कर सकता ।

6. यदि भूखंड के तीनों ओर पूर्व, पश्चिम व उत्तर दिशाओं में मार्ग हो तथा दक्षिण दिशा बन्द हो तो ऐसे भूखंड का भवन लाभदायक नहीं रहता ।

7. यदि भूखंड के पूर्व, पश्चिम व दक्षिण दिशाओं में राजमार्ग हो तो ऐसे भवन स्वामी को अनिष्ट फल देता है ।

8. यदि भूखंड के उत्तर, दक्षिण व पश्चिम दिशाओं में मार्ग हो और पूर्व दिशाबंद हो तो उपरोक्त फल ही देता है ।

9. यदि भवन के चारों ओर मार्ग हो और सभी खुली दिशाओं में हो तो ऐसे गृहस्वामी मालामाल हो जाता है ।

10. भवन के चारों ओर मार्ग हो, सभी दिशाएं चौराहे के रूप में खुली हो तो ऐसे गृहस्वामी को लक्ष्मी निहाल कर देती है ।

11. यदि भवन के चारों ओर मार्ग हो और वह मार्ग संगम स्थल हो तो ऐसे गृहस्वामी सुरक्षित नहीं रहता ।

12. यदि भवन तिराहे में स्थित हो तथा दक्षिण दिशा बन्द हो तो गृहस्वामी के लिए दुःखद होता है ।

13. यदि भवन दो मार्ग के संधि स्थल पर स्थित हो और दक्षिण तथा पूर्वमार्ग बन्द हों तो ऐसा भवन अनिष्ट फल दायक होता है ।

14. यदि भूखंड के पूर्व और उत्तर दोनों ओर मार्ग हो तो भवन का मुख्य प्रवेश द्वार पूर्व के दीवार में होना चाहिए । चाहे भले ही छोटा मार्ग हो ।

15. यदि भूखंड के उत्तर पश्चिम दोनों ओर के मार्ग खुले हों तो मुख्य प्रवेश उनमें से जो छोटा मार्ग हो उस ओर बनाना चाहिए ।

16. स्मरण रहे भूखंड की गहराई कभी चौड़ाई से अधिक न हो, यदि पश्चिम और दक्षिण दोनों ओर के मार्ग, खुले हों तो प्रवेश द्वार पश्चिम में बनावें ।

17. यदि पूर्व और दक्षिण दोनों ओर के मार्ग खुले हों तो प्रवेश द्वार पूर्व की ओर ही बनावें ।

18. यदि पूर्व और पश्चिम दोनों ओर के मार्ग खुले हों तो प्रवेश द्वारा हमेशा पूरब में ही रखें ।

19. यदि उत्तर और दक्षिण दोनों ओर के मार्ग खुले हों तो प्रवेश द्वार उत्तर दिशा में ही बनावें ।

धर्म स्थल समीप भवन निर्माण निर्णय

1. किसी भी भूखंड या भवन पर किसी मंदिर की छाया 9-00 बज़ें से दोपहर 3-00 बज़े के मध्य नहीं पड़नी चाहिए ।

2. किसी भी भवन के मुख्य द्वार के सामने सूर्य, ब्रह्मा, विष्णु या शिव के मंदिर नहीं होने चाहिए ।

3. किसी भी जैन मंदिर की छाया घर के पिछवाड़े पर नहीं पड़नी चाहिए ।

4. महाकाली का मंदिर एवं श्मशान भूमि भवन के पास नहीं होने चाहिए ।

भवन समीप नदी नाला निर्णय

भूखंड या भवन के दक्षिण और पश्चिम दिशा के समानान्तर कोई भी नदी, नाला, नहर नहीं होने चाहिए । पर यदि नदी नाला उत्तर या पूर्व दिशा की ओर हो तो उत्तम है । खास कर जल प्रवाह पश्चिम से पूर्व या दक्षिण से उत्तर की ओर होना चाहिए ।

भवन समीप मकबरा निर्णय

भूखंड या भवन के पास कब्रिस्तान या मकबरा नहीं होना चाहिए ।

भवन समीप कूप या हेंडपंप निर्णय

कोई भी कुआं या हेंड़पंप (नलका) भवन के आग्नेय, नैऋत्य, वायब्य कोण अथवा दक्षिण दिशा में नहीं होना चाहिए । कुंआ या जल संग्रह का स्थान भवन के पश्चिम, पूर्व, उत्तर एवं ईशान्य कोण में शुभ माने गये हैं ।

भवन समीप वृक्ष निर्णय

भवन के बाहर या अहाते के अन्दर पूर्व दिशा में बरगद, पश्चिम में पीपल, उत्तर में गुल्लर एवं दक्षिण में पाखड़ का वृक्ष कभी न लगावें ।

भवन द्वार निर्णय

1. मुख्य द्वार के ठीक सामने कोई पेड़ दीवार कोना, खंभा, खाई, कुंआं, कीचड़, मंदिर की छाया, हैंडपंप, कोई कब्र, लंबोत्तर गली या किसी प्रकार की अड़चने बाधा नहीं होनी चाहिए ।

2. मुख्य द्वारा के अलावा घर में जितने भी द्वार हों उनकी सम संख्या होनी चाहिए जिससे 2 का (दो कां) भाग लग सके । घर के दरवाजे कभी भी विषम संख्या में न हो तो यह भी ध्यान रखें कि कुल संख्या कभी भी शून्य पर समाप्त न हो जैसे 18, 20, 30 इत्यादि ।

3. यह नियम, घर के अन्य खिड़कियों गवाक्षों, रोशन दान एवं अलमारियों पर लागू होता है ।

4. विषम संख्या के दरवाजे या खिड़कियां ऐसे ही मुख्य दरवाजें में से अन्दर जाते वक्त अन्य दरवाजों की संख्या भी विषम संख्या में समाप्त नहीं होनी चाहिए ।

5. दरवाजे खिड़कियां या अलमारियों के ऊपर के हिस्से समान लेवल में होने चाहिए, ऊपर-नीचे नहीं ।

6. दरवाजे कभी भी बाहर नहीं खुलने चाहिए, हमेशा अन्दर की ओर ही खुले इसका ध्यान रहना चाहिए ।

7. दरवाजे खोलने या बंद करते समय किसी प्रकार की अप्रिय आवाज नहीं होनी चाहिए ।

सूर्य का शुभाशुभ प्रभाव

सूर्य पिता, जनक और संरक्षक है, तेजस्विता और ओज का द्योतक है। यह समस्त जीवन पर अधिकार रखता है। यह कभी शुभफल प्रदाता तो कभी मारक बन जाता है। यह जिस संबंधी आदि के भाव में स्थित होता है, उसको अपने महान आकार के प्रताप से पीड़ित करता है और जातक को उस संबंधी से कलह करने को बाह्य कर देता है। जैसे-यदि सूर्य जन्मकुंडली के सातवें भाव में स्थित हो तो जातक का अपनी पत्नी से और यदि स्त्री की कुंडली में है तो स्त्री का अपने पति से क्लेश चलता रहता है। इसी प्रकार से यदि सूर्य चौथे भाव में हो तो माता से और पांचवे भाव में हो तो पुत्र से कलह उत्पन्न करता है। यह कलह-क्लेश जातक सर्वत्र सूर्य की दशा अथवा भुक्ति में अनुभव करता है। दूसरी दशा, जिसमें सूर्य प्रायः अपनी दशा भुक्ति में कार्य करता है, वह पृथकता की दशा है।

शनि, राहु आदि पृथकताजनक ग्रहों से मिलकर सूर्य जिस भाव, भावेश आदि पर अपना प्रभाव डालता है, जातक को उस भाव से संबंधित भावों से अलग कर देता है, दूर कर देता है, हटा देता है, वंचित कर देता है। जैसे-सूर्य तथा राहु अथवा सूर्य तथा शनि अथवा सूर्य, शनि व राहु-तीनों का प्रभाव दूसरे भाव में हो तो जातक को सूर्य आदि पृथकताजनक ग्रहों की दशा अथवा मुक्ति में द्वितीय स्थान से विचारणीय कुटुंब से अलग होना पड़ जाता है। इसी प्रकार यदि सूर्य तथा उसी तरह के अन्य पृथकताजनक ग्रहों का प्रभाव तीसरे भाव अथवा तृतीयेश पर हो तो जातक के भाई-मित्र सूर्य आदि उक्त ग्रहों की दशा भुक्ति में साथ छोड़ देते हैं। यदि सूर्य आदि पृथकताजनक ग्रहों का प्रभाव यदि चौथे भाव तथा उसके स्वामी पर पड़ रहा हो तो-जातक अपना मकान नहीं बना पाता और यदि उसका मकान हो, तो उसको छोड़कर वह कहीं दूसरी जगह पर जाकर रहता है। इसी प्रकार ऐसी परिस्थिति में जातक अपनी जन्मभूमि छोड़कर अन्य देश में जाकर बसता है। यदि यही पृथकताजनक प्रभाव पांचवें भाव तथा उसके स्वामी पर हो, तो जातक अपने पुत्र से अलग हो जाता है। यदि यह प्रभाव दसवें भाव तथा उसके स्वामी पर हो, तो जातक को नौकरी अथवा अपने पद से अलग होना पड़ता है और यदि जातक सतासीन है तो उसे सता का त्याग करने पर विवश होना पड़ता है।

सूर्य एक महान ग्रह है। यदि यह जन्मकुंडली में बलवान होकर स्थित हो, तो जातक को बलवान, बड़ा तथा धनाढ्य आदि बना देता है। जिस दशा को भी वह

अपने अधिकार से प्रदर्शित करता है, उस दिशा में उसका फल सूर्य की दशा–भुक्ति में प्राप्त होता है।

विशेष—सूर्य में अधिष्ठित राशियों का स्वामी और द्वादशेश—ये सब पृथकताजनक प्रभाव रखते हैं ये जिस भाव आदि पर अपना प्रभाव डालते हैं, उससे जातक को अलग कर देते हैं। जैसे यादि इनका प्रभाव सातवें भाव, उसके स्वामी या उसके कारक (शुक्र अथवा गुरु) पर हो तो जातक स्त्री अथवा पुरुष से अलग हो जाता है यानि तलाक तक की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। यह बात ध्यान रखने योग्य है कि किसी भी राशि का स्वामी, उस राशि में स्थित ग्रह अथवा ग्रहों के प्रभाव को लेकर ही कार्य करता है।

सूर्य को क्रूर ग्रह माना जाता है, पापी नहीं। लेकिन अधिकांश परिस्थितियों में यह भी पापीग्रह का कार्य करता है, केवल उस दशा में जब धर्म आदि के विवेचन में सात्विकता आदि का विचार करना हो। इसी प्रकार चंद्रमा यद्यपि नसैर्गिक शुभ ग्रह है, लेकिन जब सूर्य के पास (षष्ठ तिथि के आसपास) होता है तो क्षीण, निर्बल तथा पापी माना जाता है और अशुभ फल देता है।

पहले, पांचवें तथा नौवें भाव तथा इन भावों का स्वामी ग्रह अग्नितत्व के प्रतिनिधि है। दूसरे, छठे तथा दसवें भाव के स्वामी पृथ्वीतत्त्व के प्रतिनिधि हैं। तीसरे, सातवें तथा ग्यारहवें भाव तथा उनके स्वामी वायुतत्त्व के प्रतिनिधि हैं। चौथे, आठवें तथा बारहवें भाव तथा उनके स्वामी जलतत्व के प्रतिनिधि है।

जन्मकुंडली में पहला, दूसरा, चौथा, पांचवा, सातवां, नवां, दसवां तथा ग्यारहवां भाव शुभ–संज्ञक है। जैसे धन का विचार करना हो तो यदि इन भावों के स्वामी बलवान होकर स्थित हो तो धनप्रद होते हैं। तीसरा, छठा, आठवां तथा बारहवां भाव अशुभ संज्ञक है। यदि इनके स्वामी होकर बलवान हों, तो आर्थिक क्षेत्र में हानिदायक सिद्ध होते हैं। जब कोई ग्रह उपर्युक्त शुभ भावों का स्वामी होकर केन्द्र आदि शुभ भावों में अपने उच्च स्वक्षेत्र अथवा मित्र की राशि में अपनी राशि से शुभ स्थानों में नवांश आदि शुभ वर्गों में, वक्री होकर शुभग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट होकर अपनी राशि को देखता हुआ योगकारक आदि गुणों से युक्त होकर, दिग्बल से युक्त हुआ स्थित होता है तो वह बलवान होता है और जिस भाव का स्वामी होता है, उस भाव के लिए सदैव शुभफल प्रदान करता है।

सूर्य का अरिष्ट निवारण—मेष लग्न में सूर्य पंचमेश होता है यानि एक त्रिकोण का स्वामी होता है। अतः सूर्य नैसर्गिक क्रूर ग्रह होता हुआ भी शुभफल प्रदान करेगा। इसकी दशा अथवा भुक्ति पांचवें भाव से संबंधित पुत्र–प्राप्ति, शुभ–मंत्रणा शक्ति, प्रतियोगी परीक्षा में सफलता आदि और निज कारकतत्व संबंधी राज्य, मान, यश, सता–प्राप्ति शुभफल प्रदान करेगा। अतः सूर्य का बलवान होना अति आवश्यक है।

सूर्य को बलवान करने के लिए सूर्य रत्न माणिक धारण करना चाहिए। माणिक रत्न मंत्रणा शक्ति की वृद्धि करेगा तथा सूर्य बल पाकर हृदय को बलवान करेगा। पेट के रोगों का शमन करेगा। राज्य की ओर अनुकूलता और लाभ देगा। पुत्र प्राप्ति और पुत्रों की वृद्धि में सहायक होगा। भाग्य में वृद्धि करेगा।

वृष लग्न में सूर्य चौथे भाव का स्वामी होता है। नैसर्गिक क्रूर ग्रह का केन्द्र का स्वामी होना सूर्य की क्रूरता को काफी हद तक दूर कर देता है और इसलिए सूर्य पर थोड़ा सा भी शुभ प्रभाव सुख, संपत्ति, भवन, वाहन आदि की वृद्धि करेगा और यदि सूर्य निर्बल तथा पापयुक्त अथवा पापदृष्ट हुआ तो शरीर में व्याधि, दुःख, मानसिक क्लेश, कलह, शत्रुता, वाहन हानि, ग्रह–हानि, राज्य से चिंता आदि की उत्पत्ति करेगा।

चूंकि वृष लग्न में सूर्य चतुर्थेश बनता है। यहां माणिक धारण करना अच्छा रहेगा। इससे बली होकर सूर्य सुखों में वृद्धि, मकान, वाहन आदि की प्राप्ति, पिता के स्वास्थ्य में वृद्धि, आंखों में रोशनी, जनता में प्रियता, राज्य की ओर से मान में वृद्धि, यश और स्वास्थ्य में वृद्धि करेगा।

मिथुन लग्न के लिए सूर्य तीसरे भाव का स्वामी होता है। तृतीयेश अशुभ माना जाता है। अतः यहां पर सूर्य अधिक शुभफल प्रदान नहीं करेगा। यहां पर माणिक रत्न पहनकर सूर्य को बलवान करना उचित होगा। सूर्य को बलान्वित किये जाने से बाहुबल में वृद्धि, छोटे भाईयों की आयु और स्वास्थ्य में वृद्धि, जातक की अपनी आयु की वृद्धि, मित्रों की प्राप्ति, यश, मान और राज कृपा की प्राप्ति तथा साली के पति (साढू) को लाभ होगा।

कर्क लग्न में सूर्य दूसरे भाव का स्वामी होता है। यदि कर्क लग्न में सूर्य बलवान हो तो राज्य से अधिकार की प्राप्ति, नेत्रों की ज्योति अच्छी रहती है, धन का लाभ रहता है। लेकिन यदि सूर्य निर्बल हो तो अल्पधन, अधिकारों की हानि, कुटुम्ब से अलगाव, आंखों के रोग आदि होते हैं। यदि यहां स्थित सूर्य निर्बल हो तो उसे सूर्य रत्न माणिक पहनकर बलवान किया जाना चाहिए। सूर्य के बली होने से आंखों के रोगों का शमन, धन की वृद्धि, अधिकार प्राप्ति, विद्या में वृद्धि, वाणी के दोषों का शमन, बड़े मामा की आयु और स्वास्थ्य की वृद्धि होगी।

सिंह लग्न में सूर्य लग्नेश होने से केन्द्र और त्रिकोण का एक साथ स्वामी होता है। यहां सूर्य बहुत शुभफल प्रदाता है। यदि सूर्य बलवान हो तो अपनी दशा–भुक्ति में बहुत राज्य, धन, स्वास्थ्य, यश और प्रताप देता है। यदि सूर्य निर्बल हो, तो अल्प धन, अपमान आदि देता है। यहां माणिक द्वारा सूर्य को बलान्बित किये जाने से धन, आयु, स्वास्थ्य, कीर्ति आदि सभी दिशाओं में उन्नति होगी। हृदय, हड्डी तथा आंखों के रोगों का शमन होगा तथा पाचन शक्ति में वृद्धि होगी।

कन्या लग्न के लिए सूर्य बारहवें भाव का स्वामी होता है। यदि सूर्य बलवान हो और शुभग्रहयुक्त अथवा दृष्ट हो तो बहुत शुभफल प्रदान करने वाला, राज्य, धन,

स्वास्थ्य, प्रताप देने वाला होता है। परन्तु यदि सूर्य निर्बल हो तो अपनी दशा–भुक्ति में आंखों के रोग, महान व्यय कराने वाला तथा राज्य से अनिष्ट करवाता है। यहां माणिक धारण कर बलान्वित हुआ सूर्य शुभग्रहयुक्त अथवा दृष्ट हो तो आंखों के रोगों का शमन करने वाला, धन तथा स्वास्थ्य की वृद्धि, तथा राज्य से अधिकार प्राप्त कराने वाला होता है।

तुला लग्न के लिए सूर्य ग्यारहवें भाव का स्वामी होता है। अतः यहां सूर्य अशुभ होता है। परन्तु यह अशुभता स्वास्थ्य संबंधी होती है न कि धन संबंधी। बलवान सूर्य अपनी दशा–भुक्ति में अच्छी आय, राज्य, सम्मान और प्रताप देगा। सूर्य बलवान होने पर ही जातक की आय में वृद्धि होगी। अतः यहां माणिक धारण कर सूर्य को बलान्वित करना अच्छा होगा। बलान्वित सूर्य बड़े भाई के मान, धन और स्वास्थ्य की वृद्धि करेगा। दामाद तथा पुत्र वधू के स्वास्थ्य में वृद्धि होगी। चाचा के धन और स्वास्थ्य में बढ़ोत्तरी होगी तथा शुभ कर्मों में बुद्धि प्रवृत होगी।

वृश्चिक लग्न में सूर्य दसवें भाव का स्वामी होता है। एक नैसर्गिक क्रूर ग्रह के केन्द्र का स्वामी होने से क्रूरता को काफी हद तक दूर कर देता है। यहां पर सूर्य शुभग्रहयुक्त अथवा दृष्ट हो तो शुभफल, यश, पद, धन, उन्नति आदि देता है। यदि कमजोर हो तो राज्य की ओर से परेशानी, पिता के धन का नाश, अपयश आदि फल होता है।

चूंकि वृश्चिक लग्न में सूर्य दशमेश बनता है। अतः यहां माणिक द्वारा बलान्वित सूर्य राजसत्ता की प्राप्ति में सहायक होता है। यश में विशेषकर वृद्धि करेगा। पिता के धन में वृद्धि तथा जातक में सात्विक कर्मों का उदय होगा। माता की आयु और स्वास्थ्य में वृद्धि, पिता की आंखों के रोगों का शमन होगा तथा जातक के पुरुषार्थ में बढ़ोत्तरी होगी।

धनु लग्न में सूर्य नौवें भाव का स्वामी होता है। एक सात्विक ग्रह का नवमाधिपति होना सूर्य को शुभफल प्रदान करने वाला, राज्यदायक, धार्मिक, सात्विक, भाग्यशाली तथा राज कृपा का पात्र बनाता है। यहां निर्बल सूर्य पिता की आयु तथा धन की हानि करने वाला, राज्य से विरोध तथा हानि दिलाने वाला होता है। अतः माणिक धारण करके सूर्य की निर्बलता को दूर किया जा सकता है। बलवान सूर्य पिता को दीर्घायु प्रदान करेगा तथा धन का अत्यधिक लाभ पहुंचाएगा तथा व्यवसाय में भी लाभ देगा।

मकर लग्न के लिए सूर्य आठवें भाव का स्वामी होता है। यहां सूर्य को अष्टमाधिपति होने का दोष नहीं लगता। अतः यहां सूर्य शुभफल प्रदान करता है। वस्तुतः यदि यहां सूर्य बहुत शुभफल करता है। मकर लग्न में माणिक धारण कर बलान्वित हुआ सूर्य स्वास्थ्य और आयु में वृद्धि करता है। अनुसंधान कार्यों में सफलता, पिता के नेत्र रोगों का सदा के लिए शमन तथा बड़े मौसा की आयु और स्वास्थ्य में वृद्धि करेगा।

कुंभ लग्न में सूर्य सातवें भाव का स्वामी होता है। केन्द्राधिपति होने से सूर्य का अशुभ प्रभाव दूर हो जाता है और यदि सूर्य थोड़ा भी शुभ प्रभाव में हुआ तो सूर्य शुभफल प्रदान करने वाला होगा। कुंभ लग्न में सूर्य के शुभ प्रभाव हेतु माणिक धारण करना उचित रहेगा। यहां बलान्वित हुआ सूर्य स्त्री के कुल को तथा स्त्री को उच्च स्तरीय बनाता है। स्त्री के स्वास्थ्य और आयु में वृद्धि करेगा। व्यापार तथा राजकृपा में वृद्धि, ताऊ के स्वास्थ्य और धन की वृद्धि तथा उदर रोगों का शमन करता है।

मीन लग्न के लिए सूर्य छठे भाव का स्वामी होता है। मीन लग्न में सूर्य सदैव पापफल ही प्रदान करता है, परन्तु मीन लग्न में निर्बल सूर्य धनादि के विषय में अधिक अशुभ फल नहीं देता। यहां सूर्य को माणिक पहनकर अवश्य ही बलान्वित किया जाना चाहिए; सूर्य के बलान्वित होने से जातक के स्वास्थ्य में सुधार होगा। शत्रुओं की संख्या में कमी होगी। पुत्र के नेत्र दोष समाप्त होंगे। पिता के मान-सम्मान में वृद्धि होगी। स्त्री के नेत्र रोगों का शमन होगा। माया के धन, आयु और स्वास्थ्य का लाभ होगा।

सूर्य के अशुभ प्रभाव से बचाव के साधन—जन्मकुंडली में मनुष्य के अच्छे-बुरे कर्मों का लेखा-जोखा नहीं होता। कर्मों का फल प्रत्येक मनुष्य को अवश्य ही भोगना पड़ता है। भारतीय धर्म शास्त्रों के अनुसार, प्रत्येक मनुष्य के जीवन का संबंध पूर्वजन्म मे उसके द्वारा किए गये कर्मों से होता है। यही कारण है कि अनेक मनुष्य इस जन्म में अनेक घृणित कार्य करने पर भी पूरी तरह से सुखी रहते है। ऐसे लोग इस जन्म में किये हुए कर्मों का फल अगले जन्म में पाएंगे। अतः ऐसी स्थिति में ही माना जाएगा कि उन्हें इस जन्म में पिछले जन्म में किए गए शुभ कर्मों का फल प्राप्त हो रहा है। जिस कारण उन्हें घृणित कार्य करने पर भी वे पूरी तरह से सुखी है।

हमारे प्राचीन ज्योतिषाचार्यों ने यह फल दो प्रकार का माना है-दृढ़ तथा अदृढ़ (बलवान तथा निर्बल)। निर्बल कर्मों का उपाप, पूजा, दान, मंत्र जाप और रत्न आदि धारण करके किया जा सकता है परन्तु बलवान कर्मों का कोई उपाप नहीं है। उनका फल तो पूर्णरूपेण भुगतना ही पड़ेगा।

फिर भी मनुष्य उपाय द्वारा, उपचार, मंत्र जप एवं रत्नों की मदद लेकर अपने अशुभ कर्मों के प्रभाव को काफी सीमा तक कम कर सकता है। विशेषकर उस ग्रह की शांति बहुत आवश्यक है, जिसका कि उस समय प्रकोप चल रहा हो।

हमारे प्राचीन ऋषियों-महर्षियों ने जहां जड़ी-बूटियों की खोज करके उनके गुण-दोष, स्वभाव आदि का ज्ञान प्राप्त किया, वहां पर उन्होंने इसके साथ-साथ वह साधन भी खोजे जिससे मनुष्य स्वास्थ्य तथा आयु प्राप्त कर सके। अतः उन्होंने औषधि के साथ-साथ मंत्रजप, दान और रत्नों को भी ग्रहों के द्वारा उत्पन्न रोगों के शमन में सहायक माना।

सूर्य का कारकत्व—सूर्य ग्रह के दुष्प्रभाव के उपाय के बचाव हेतु, सूर्य से

संबंधित वस्तुएं कौन सी है जिसका दानादि लाभदायक होता है। इसलिए सूर्य का कारकत्व जानना बहुत आवश्यक है। सूर्य के कारकत्व के विषय में निम्नलिखित प्रकार से वर्णन किया गया है—

★ सूर्य एक क्षत्रिय ग्रह है, अत: सूर्य ग्रह का दान का पात्र (लेने वाला) भी क्षत्रिय ही होना चाहिए।

★ सूर्य हृदय का द्योतक माना गया है। यदि जन्मकुंडली में सूर्य अथवा इसकी राशि पर राहु का प्रभाव हो तो हृदय रोग होने की संभावना अधिक होती है, विशेषकर जब पांचवां भाव और पंचमेश भी राहु के प्रभाव में हो। ऐसी स्थिति में सूर्य को बलवान करना तथा राहु की पूजा, मंत्र जाप, दान आदि करना उचित माना गया है।

★ सूर्य प्रकाश है, अत: आंखों का प्रतिनिधित्व करता है। यदि जन्मकुंडली में सूर्य पीड़ितावस्था हो, जिससे आंख को भय हो तो सूर्य को बलवान किया जाना बहुत आवश्यक होता है, जिसके लिए सूर्य रत्न माणिक, सोना अथवा तांबा में धारण किया जाता है।

★ सूर्य राजा, राज्य या सरकार है, अत: राज्य तथा उसके अधिकारियों की ओर से कष्ट प्राप्त होने की स्थिति मे सूर्यदेव का पूजन, नमस्कार और दानादि करना उचित रहता है।

★ ग्रहों की शांति का एक शास्त्रीय सिद्धांत यह भी है कि जिस भी ग्रह पर पापग्रह का प्रभाव पड़ रहा हो तो उसको बलवान किया जाना उचित है, यानि उस ग्रह से संबंधित रत्नादि धारण करना चाहिए और जो ग्रह अपनी युति अथवा दृष्टि से पीड़ा दे रहा हो, उस ग्रह की शांति मंत्र, जाप, व्रत-पूजा औषधि स्नान और दानादि द्वारा करनी चाहिए।

★ सूर्य अग्नि रूप है। जब यह ग्रह मंगल आदि अन्य ग्रहों से मिलकर लग्नों को पीड़ित कर रहा हो तो उपरोक्त नियमनुसार सूर्य आदि पीड़ा देने वाले ग्रहों की पूजा का उपाय किया जाएगा और लग्नों को उनके स्वामी ग्रहों द्वारा बलवान करने का उपाय किया जाएगा।

★ सूर्य पृथकताजनक और कलहकारी ग्रह है। जब यह ग्रह किसी जन्मकुंडली के सातवें भाव में शत्रु राशि का होकर बैठा हो तो यह दाम्पत्य जीवन में कलह की स्थित उत्पन्न कर स्त्री अथवा पुरुष से तलाक तक करवा देता है। विशेषकर ऐसी परिस्थिति में जबकि सातवें भाव, सप्तमेश पर शनि अथवा राहु, जो सूर्य की ही भांति अलगाव उत्पन्न करने वाले ग्रह हैं, का भी प्रभाव हो। सूर्य के उक्त प्रभाव के कारण सूर्य का व्रत, पूजा, मंत्र जप तथा दानादि करना चाहिए और जिस ग्रह की राशि सूर्य द्वारा सप्तम भाव में पीड़ित हो रहा हो, उसको बलवान करने के लिए उससे संबंधित रत्न धारण करना चाहिए।

★ सूर्य पिता है। यदि सूर्य नवमेश होता हुआ राहु तथा शनि के प्रभाव में हो तो जातक के पिता के कष्ट का सूचक है। ऐसी दशा में सूर्य को अवश्य ही बलवान किया जाना चाहिए तथा राहु और शनि की पूजा दानादि का उपाय करना चाहिए। सूर्य को बल प्रदान करने के लिए सूर्य रत्न माणिक को सोने की अंगूठी में जड़वाकर अनामिका अंगुली में पहनना चाहिए तथा राहु और शनि को मंत्र जप, पूजा, व्रत, दानादि द्वारा शांति करनी चाहिए।

★ सूर्य अस्थि (हड्डी) का भी प्रतिनिधि है। जब सूर्य लग्नेश होकर चौथे भाव में पीड़ित हो तो हड्डी टूटने का योग बनता है। ऐसी दशा में सूर्य को बलवान करना अति आवश्यक होगा। इसके लिए जातक को सूर्य रत्न माणिक सोने या तांबे की अंगूठी में जड़वाकर धारण करना चाहिए तथा जिस ग्रह के पाप प्रभाव से सूर्य पीड़ित हो रहा हो, उसके मंत्र जप, व्रतादि का उपाय भी अवश्य ही करना चाहिए।

★ जन्मकुंडली में पांचवें भाव में स्थित सूर्य गर्भ की हानि करता है। ऐसी दशा में सूर्य की पूजा, मंत्र जप करना चाहिए तथा जिस राशि में सूर्य पांचवें भाव में स्थित हो, उसके स्वामी को रत्नादि धारण करके बलवान करना चाहिए।

सूर्य रत्न (माणिक) की धारण विधि—किसी भी रत्न को धारण करने का निर्णय लग्नेश द्वारा किया जा सकता है। लग्नेश जो भी ग्रह हो, उससे संबंधित रत्न धारण करना चाहिए। क्योंकि लग्न ही एक ऐसा भाव होता है जो अपने अंदर जन्मकुंडली के सभी गुण-दोषों को समाहित किए हुए होता है। यह भाव आयु से तो संबंधित है ही, स्वास्थ्य से भी इसका गहरा संबंध है। यह यश की प्राप्ति, विचारों और आचार-व्यवहार का सूचक है। यही व्यापार-व्यवसाय का भी निर्णय करता है। इसलिये लग्नेश से संबंधित रत्नों को ही धारण करना चाहिए।

माणिक सूर्य ग्रह का रत्न है। लेकिन यह सभी व्यक्तियों के लिए लाभदायक नहीं होता। अतः लग्न के अनुसार निम्न स्थितियों में ही माणिक धारण करना चाहिए—

मेष लग्न—सूर्य मेष लग्न में लग्नेश मंगल का मित्र एवं त्रिकोण का स्वामी होता है। अतः मेष लग्न के जातक राज्य कृपा प्राप्ति, संतान सुख प्राप्त करने तथा बुद्धि की प्रखरता के लिए माणिक धारण करें तो लाभप्रद होगा। यदि मेष राशि के जातक पर सूर्य की महादशा है तो माणिक धारण करने से अत्यधिक लाभ होगा।

वृष लग्न—वृष लग्न में सूर्य लग्नेश, शुक्र के साथ शत्रुता भाव रखता है, परन्तु चौथे भाव का स्वामी भी है। इस राशि के जातक को माणिक धारण करना उचित नहीं है। परन्तु यदि वृष राशि के जातक पर सूर्य की महादशा है तो माणिक धारण करने से जातक को मातृ-सुख, मानसिक शांति एवं वाहन सुख प्राप्त होता है।

मिथुन लग्न—मिथुन लग्न में सूर्य तीसरे भाव का स्वामी होता है। अत: मिथुन लग्न के जातक को माणिक कभी भी धारण नहीं करना चाहिए।

कर्क लग्न— कर्क लग्न में सूर्य दूसरे स्थान (धन भाव) का स्वामी होता है। साथ ही वह लग्नेश चंद्रमा का मित्र भी है अत: कर्क लग्न वाले जातक धनाभाव के समय या आंखों के कष्ट के समय माणिक धारण कर सकते हैं। लेकिन साथ ही यह भी ध्यान रखना चाहिए कि दूसरा भाव धन स्थान के साथ-साथ मारक भी होता है। अत: माणिक के साथ मोती पहनना भी लाभदायक होगा।

सिंह लग्न— सिंह लग्न में सूर्य लग्नेश होता है। अत: सिंह लग्न के जातक को आजीवन माणिक धारण करना अत्यंत लाभप्रद सिद्ध होता है। माणिक धारण करने से इस लग्न का जातक आत्मबल में वृद्धि होकर निर्भय बनता है। जातक मानसिक व शारीरिक दोनों तरह से स्वस्थ रहता है।

कन्या लग्न—कन्या लग्न में सूर्य बारहवें भाव का स्वामी होता है। अत: इस लग्न के जातक को कभी भी माणिक नहीं धारण करना चाहिए।

तुला लग्न—तुला लग्न में सूर्य ग्यारहवें भाव का स्वामी होता है तथा लग्नेश शुक्र के साथ शत्रुता रखता है। तुला लग्न वाले जातक को केवल सूर्य की महादशा में ही माणिक धारण करना चाहिए।

वृश्चिक लग्न—वृश्चिक लग्न में सूर्य दसवें भाव का स्वामी होता है तथा साथ ही लग्नेश मंगल का मित्र भी है। अत: इस राशि के जातक को नौकरी में उन्नति, व्यवसाय में वृद्धि, मान-सम्मान तथा राजकृपा प्राप्त करने के लिए माणिक धारण करना लाभप्रद होता है।

धनु लग्न—धनु लग्न में सूर्य नौवें भाव का स्वामी होता है तथा लग्नेश बृहस्पति का मित्र भी है। अत: इस राशि में जन्मे जातक पिता-सुख, भाग्योन्नति एवं आर्थिक लाभ प्राप्त करने के लिए माणिक धारण कर सकते है।

मकर लग्न— मकर लग्न में सूर्य आठवें भाव का स्वामी होता है तथा लग्नेश शनि और सूर्य में परम शत्रुता है, अत: मकर लग्न के जातक को भूलकर भी माणिक नहीं धारण करना चाहिए।

कुंभ लग्न—कुंभ लग्न में सूर्य सातवें भाव का स्वामी हैं तथा लग्नेश शनि से सूर्य की शत्रुता है। अत: कुंभ राशि के जातक को कभी भी माणिक धारण नहीं करना चाहिए।

मीन लग्न—मीन लग्न में सूर्य छठे भाव का स्वामी है, छठां भाव शत्रु भाव होता है। इसके स्वामी बुध और राहु माने जाते हैं। मीन लग्ने वाले जातक को माणिक धारण करना हानिप्रद हो सकता है। अत: इस लग्न वाले जातक को माणिक नहीं धारण करना चाहिए।

रत्न धारण विधि—जो माणिक धारण किया जाए वह कम से कम ढाई रत्ती का और निर्दोष होना चाहिए। माणिक यथा संभव रविवार, सोमवार को खरीदकर अंगूठी में इस प्रकार जड़वायें कि वह त्वचा को स्पर्श करें। रत्न सोने अथवा तांबे की अंगूठी में जड़वाना चाहिए।

अंगूठी शुक्ल पक्ष के किसी रविवार के दिन सूर्योदय के समय धारण करनी चाहिए। धारण करने से पूर्व अंगूठी को कच्चे दूध या गंगाजल में डुबोकर रखनी चाहिए। फिर उसको शुद्ध जल से स्नान कराके पुष्प, चंदन और धूपबत्ती से उसकी उपासना करनी चाहिए और 7000 बार निम्नलिखित मंत्र का जाप करना चाहिए—

मंत्र— ''ॐ धृणिः सूर्याय नमः।''

यह अंगूठी दाहिने हाथ की तर्जनी अंगुली में पहननी चाहिए।

यदि माणिक्य खरीदने में जातक असमर्थ है तो माणिक के बदले में लालड़ी, लाल रंग का तामड़ा, सूर्यकांत मणि या माणिक्य के रंग का जिरकान तथा माणिक्य के रंग का हकीक पत्थर धारण किया जा सकता है।

माणिक्य के साथ हीरा, नीलम, गोमेद एवं लहसुनिया रत्न कभी भी नहीं पहनना चाहिए।

शुभ-अशुभ सूर्य का विश्लेषण—सूर्य आदि ग्रह जो आधिपत्य के कारण शुभ श्रेणी में हैं, वह जितना ज्यादा बलान्वित होगा, अपनी दशा-भुक्ति में उतना ही अधिक शुभफल देगा।

यदि ग्रह बलवान हो, लग्न से शुभ स्थान में स्थित हो लग्नेश का मित्र हो, निर्बल न हो, अपनी राशि में भी अच्छे स्थान में स्थित हो तो उत्तम फल देता है। ज्योतिषशास्त्र में ग्रह का शुभाशुभ फल उसकी शुभता की स्थिति पर निर्भर करता है।

प्रत्येक शुभ ग्रह का फल सबसे पहले उस भाव संबंधी बातों से होता है, जिसमें कि उसकी स्थिति हो, दशा के मध्य में ग्रह उस राशि संबंधी फल देता है, जिस राशि में वह स्थित होता है। यह ग्रह अपनी दशा के अंत में शुभ-अशुभ फल उन ग्रहों को देता है, जिन ग्रहों द्वारा वह दृष्ट हो। इसी प्रकार अशुभ ग्रह पहले अपनी उच्च-नीच, मित्रादि राशि का, फिर उस भाव का जिसमें वह स्थित हो, और अंत में उस दृष्टि का शुभ-अशुभ देता है जो कि उस पर पड़ रही हो।

अशुभ फल का उपाय—यह देखा गया है कि अनेकों जन्मकुंडली में ग्रह अकेले न बैठकर दो या इससे अधिक संख्या में इकट्ठे होकर एक ही राशि में बैठ जाते हैं। ऐसी अवस्था में यह जानना आवश्यक हो जाता है कि इस योग का फल शुभ होगा या अशुभ। यदि अशुभ फल होता है तो उसके लिए उपाय अवश्य किया जाना चाहिए। यहां पर हम सूर्य की अन्य ग्रहों से युति के बारे में बता रहे हैं—

यदि सूर्य और चंद्रमा का योग हो, तो इस योग में चन्द्रमा पक्षबल से क्षीण हो जाएगा और जिस भाव का यह स्वामी होगा, उसको अपनी दशा–भुक्ति में हानि देगा। अत: इस योग में चद्रमा को बलवान करना उचित होगा। चंद्रमा को बलवान करने के लिए चांदी की अंगूठी में मोती जड़वाकर पहनना लाभदायक होगा और चंद्रमा के पीड़ित करने वाले ग्रह सूर्य की शांति के लिए मंत्र जप, व्रत, औषधि स्नान तथा दानादि करना अच्छा रहेगा।

यदि सूर्य और मंगल का योग हो और मंगल शुभ भावों का स्वामी हो, तो मंगल का सूर्य से योग मंगल के बल को क्षीण कर देगा और उस भाव के लिए, जिसका कि वह स्वामी है, हानिकारक सिद्ध हो सकता है। ऐसी दशा में मंगल को बलवान करना अति आवश्यक होगा।

अत: मंगल को बलवान करने के लिए चांदी की अंगूठी में मूंगा जड़वाकर पहनने से लाभ होगा। यहां सोने की अंगूठी में मूंगा जड़वाना उचित न होगा, क्योंकि सूर्य सोने का द्योतक है। अत: इस योग में सोना पहनने से सूर्य बलवान हो जायेगा तथा मंगल को पहले से ज्यादा हानि पहुंचायेगा।

यदि सूर्य और बुध का योग हो और बुध का आधिपत्य शुभ भाव का हो, तो प्राय: इस योग में बुध को सूर्य से हानि पहुंचती है। परन्तु यदि इस योग पर शुभ ग्रहों की दृष्टि आदि का प्रभाव हो तो यह योग लाभप्रद होगा। यदि यह योग अशुभ ग्रहों की दृष्टि में है तो बुध को बलवान करना उचित होगा। इसके लिए बुध का रत्न पन्ना पहनना शुभ होगा तथा सूर्य के मंत्र जप, व्रत, दानादि से शांति करनी होगी।

यदि सूर्य और बृहस्पति का योग हो तो इस योग में बृहस्पति को सूर्य से थोड़ी हानि पहुंचने की संभावना रहती है। ऐसी स्थिति में बृहस्पति को बलवान करना होगा। इसके लिए चांदी की अंगूठी में पीला पुखराज धारण करना चाहिए तथा सूर्य की शांति मंत्र जप, व्रत दानादि से करनी चाहिए।

यदि सूर्य और शुक्र का योग हो, तो इस योग में शुक्र को सूर्य से अधिक हानि होती है। ऐसी स्थिति में शुक्र को बलवान करना होगा। इसके लिए शुक्र रत्न हीरा प्लेटिनम की अंगूठी में जड़वाकर पहने तथा सूर्य की शांति का उपाय करें।

यदि सूर्य और शनि का योग हो तो, ये दोनों ही ग्रह क्रूर और पापी हैं। ये ग्रह जिस भी भाव में स्थित होंगे या देखते होंगे, उस भाव की हानि अवश्य करेंगे। ऐसे में इन दोनों ग्रहों की शांति कराना ही उचित होगा। न कि इनसे संबंधित रत्न धारण करके इन्हें बलवान करना।

सूर्य की भांति ही राहु भी पृथकताजनक ग्रह है। जिस भी भाव में इन दोनों ग्रहों का योग होगा या जिस भाव पर इनकी दृष्टि पड़ रही होगी, उससे जातक को अलग कर देगें। ऐसी स्थिति में इन ग्रहों के रत्न पहनना लाभदायक न होकर हानिकारक सिद्ध होगा। इसके लिए इन दोनों ग्रहों की शांति करानी ही ज्यादा उचित होगी।

इस योग में एक विशेष बात यह है कि राहु सूर्य का परम शत्रु है। सूर्य के साथ

बैठे होने से राहु उस भाव को भी हानि पहुंचायेगा, जिस भाव का सूर्य स्वामी है। ऐसी स्थिति में सूर्य रत्न माणिक को सोने में धारण करके सूर्य को बलवान करना होगा तथा राहु की शांति करानी अति आवश्यक होगी।

सूर्य और केतु का योग भी विचित्र है। जहां एक और दोनों पापी ग्रह है, वहीं अग्नि रूप भी है। जिस भाव में भी इनका योग अथवा दृष्टि का प्रभाव होगा, उस भाव से संबंधित वस्तुओं से पृथकता होगी और उस अंग में आग लग जाना भी संभावित होगा। ऐसी स्थिति में दोनों ग्रहों की शांति कराना ही ज्यादा उचित उपाय होगा।

टोटकों द्वारा उपाय—सूर्य जब जन्मकुंडली में पीड़ितावस्था में होता है तो सूर्य द्वारा प्रदर्शित बातें—हृदय को कष्ट, राजदरबार से परेशानी, आंखों में परेशानी, दिल का दौरा, उदर रोग, हड्डियों से संबंधित रोग कष्ट दे रहे हो तो समझना चाहिए कि सूर्य पीड़ित है ऐसी स्थिति में सूर्य से संबंधित वस्तुऐं जैसे—गुड़, गेहूं, ताबां, केसर, रक्त पुष्प, लाल रंग का वस्त्र, घी आदि दान करना शुभ माना गया है तथा भगवान विष्णु के मंत्र जप अथवा विष्णु पूजा करना भी श्रेष्ठ माना जाता है।

लाल किताब के अनुसार जिस व्यक्ति का सूर्य बलवान होता है वह व्यक्ति नमक कम खाता है और निर्बल सूर्य वाला व्यक्ति नमक अधिक खाता है। सूर्य सप्तम भाव (यानि अपनी नीच राशि तुला) में अशुभ फल दे रहा हो तो रात को आग को दूध से बुझाना चाहिए अथवा मुंह में मीठा डालकर ऊपर से पानी पीना चाहिए।

यदि सूर्य दसवें भाव में पीड़ित होकर कष्ट पहुंचा रहा हो तो चलते पानी में तांबे का सिक्का बहायें तथा तांबे का एक सिक्का सदा अपने पास रखें।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य और बृहस्पति एकत्र होकर जातक को आर्थिक कष्ट पहुंचा रहे हो तो ऐसी स्थिति में जातक को केसर खाना अथवा स्वर्णाभूषण धारण करना उचित रहता है।

यदि सूर्य-शनि के योग से पत्नी का स्वास्थ्य बिगड़ रहा हो तो स्त्री के वजन के बराबर हरी चरी को गाय या बैल को खिलाएं। इस योग में मकान आदि से संबंधित शनि वस्तुओं की हानि हो रही हो तो सूर्य की वस्तुओं-गुड़, गेहूं, तांबा आदि का दान करें यदि सूर्य की वस्तुओं की हानि हो रही हो तो शनि संबंधित वस्तुओं का दान करें।

❑❑❑

बृहस्पति का शुभाशुभ प्रभाव

भारतीय ज्योतिष शास्त्र में बृहस्पति को देवताओं का गुरु माना गया है। ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि में बृहस्पति ग्रह जितना शुभफलदायक प्रभाव अन्य किसी ग्रह का नहीं है। जिन भावों, ग्रहों आदि पर बृहस्पति की दृष्टि होती हैं वे प्राय: अपने गुणों आदि में प्रचुर, प्रफुल्लित, दीर्घजीवी, प्रसन्न तथा धनी आदि होते हैं और यह शुभफल बृहस्पति की महादशा-भुक्ति में प्राप्त होता है, लेकिन बृहस्पति की दृष्टि का विचार करते समय यह अवश्य देखना चाहिए कि कहीं बृहस्पति स्वयं तो शनि, राहु आदि अशुभ ग्रहों से अधिष्ठित राशि का स्वामी तो नहीं है।

यदि ऐसा है, तो उसकी दृष्टि भी उन्हीं शनि, राहु आदि अशुभ ग्रहों की दृष्टि मानी जाएगी, जिनसे अधिष्ठित राशि का स्वामी बृहस्पति होगा। एक अन्य विशेष बात बृहस्पति के संबंध में ध्यान रखने योग्य यह है कि बृहस्पति पंचमेश होता हुआ पंचम भाव में आठवें यानि बारहवें भाव में बैठा है और वहां शत्रु राशि में है तो उससे पुत्र संतान की प्राप्ति नहीं होगी। परन्तु यदि तुला राशि में बारहवें भाव में स्थित बृहस्पति यदि वक्री है तो एक से अधिक पुत्र संतान की प्राप्ति अपनी दशा-भुक्ति में अवश्य ही करवाता है।

बृहस्पति ग्रह के संबंध में एक विशेष बात यह है कि बृहस्पति जब कर्क राशि में उच्च का होकर ग्यारहवें भाव में बैठा होता है तो एक पुरुष ग्रह होते हुए भी अपनी दशा-भुक्ति में स्त्री-संतान यानि लड़कियों को उत्पन्न करता है। इसका मुख्य कारण यह है कि बृहस्पति जिन दो भावों (चौथे और सातवें) का स्वामी बनता है, वे दोनों स्त्री भाव हैं—एक माता का और दूसरा स्त्री का। बृहस्पति इसी प्रभाव को लेकर और स्त्री राशि कर्क में स्थित होकर ही अपनी पूर्ण सप्तम दृष्टि पांचवें भाव पर डालता है, जिसका परिणाम स्त्री संतान की उत्पत्ति होता है। यही भी देखने में आता है कि मिथुन लग्न वालों के लिए मिथुन लग्न पर पड़ रही बृहस्पति की दृष्टि लाभदायक नहीं होती, विशेषकर उस स्थिति में जबकि बृहस्पति पर किसी पापग्रह का प्रभाव हो और बृहस्पति स्वक्षेत्री अथवा उच्च का न हो।

बृहस्पति के संबंध में यह बात भी ध्यान में रखनी चाहिए कि बृहस्पति स्त्रियों का पति है। जिन स्त्रियों का लग्न कन्या, मिथुन हो, उनकी कुंडली में बृहस्पति स्वयं सातवें भाव का स्वामी बन जाता है। पतिकारक अथवा बृहस्पति का स्वयं पति भाव

का स्वामी बन जाना विशेष अर्थ रखता है-वह यह है कि ऐसी स्थिति में बृहस्पति अपने ऊपर जो प्रभाव होगा, वह प्रभाव कुंडली का सप्तमेश और सप्तम भाव कारक दोनों पर होंगे।

इसलिए यदि मिथुन और कन्या लग्न वाली स्त्रियों की कुंडली में बृहस्पति पर चन्द्रमा, शुक्र का शुभ प्रभाव है तथा बृहस्पति केन्द्रादि स्थिति के कारण बली है और पापग्रहों के प्रभाव आदि में नहीं है, तो स्त्रियों को दीर्घायु, धार्मिक, अनुकूल, धनवान तथा गुणवान पति मिलेगा और इसके विपरीत यदि मिथुन और कन्या लग्न वाली स्त्रियों की कुंडली में बृहस्पति तथा सातवें भाव पर मंगल, केतु आदि पापग्रह ग्रहों का प्रभाव हो तो पति के जीवन को भारी भय होगा और यदि शनि राहु, आदि पापग्रह का उन पर प्रभाव हुआ तो दामपत्य जीवन क्लेश से भरा होगा और यह स्थिति तलाक तक पहुंच जाएगी।

बृहस्पति के अशुभ प्रभाव से मुक्ति के साधन—मेष लग्न में बृहस्पति नौवें और बारहवें भाव का स्वामी होता है। द्वादशाधिपति होने के कारण बृहस्पति अपनी दूसरी राशि के भाव यानि नौवें भाव संबंधी फल प्रदान करेगा। इसलिए यदि बृहस्पति बलवान हुआ तो राज्याधिकारियों की कृपा, धार्मिक वृर्ति, उच्च विचार, व्यवसाय में उन्नति, लाभ आदि नौवें भाव संबंधी फल प्राप्त होंगे और यदि बृहस्पति निर्बल हुआ तो राज्याधिकारियां द्वारा विरोध, धर्म हानि, भाग्य की हानि आदि अशुभ फल होंगे।

चूंकि यहां पर बृहस्पति नवमेश अथवा द्वादशेश बनता है, अतः मुख्य फल नवम भाव का प्रदान करता है। यहां पुखराज (बृहस्पति रत्न) धारण करना अधिक उचित रहेगा। यह बृहस्पति को बलवान करेगा, तब वह जातक को राज्यकृपा का पात्र बनायेगा। राज्याधिकारियों को अनुकूल करेगा। राज्यसत्ता की प्राप्ति करायेगा। पिता के धन, आयु और स्वास्थ्य में वृद्धि करेगा। छोटी बहन के पति की आयु और स्वास्थ्य के लिए शुभ फलदायक होगा। अविवाहित बहन के विवाह में मदद देगा भाग्य में वृद्धि, धन में वृद्धि तथा उन्नति आदि शुभफल प्रदान करेगा।

बृहस्पति वृष लग्न में आठवें तथा ग्यारहवें भाव का स्वामी होता है। ये दोनों भाव अनिष्टकारी प्रभाव वाले हैं। यहां बृहस्पति स्वास्थ्य के संबंध शुभफल नहीं देगा, एकादशेश होने के कारण लाभ अवश्य देगा। यह तब ही संभव होगा, जब बृहस्पति बलवान होगा। यदि बृहस्पति निर्बल हुआ तो आय में हानि, बड़े भाई को हानि, पुत्र को हानि, धननाश तथा रोगादि जैसे अशुभ परिणाम प्राप्त होंगे। यहां पीला पुखराज सोने की अंगूठी में जड़वाकर धारण करने से बृहस्पति बलवान होगा। बलवान बृहस्पति धन वृद्धि, बड़े भाग्य के भाग्य तथा आयु में वृद्धि करता है। चाचा, पुत्रवधू,

दामाद-सभी की आयु, स्वास्थ्य और धन में वृद्धि करता है। शुभ कर्मों में भी रुचि बढ़ाता है।

मिथुन लग्न में बृहस्पति सातवें और दसवें केन्द्र भावों का स्वामी होता है। केन्द्राधिपित होने के कारण बृहस्पति दोषपूर्ण होता है और छठे, आठवें, बारहवें, दूसरे भावों में निर्बल होकर बैठे होने की दशा में स्वास्थ्य के लिए अपनी महादशा-भुक्ति में बहुत अशुभ फलदायक होगा। इसके लिए यहां पर पीला पुखराज सोने की अंगूठी में धारण कर बृहस्पति को बलवान करना आवश्यक है। बलवान बृहस्पति राजसत्ता की प्राप्ति में मददगार होगा साथ ही धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ा देगा, पिता के धन में वृद्धि करेगा और पति की उन्नति का कारण बनेगा।

कर्क लग्न में बृहस्पति छठे और नौवें भाव का स्वामी होता है। इसकी मूल त्रिकोण छठे भाव में पड़ती है, तो भी छठा भाव इतना अशुभ नहीं है, जितना कि नौवां भाव शुभ है। अतः बृहस्पति कुछ शुभफल ही देता है। कर्क लग्न में बृहस्पति जितना अधिक बलवान होगा, उतना अधिक धन, राज्य, धार्मिकता आदि शुभफल प्रदान करेगा। यदि निर्बल हुआ तो भाग्य की हानि, राज्य से विरोध, धर्म में अरुचि तथा ब्राह्मणों से बैर-विरोध होगा। यहां धन की वृद्धि के लिए बृहस्पति को पीला पुखराज धारण कर बलवान करना आवश्यक होगा। इससे स्वास्थ्य में भी सुधार होगा। राजकृपा में वृद्धि, छोटे साले के धन और मान में वृद्धि, शत्रुओं में मेल-मिलाप तथा मामा के सुख-आदि में वृद्धि होगी।

सिंह लग्न में बृहस्पति पांचवे और आठवें भाव का स्वामी होता है। चूंकि इसकी मूल त्रिकोण राशि धनु पांचवें भाव में पड़ती है, अतः बृहस्पति सिंह लग्न वालों को अपनी दशा-भुक्ति में शुभफल ही देगा। विशेषकर तब जब बृहस्पति बलवान हो। यहां बृहस्पति को बलवान करने के लिए पीला पुखराज धारण करें। बलवान बृहस्पति धन और भाग्य में वृद्धि करेगा। पुत्र के धन और सुख में वृद्धि होगी। पाचन शक्ति ठीक होगी। बड़े साले की आयु और स्वास्थ्य की वृद्धि होगी तथा बड़ी बहन के विवाह की संभावना में वृद्धि होगी, यदि वह पहले से विवाहित है तो उसके पति के धनादि में विशेष रूप से बढ़ोत्तरी होगी।

कन्या लग्न में बृहस्पति सातवें और चौथे भावों का स्वामी होता है। दो केन्द्र भावों का स्वामी होने के कारण दोषपूर्ण होता है, क्योंकि यहां बृहस्पति अपनी नैसर्गिक शुभता खो देता है। अतः यदि बृहस्पति निर्बल होकर स्वास्थ्य की दृष्टि से अशुभ स्थानों-दूसरे, छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो अनेक रोग और राज्य की ओर से विरोध देने वाला होगा। यदि बृहस्पति केन्द्र में बलवान हुआ तो राज्य, धन, धर्म तथा ऐश्वर्य आदि प्रदान करेगा। यदि कन्या लग्न में बृहस्पति को पुखराज धारण करके बलवान किया जाए तो बलवान बृहस्पति सुख-समृद्धि में विशेष

वृद्धि करेगा। व्यापार और मानसिक शांति में वृद्धि करेगा। पिता को दीर्घायु प्रदान करेगा।

तुला लग्न में बृहस्पति तीसरे और छठे भावों का स्वामी होता है। ये दोनों ही भाव अत्यंत अशुभ माने जाते हैं। यहां पर बृहस्पति अशुभ फल ही देगा। परन्तु कुछ ज्योर्तिविदों के मतानुसार, बृहस्पति धनदायक होने के कारण और दो उपचय स्थानों का स्वामी होने से शुभ फल प्रदान करता है। पुखराज धारण कर बलवान किया बृहस्पति स्वास्थ्य और आयु के लिए शुभफलप्रद होगा। छोटे भाइयों की सुख–समृद्धि में वृद्धि करेगा। साली का पति आयु, स्वास्थ्य और धन लाभ पायेगा। राज्य में मान–सम्मान बढ़ेगा, शत्रुओं से मेल–मिलाप होगा।

वृश्चिक लग्न में बृहस्पति दूसरे और पांचवें भाव का स्वामी होता है। दूसरा भाव स्थानांतर का फल देता है। अतः बृहस्पति पंचमेश होकर बहुत शुभफल प्रदान करता है। यदि निर्बल हुआ तो पुत्र हानि, भाग्य हानि, विद्या हानि आदि अशुभ फल प्रदान करता है। यहां पुखराज धारणकर बृहस्पति बलवान करने से धन की विशेष वृद्धि तथा वाणी शक्ति प्राप्ति होगी। पुत्र के धन और मान में वृद्धि होगी।

धनु लग्न के लिए बृहस्पति लग्न और चौथे भाव का स्वामी होता है। यहां इसे केन्द्राधिपति होने का दोष नहीं लगता, क्योंकि बृहस्पति साथ–साथ लग्न का स्वामी भी होता है। चूंकि लग्न का स्वामी होना योगकारक होता है, अतः बृहस्पति बहुत शुभ फल देने वाला होता है। यहां बृहस्पति सुख, धन, जनप्रियता, वाहन आदि का सुख देता है। यदि बृहस्पति निर्बल हो तो व्यक्ति मातृ–भूमि का त्याग करके परदेश में वास करता है और दुःखी रहता है। यहां बृहस्पति को पुखराज धारण करके बलवान करना उचित होगा। बलवान होकर बृहस्पति घर में सुख–सामग्री की विशेष उन्नति और वृद्धि करेगा। धन और मान–सम्मान में बढ़ोत्तरी करेगा। स्वास्थ्य और बुद्धि बल प्रदान करेगा। पुत्र तथा पिता के भाग्य में वृद्धि करेगा। बड़े फूफा की आयु और स्वास्थ्य में बुद्धि करेगा।

मकर लग्न के लिए बृहस्पति तीसरे और बारहवें भाव का स्वामी होता है। द्वादशेश स्थानांतर का फल देता है, अतः बृहस्पति तीसरे भाव का फल देगा यानि अशुभ प्रभाव में निर्धनता आदि देगा। यहां पुखराज धारण करके बृहस्पति को बलवान करना ज्यादा अच्छा रहेगा। बलवान हुआ बृहस्पति छोटे भाईयों को धन, मान, स्वास्थ्य और आयु में वृद्धि करता है। कान के रोगों का शमन होगा। पत्नी की छोटी बहन के पति का आयु और स्वास्थ्य में वृद्धि होगी। आंखों के रोगों का शमन होगा। अनिद्रा का रोग दूर होगा। निर्धनता दूर होगी तथा मित्रों से अधिक लाभ होगा।

कुंभ लग्न में बृहस्पति दूसरे और ग्यारहवें भाव का स्वामी होता है। द्वितीयेश सदैव स्थानांतर का फल प्रदान करता है, अतः बृहस्पति एकादशेश रूप से सदैव अशुभ माना जाता है। लेकिन यह अशुभता शरीर के लिये (रोग देने

वाली) होती है आर्थिक क्षेत्र के लिए नहीं। इसलिए यहां बलवान बृहस्पति बहुत धन प्रदान करेगा।

कुंभ लग्न में पुखराज धारण करके बलवान किया गया बृहस्पति न केवल धन की ही विशेष वृद्धि करता है, बल्कि उन समस्त वस्तुओं की भी वृद्धि करता है। जो बृहस्पति द्वारा प्रभावित ग्रह अथवा भाव में कुंडली में प्रकट होती होंगी।

मीन लग्न में बृहस्पति लग्नेश तथा दसवें भाव का स्वामी होता है। लग्नेश होने के कारण यहां बृहस्पति को केंद्राधिपति होने का दोष नहीं लगता। बल्कि लग्नेश होने के कारण यहां बृहस्पति बहुत शुभफल देता है। बलवान बृहस्पति यश, स्वास्थ्य, सुख और राज्य आदि शुभ वस्तुओं की प्राप्ति करवाता है। यदि बृहस्पति निर्बल हुआ तो राज्य हानि, अधिकारियों से परेशानी, दुःख, निर्धनता आदि अशुभ फल प्राप्त होते हैं। यहां पुखराज धारण करके बृहस्पति को बलवान करने से विशेष रूप से राज्य कृपा प्राप्त होती है। शुभ व धार्मिक कर्मों में रुचि बढ़ती है। पिता के धन में विशेष वृद्धि तथा पुत्र के भाग्य में भी बढ़ोत्तरी होगी। छोटे भाई की आयु और स्वास्थ्य में भी वृद्धि होगी।

बृहस्पति का मानव अंगों पर प्रभाव

बृहस्पति एक शुभ ग्रह है और यदि यह वक्री हो जाए तो शुभफल में अत्यंत वृद्धि करता है, यदि इसका लग्न पर प्रभाव हो और इस पर पापग्रहों के प्रभाव पड़ रहे हों, तो वे इतना अधिक प्रभाव रखेंगे कि बृहस्पति का वक्री होना काम न आएगा। ऐसा बृहस्पति लग्नेश होकर निर्बल समझा जाएगा और इसलिए निर्बल बुद्धि का सूचक होगा। यानि ऐसे जातक में बुद्धि का विकास कम मात्रा में होता है।

बृहस्पति का पेट (उदर) से विशेष संबंध है। पाचन–शक्ति इस ग्रह के अधीन है। यदि बृहस्पति पंचमेश होने के साथ–साथ शनि से दुष्ट भी हो तो जातक को गैस का रोग होता है। जिस जातक की जन्मकुंडली में दूसरे भाव में बृहस्पति हो और शनि तीसरे भाव में हो तो इस योग में पुत्र हानि होती है और यदि ऐसी स्थिति के साथ–साथ पंचमेश, नवम, नवमेश और बृहस्पति भी पीड़ित हो तो फिर संतान–प्राप्ति ही लगभग अंसभव होती है।

बृहस्पति जहां बैठा होता है, उस भाव को लाभ पहुंचाता है, हानि नहीं, चाहे बृहस्पति उस भाव का कारक ही क्यों न हो। लेकिन यदि बृहस्पति वहां पीड़ित हो तो बहुत अधिक मात्रा में हानि पहुंचाता है। बृहस्पति को श्रवण शक्ति का कारक भी माना जाता है। जब बृहस्पति ग्रह कान के भाव तीसरे अथवा ग्यारहवें का स्वामी बन जाता है, तो कान का पूर्ण प्रतिनिधित्व करता है। ऐसी दशा में यदि इस पर पाप प्रभाव हो तथा तीसरे अथवा ग्यारहवें भाव जिसका कि यह स्वामी हो, पीड़ित हो तो जातक बहरा होता है।